मारुति

नवदुर्गा पूजा

शैलपुत्री पूजन

ब्रह्मचारिणी पूजन

सिद्धिदात्री पूजन

चन्द्रघण्टा पूजन

कूष्माण्डा पूजन

स्कन्धमाता पूजन

कात्यायनी पूजन

कालरात्रि पूजन

महागौरी पूजन

सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके ।
शरणये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

पूजन (हिन्दी में) स्तोत्र, चालीसा एवं आरती सहित

202

नवदुर्गा पूजा

[पूजन (हिन्दी में)–स्तोत्रं, चालीसा एवं आरती सहित]

नवदुर्गा– 1. शैलपुत्री, 2. ब्रह्मचारिणी, 3. चन्द्रघण्टा, 4. कूष्माण्डा, 5. स्कन्दमाता, 6. कात्यायनी, 7. कालरात्रि, 8. महागौरी, 9. सिद्धिदात्री।

प्रत्येक का अलग-अलग परिचय, पूजन-विधि, आरती, चालीसा, स्तोत्र तथा मंत्र के अतिरिक्त जीवनोपयोगी मंत्र उपाय सहित।



मारुति प्रकाशन

अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
दिल्ली रोड, मेरठ–250 002 (यू॰पी॰)

- पुस्तक : नवदुर्गा पूजा
- प्रस्तुति : डॉ० अवधेश शर्मा 'वशिष्ठ'
- प्रकाशक : मारुति प्रकाशन,
  अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउण्ड के सामने,
  दिल्ली रोड, मेरठ–2
  ✆ (0121) 2518025, 3255234
- कम्प्यूटरीकृत पृष्ठ सज्जा : मित्तल कम्प्यूटर्स, मेरठ।
- मुद्रक : न्यू ऋषभ ऑफसैट प्रिन्टर्स, मेरठ।

- मूल्य : पचास रुपये मात्र (50.00)

देवी-भक्तों से...

महाशक्ति ही परब्रह्म परमात्मा है। जो विविध लीलाएं करती हैं। वे, जिनको वेद पुराण और उपनिषद् जगदम्बा मानते हैं। जो सर्वेश्वर के सोने पर जागती हैं, जिनकी सहायता से ब्रह्मा, विष्णु और महेश सृष्टि को रचते हैं, पालन करते तथा संहार करते हैं। जिनके इशारे पर काल, मृत्यु गुणत्रय और पञ्चभूत प्रभाव डालते हैं, जिनकी अणुमात्र इच्छा से देव, दानव, मनुष्य या पशु-पक्षी और कीटादि अपने शत्रुओं को जीतते और भरण-पोषण में संलंग्न होते हैं और जिनकी कृपा से ज्ञात-अज्ञात सभी जीव अपना अस्तित्व दिखलाते हैं उस अनन्त शक्ति का असली आभास प्रकट करने के लिये अब तक कई प्रयत्न हुए हैं। वही माँ जगदम्बा महाबली सिंह पर आरूढ़ हैं। वही माँ लाल, श्वेत या श्याम वर्ण की हैं। करालवदना हसन्मुखी या शोकविह्वला हैं।

भारतवर्ष में शक्ति पूजा के कई स्थान ऐसे प्रतिष्ठित हैं जहां देश-देशान्तर के अगणित यात्री आते हैं और पूजा-पाठ प्रयोग या महोत्सवादि मनाते हैं। उनमें कलकत्ता की 'काली', आसाम की 'कामाक्षा', काँगड़ा की 'ज्वालाजी', बीकानेर की 'करणी', मुम्बई की 'मुम्बा देवी', आमेर की 'सिलामयी माता', सीलाक्याँ की 'सीतला', चौमूं की 'आंतेंरि' बैलोन (बुलन्दशहर) की 'बेलाभवानी' या 'सर्वमंगला माता' विशेष विख्यात हैं। उसी अनन्त शक्ति स्वरूपा के नवदुर्गा पूजा के अनुसार नौ देवी स्वरूप मानकर विभिन्न ग्रन्थों के साथ मनन करके मैंने इस पवित्र पुस्तक की समीक्षात्मक विवेचना करके रचना करने का अवसर प्राप्त किया है। इस पुनीत कार्य में मेरे परमहितैषी श्रीमज्जगद्गुरु श्री कृष्ण स्वरूप ब्रह्मचारी जी पंचमुखी महादेव पीठ, मेरठ, सूबेदार सभाजित मिश्र, 26, पंजाब बटालियन और श्री वीरपाल सिंह, ग्राम ढकनगला, नरौरा (बुलन्दशहर) का विशेष सहयोग रहा, जिन्होंने अन्वेषण करने तथा भूमिकादि में सहयोग दिया।

इस पुस्तक में प्रत्येक देवी शैलपुत्री आदि का सामान्य परिचय, पूजन विधि, ध्यान, कवच तथा स्तोत्र—चालीसा का संकलन के साथ-साथ प्रत्येक की आरती और कुछ अनुभूत मंत्र प्रयोग दिए हैं। कौमार्य पूजा तथा वाहन रहस्य पुस्तक की शोभा बढ़ाते हैं। शक्ति दुर्गा का वर्णन करना कठिन है तथापि मेरा यह अल्प प्रयास आपको देवी की आराधना में मील का पत्थर साबित होगा। आपके सुझावों की प्रतीक्षा के साथ। "जय माता की।"

आपका ही
डॉ० अवधेश शर्मा 'वशिष्ठ'
C-94/2, श्रद्धापुरी द्वितीय
मेरठ।

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विवरण	पृ०सं०
	देवी-भक्तों से...	03
1.	प्रथमं शैलपुत्री	05
2.	द्वितीयं ब्रह्मचारिणी	20
3.	तृतीयं चन्द्रघण्टा	33
4.	चतुर्थं कूष्माण्डा	46
5.	पञ्चमं स्कन्दमाता सरस्वती	62
6.	षष्ठं कात्यायनी	84
7.	सप्तमं कालरात्रि	100
8.	अष्टमं महागौरी	117
9.	नवमं सिद्धिदात्री	128

नवदुर्गा पूजा

पूजन (हिन्दी में)–स्तोत्र-चालीसा एवं आरती सहित

शैलपुत्री पूजनम्

प्रथमं शैलपुत्री

महामाया जगज्जननी पर्वतराज हिमालय की पुत्री के रूप में उत्पन्न होने से देवी जगदम्बा 'शैलपुत्री' कहलाई। शैलपुत्री आद्यशक्ति तत्त्वातीत होते हुए भी सर्वतत्त्वमयी और प्रपञ्चरूपा हैं। वह नित्या, परमानन्द स्वरूपिणी तथा चराचर जगत् की बीज स्वरूपा हैं। यह प्रकाशात्मक शिव के स्वरूप ज्ञान की उद्‌बोधक दर्पण स्वरूप हैं। अहं ज्ञान ही शिव का स्वरूप ज्ञान है। आद्यशक्ति का आश्रय लिये बिना इसका आत्मज्ञान नहीं होता। आत्मशक्ति का दर्शन एवं आत्मस्वरूप की उपलब्धि और आस्वादन एक ही वस्तु है। वस्तु का सामीप्य सम्बंध न होने पर जैसे दर्पण प्रतिबिम्ब को ग्रहण नहीं कर सकता अथवा वस्तु का सानिध्य होने पर भी प्रकाश के अभाव से दर्पण में स्थित प्रतिबिम्ब जैसे प्रतिबिम्ब रूप में नहीं भासता, उसी प्रकार शैलपुत्री भी प्रकाशरूप परम शिव के सानिध्य के बिना अपने अन्तः स्थित विश्वप्रपंच को प्रकटित करने में समर्थ नहीं होती। अतः शैलपुत्री के इस व्रत में भगवान सदाशिव का भी ध्यान किया जाता है।

भगवती शैलपुत्री का वाहन वृषभ (बैल) है। उसके दाहिने हाथ में त्रिशूल और बायें हाथ में कमल का पुष्प है। इस स्वरूप का नवरात्र के प्रथम दिन पूजन किया जाता है। दृढ़ संकल्प शक्ति के कारण ही अपनी तपस्या से शैलपुत्री ने प्राणनाथ रूप में सदाशिव को चरण किया था। यही कारण है शैलपुत्री की आराधना से इच्छाशक्ति में दृढ़ता का आविर्भाव होता है। प्राणी अपने लक्ष्य को निश्चित रूप से प्राप्त करता है। यहां यह भी स्मरणीय है कि इच्छाशक्ति की दृढ़ता में अहंकार का मिश्रण कदापि नहीं होना चाहिए।

माँ भगवती शैलपुत्री की पूजा मुख्य रूप से तीन उपचार रूप में की जाती है–

(क) पञ्चोपचार विधि–1. गंध, 2. पुष्प, 3. धूप, 4. दीप, 5. नैवेद्य। (इस उपचार विधि का प्रयोग विशेष परिस्थिति; जैसे–यात्रा समय, प्रवास, निर्धनता में सामान्य रूप में किया जाता है।)

(ख) दसोपचार विधि–1. पाद्य, 2. अर्घ्य, 3. आचमन, 4. स्नान, 5. वस्त्र निवेदन, 6. गन्ध, 7. पुष्प, 8. धूप, 9. दीप, 10. नैवेद्य।

(ग) सोलहोपचार विधि–1. पाद्य, 2. अर्घ्य, 3. आचमन, 4. स्नान, 5. वस्त्र, 6. आभूषण, 7. गन्ध, 8. पुष्प, 9. धूप, 10. दीप, 11. नैवेद्य, 12. आचमन, 13. ताम्बूल, 14. स्तवपाठ, 15. तर्पण, 16. नमस्कार।

पूजा सामग्री रखने के स्थान

बायीं ओर–(1) सुवासित (गुलाब या कमल सुगंध से युक्त) जल से भरा जल-पात्र, (2) घंटा, (3) धूपबत्ती या अगरबत्ती, (4) तेल (तिल का) का दीपक बायीं ओर रखें।

दायीं ओर–(1) घी का दीपक, 2. सुवासित जल से भरा शंख/नारियल की कटोरी। दूसरा अन्य पात्र।

सामने–(1) कुमकुम (केशर) और कपूर के साथ पिसा गाढ़ा चंदन। (2) पुष्प आदि अन्य सामान। (चंदन को ताम्रपात्र में न रखें)।

शैलपुत्री पूजा-विधान

शैलपुत्री का ध्यान व पूजनं पूर्व दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए। ऐसे साधक या साधिका जो नवरात्र के प्रथम व अंतिम दिन ही उपवास करते हैं उन्हें इस दिशा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। अपने बालों पर जल लगाकर या जल से धोकर शिखा बंधन करके ही बैठना चाहिए। तत्पश्चात् निम्न मंत्र से तीन बार आचमन करें।

आचमन–**ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः॥**
ॐ शैलसुतायै नमः॥
ॐ शैलपुत्र्यै नमः॥

आचमन करने के बाद प्रथम घी का दीपक जलायें। पुनः तेल का दीपक जलायें। जिस लकड़ी या तीली से घी का दीपक जलाया है उससे तेल का दीपक न जलाएं।

आवाहन–माँ शैलपुत्री को निमंत्रित करना आवाहन है। हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें, फिर उस पुष्प को देवी के चरणों में अर्पित करें–

। । S S । S S S । S । । । S
शैलपुत्री माँ भवानी आइये स्थिर रहो।
। । । । । S S । S
जबतलक पूजा करूं माँ तबतलक सन्निध रहो।।

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। शैलपुत्रीम् आवाहयामि पुष्पांजलिं समर्पयामि। (पुष्प अर्पित करें।)

आसन—लाल वस्त्र को चौकी पर बिछाकर चावल से चंद्राकार आकृति बनाकर माता के बैठने के लिए आवाहित करें।

नाना मणियों रत्नों से युत
यह दिव्य स्वर्णमय आसन है।
ग्रहण करो हे जगदम्बे
बिन तेरे को दुःख नाशन है।

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। आसनार्थे रक्तवस्त्रं समर्पयामि।

(लाल कपड़े पर जहां चंद्राकार आकृति बनाई है उस पर माता शैलपुत्री को स्थापित करें। निम्न मंत्रों से चार बार पाद्य, अर्घ्य आचमन तथा स्नान हेतु जल दें।)

ॐ शैलपुत्र्यै नमः। पाद्यं समर्पयामि। (दोनों पैरों पर जल चढ़ायें।)

ॐ शैलसुतायै नमः। अर्घ्यं समर्पयामि। (दोनों हाथों को जल से धुलायें।)

ॐ हिमात्मजायै नमः। आचमनं समर्पयामि। (जल को अपनी अंजली में रखकर देवी के मुख से स्पर्श करें, पुनः हाथ धो लें।)

ॐ सत्यै नमः। स्नानं समर्पयामि। (इस मंत्र से देवी को सुगंधित जल से स्नान करायें।)

पंचामृत स्नान—दूध, दही, घी, बूरा और शहद—इन पांच वस्तुओं से बने पंचामृत से देवी को निम्न मंत्र द्वारा पंचामृत स्नान करायें—

दूध दही घृत और मधु
शर्करा मिलाकर लाया हूं।
स्नान करो पंचामृत से
भय दूर रहें हरषाया हूं॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। पञ्चामृतं समर्पयामि।

आलोक—दूध की आधी मात्रा में दही, दही का आधा बूरा, बूरा का आधा घी तथा घी के बराबर शहद डालना ही पंचामृत है।

शुद्धोदक स्नान—पंचामृत स्नान के बाद जल से स्नान कराना शुद्धोतक स्नान है। शुद्धोदक जल में गुलाब की पंखुरी या गुलाब जल डाल देना चाहिए।

वस्त्र—जल द्वारा अभिमंत्रित कर वस्त्रों को अपने दाहिने हाथ में रखकर निम्न

मंत्र पढ़ें—

हे दुःखनाशिनी शैलजा!
कृपा करो पट धारो।
यह कञ्चुक पट युग्म समर्पित
भवसागर से तारो॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। वस्त्रोपवस्त्रं कञ्चुकीयं च समर्पयामि॥
(वस्त्र या पांच कलावा सूत्र अर्पित करें, पुनः आचमन करायें।)

सौभाग्य सूत्र—अपने हाथ में कलावा लेकर उसको हार का रूप दें। उस पर जल से अभिमंत्रण निम्न प्रकार से करें—

स्वर्ण मणी से युक्त
सूत्र सौभाग्य गले में धारो।
भाग्यवान हों भक्त तुम्हारे
सबको शीघ्र उबारो॥

कण्ठे बध्नामि देवेशि सौभाग्यं देहि मे सर्वदा॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि॥ (अभिमंत्रित किये कलावा सूत्र को माँ के गले में धारण करायें। पुरुष माँ के दाहिने हाथ में पहनायें।)

चन्दन—शैलपुत्री को सफेद चंदन अति प्रिय है, अतः सफेद चंदन का प्रयोग करें अथवा लाल चंदन में कपूर डालकर इस मंत्र को बोलें—

यह चन्दन श्रीखण्ड दिव्य
सुरक्षित मन को हरने वाला।
हे शैलसुते तुझको अर्पित
सुन्दर तन पे रहने वाला॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। विलेपनार्थं चन्दनं समर्पयामि॥ (देवी के मस्तक पर चंदन लगाएं। महिलाएं माँ की भुजाओं, हृदयादि पर भी श्वेत चंदन लगा सकती हैं।)

हरिद्रा-चूर्ण—(हल्दी-चूर्ण का प्रयोग सौभाग्यवती स्त्रियां ही करें) निम्न मंत्र से हरिद्रा को जल में डालकर गाढ़ा लेप बनाएं।

सुख सौभाग्य प्रदायक यह
हल्दी तुझे समर्पित है
सुख-शान्ति प्रदान करो अम्बे।
यह मन मेरा अति हर्षित है॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। हरिद्रां समर्पयामि। (हल्दी का लेप करके हाथ जोड़ें।)

कुमकुम–हाथ में रोली लेकर निम्न मंत्र से मस्तक पर लगायें–

सकल कामनादायक है।
यह कुमकुम सदा सहायक है।
यह कुमकुम तुझे समार्पित है
तन मन धन मेरा अर्पित है॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। कुंकुमं समर्पयामि। (इस मंत्र से रोली या बिंदी लगायें।)

सिन्दूर– भक्ति भाव से हे शैलेश्वरि
सिन्दूर तुम्हें चढ़ाता हूं।
स्वीकार करो वर दो माते
यह सुन्दर गीत सुनाता हूं॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि। (जगज्जननी शैलपुत्री की मांग में चांदी या सोने की सलाई में सिंदूर लगायें। इसके अभाव में विल्वपत्र की दण्डी से माँ को सिंदूर लगायें।)

कज्जल (काजल)– कर्पूर ज्योति से बना दिव्य
यह काजल तुम्हें लगाता हूं।
ग्रहण करो श्री नेत्रों में माँ !
जीवन का फल पाता हूं।।

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। कज्जलं समर्पयामि॥ (माँ की आंखों में चांदी या सोने की सलाई से काजल लगायें। अथवा अपने दाहिने हाथ की मध्यमा से दाहिनी तथा अनामिका से बायीं आंख में काजल लगायें।)

दूर्वांकुर– तृणकान्त मणिसुन्दर पूर्वा से
पूजा करूँ तुम्हारी।
चरणों में तेरे अर्पित है
माँ रखो लाज हमारी॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। दूर्वांकुरान् समर्पयामि ॥ शैलपुत्री को कुछ विद्वान दूर्वा चढ़ाना निषेध करते हैं। अतः दूर्वा को माँ के चरणों में चढ़ायें।

विल्वपत्र– त्रिदल जहाँ गुण तीन
नेत्र त्रय आयुष तीन जहां है।
तीन जन्म के पाप कटे
जो दूर, पत्र यहाँ है।

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। विल्वपत्रं समर्पयामि॥ (शैलपुत्री को विल्वपत्र अति प्रिय है। अतः विल्वपत्र का त्रिदल माँ शैलपुत्री को अर्पित करें।) विल्वपत्र की मात्रा 5, 11 या 21 आदि होनी चाहिए। कटा, फटा तथा कीट द्वारा

काटा गया विल्वपत्र न चढ़ायें। विल्वपत्र एक बार चढ़ा देने पर भी खराब नहीं होता अतः उन्हें उतारकर जल से धोकर बार-बार चढ़ाया जा सकता है।

विल्वपत्र विशेष—उपरोक्त मंत्र से शिव तथा शैलपुत्री के समक्ष विभिन्न प्रयोगों द्वारा विल्वपत्र अर्पण करने से विभिन्न कार्यों का लाभ प्राप्त होता है। यहां कुछ ज्वलंत विषयों पर विल्वपत्र चढ़ाने का उपाय दिया जा रहा है। यहां स्मरण रहे विल्वपत्र तोड़ते समय विल्वपत्र के पत्ते की डंडी का वह भाग जो तने से लगा होता है उसे अलग करके ही विल्वपत्र दल चढ़ाना चाहिए। विल्वपत्र चढ़ाने का समय सूर्योदय तथा सूर्यास्त सर्वश्रेष्ठ है।

सर्वार्थसिद्धि प्राप्त करने के लिये मंत्र—सर्वप्रथम पांच, सात अथवा ग्यारह विल्वपत्र निम्न मंत्र से शिवा और शिव को अर्पण करें—

मंत्र— **त्रिदल त्रिगुणाकारं त्रिनेत्र च त्रिधायुतम्।**
त्रिजन्मपाप संहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम्॥
ॐ शं शैलपुत्र्यै नमः। विल्वपत्रं समर्पयामि॥

उसके बाद **ॐ शं शैलपुत्र्यै नमः। विल्वपत्रं समर्पयामि** मंत्र से पंचामृत में भिगोते हुए 1, 008 विल्वपत्र शिवा और शिव को समर्पित करना चाहिए। शेष बचे पञ्चामृत को हाथ में रखकर ही ग्रहण करना चाहिए। पंचामृत चांदी, मिट्टी अथवा चीनी के बर्तन में ही रखना चाहिए। पंचामृत केवल बछड़े वाली गाय का दूध, दही, गोघृत, गुड़ या शक्कर, शहद का बनायें।

ज्वर निवारण के लिए मंत्र—सर्वप्रथम नीम के पेड़ से प्राप्त शहद से बारह विल्वपत्रों पर 'शं' शब्द तीनों पत्तों पर लिखें तथा निम्न मंत्र से शैलपुत्री को अर्पण करें—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शं शैलपुत्र्यै ज्वरं कीलय-कीलय शौर्यवपु प्रदाय-प्रदाय
ॐ शं श्रीं ह्रीं ऐं ॐ। शैलपुत्र्यै नमः। विल्वपत्रं समर्पयामि॥

इसके बाद—**'ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं शं शैलपुत्र्यै नमः'** इस मंत्र से गोदूध से भगवती को 2001 तुलसी दल भिगोकर अर्पित करें। यदि रोग अत्यंत पुराना हो गया हो तो कृष्णा तुलसी का प्रयोग करना चाहिए। उसके बाद शेष बचे दूध में शहद मिलाकर रोगी को पिला दें।

वर-प्राप्ति हेतु मंत्र—जिस कन्या का विवाह न हो रहा हो अथवा विवाह में किसी भी प्रकार की अड़चन आ रही हो—ऐसी कन्या को अनार की डंडी की कलम बनाकर सौभाग्य सिंदूर को गंगाजल में घोलकर अपनी इच्छा के अनुरूप वर के गुण आदि को लिखकर पहले इस मंत्र की ग्यारह (एक सौ आठ वाली) तुलसी माला से जप करें, फिर शैलपुत्री को अर्पण कर दें। जप करते समय लिखा प्रपत्र अपनी जंघा या हृदय पर धारण करें। मंत्र अग्र प्रकार है—

मज्जनु करि सिय सखिहिं समेता।
गई मुदित मन गौरी निकेता॥
पूजा कीन्ह अधिक अनुरागा।
निज अनुरूप सुभग वरू मांगा॥

इस जप के करने से शीघ्र ही कन्या अपने घर चली जाती है। विवाह के उपरान्त इस प्रपत्र को केवल जीवन साथी के साथ गंगा में विसर्जित कर देना चाहिए। इस कार्य में अधिक विलम्ब न करें।

पुष्पमाला– **अति सुगंधित मालती की
माल गले पहनाऊं।
अपने ही द्वारे लाये इन
पुष्पों को तुम्हें चढ़ाऊं॥**

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि॥ इस मंत्र से पुष्प और पुष्पमाला चढ़ाएं। यद्यपि भगवती को अनेक पुष्प चढ़ाये जाते हैं तथापि कुछ पुष्प चढ़ाने से तात्कालिक कष्टों का निवारण होता है। पुष्प चढ़ाते समय सर्वप्रथम राशि के अनुसार दिए गए मंत्र से विषम संख्या (5, 7, 9, 11 आदि) में पुष्प अर्पित करें, उसके बाद शेष बचे तथा अन्य दूसरे पुष्पों को चढ़ाने से धन, ऐश्वर्य तथा सौभाग्य मिलता है।

राशि	मंत्र	विहित श्रेष्ठ पुष्प, पत्र या छाल
मेष	ॐ शं शैलपुत्र्यै नमः	तिन्तिणी, मौलसिरी, बेला, अनार।
वृष	ॐ ह्रीं गिरिजायै नमः	कैथ, कपास, धव, केतकी।
मिथुन	ॐ क्लीं जूँ पं पूर्णायै नमः	गंभारी, कनेर, पत्रकंटक, गुलाब।
कर्क	ॐ अं, हं, सं सौं सावित्र्यै नमः	केवड़ा, कदम्ब, कनेर, बेलपत्थर।
सिंह	ॐ शं शैलपुत्र्यै नमः	शिरीष, गाजर, कपास, कमल।
कन्या	ॐ कलीं जूँ पं पूर्णायै नमः	कुंद, बेलपत्थर, गुलाब, मदार।
तुला	ॐ ह्रीं गिरिजायै नमः	दोपहरिया, भटकैया, चमेली शंखपुष्पी।
वृश्चिक	ॐ ह्रीं घ्रीं श्रीं ॐ नमः	सेमल, केतकी, शल्लकी, माधवी।
धनु	ॐ बृं श्री ब्रीं ॐ नमः	जूही, अशोक, शमी, मदार, चमेली।
मकर	श्री शं ह्रीं ॐ कामरूपण्यै नमः	सर्ज, कमल, तुलसी, आक।
कुम्भ	श्री ऐं ह्री क्लीं दुर्गायै नमः	मदन्ती, विल्वपत्र, मदार, शंखपुष्पी।
मीन	ॐ शिवांग्ये नमः	शिरीष, कमल, तुलसी, चमेली।

आभूषण– **हार कंकण मेखला
केपूर कुण्डल आदि हैं।
हीरों से जड़ा रत्न भूषण
लेकर हरती भव व्याधि है॥**

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए स्त्री जिस-जिस क्रम में स्वयं आभूषण धारण करती है उस-उस क्रम में आभूषण माँ शैलपुत्री को समर्पित करें। यदि न कर सकें तो मंत्र के अंत में **'ॐ जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। आभूषणं मनसा समर्पयामि॥'** इस मंत्र को बोलकर चंदन से देवी के उस-उस अंग का स्पर्श करें।

नाना परिमल द्रव्य– **अबीर गुलाल हरिद्रा से**
है युक्त द्रव्य नाना परिमल।
ग्रहण करो माँ शैलसुता
मारो अन्तर के घल दल बल॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। नाना परिमलद्रव्याणि समर्पयामि॥
(इस मंत्र से अबीर, गुलाल, हल्दी-चूर्ण, भुड़भुड़ चढ़ायें।)

सौभाग्यपेटिका– **हल्दी कुंकुम सिन्दूर भरी**
सौभाग्य पेटिका लो माता
आदिशक्ति हैं जगदम्बे
तुम बिन जग में को फलदाता॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि॥ (इस मंत्र से सौभाग्यवती स्त्री को जो श्रृंगार वस्तु होती हैं वे सभी स्वेच्छा से शैलपुत्री को अर्पित करनी चाहिएं।)

धूपबत्ती–भगवती शैलपुत्री को अपने दाहिने हाथ को बायीं ओर ले जाकर पुनः ऊपर की ओर ले जाते हुए वृत्त क्रम में धूपबत्ती को घुमाना चाहिए घुमाते समय एक बार मुख पर, तीन बार मस्तक पर, तीन बार हृदय पर, चार बार चरणों की ओर घुमाकर पुनः पांच या सात बार सम्पूर्ण प्रतिमा के चारों ओर घुमाएं, उसे माँ के बायीं ओर स्थापित करना चाहिए।

दीपक–एक विल्वपत्र को नीचे की ओर पलटकर रखें। पत्र रखते समय विल्वपत्र की डंडी को अपने अंगूठे तथा अनामिका अंगुली से पकड़कर रखना चाहिए। पहले दीपक को जलायें। फिर कुछ चावल पुष्प विल्वपत्र पर रखें तब जलते दीपक को विल्वपत्र पर स्थापित करें। दीपक जलाने के बाद हाथ धो लेना चाहिए।

धूप–गाय के गोबर से बने उपले को जलाकर माँ भगवती का ध्यान करके घी में लौंग का जोड़ा चढ़ाना चाहिए। लौंग के जोड़े नैष्टिक ब्रह्मचारी को पांच, ब्रह्मचारी को एक तथा गृहस्थी को दो-दो चढ़ाने चाहिएं। लौंग को चढ़ाते समय **ॐ शं शैलपुत्र्यै नमः** का उच्चारण करना चाहिए। पुनः इसी मंत्र से माँ भगवती को ऋतुफल अर्पण करना चाहिए। शैलपुत्री को अकेला फल या केवल केले नहीं चढ़ाने चाहिएं। दो फल या अधिक से भोग देना चाहिए।

नैवेद्य— दूध, दही, घी, शक्कर से
तैयार तुम्हारा भोजन है
आहार स्वीकार करो देवी
ए तरसत मेरे लोचन हैं॥

(इस मंत्र से तुलसीदल सहित नैवेद्य अर्पण करें।)

ताम्बूल— नागबल्ली से भरा
यह महादिव्य पुंगीफल है।
लवंग-इलायची भी इसमें
ताम्बूल समर्पित शुभ पल है॥

श्री जगदम्बायै शैलपुत्र्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से इलायची, लोंग, सुपारी तथा जायफल के साथ पान निवेदन करें।)

ध्यान—हाथ में सफेद या राशि में दिए किसी एक पुष्प को लेकर माँ भगवती शैलसुता का निम्न मंत्र से ध्यान करें—

**वन्देवाच्छितलाभाया चन्द्रर्घकृतशेखराम्।
वृषारूढ़ां शूलपरां शैलपुत्री यशस्विनीम्॥
पूणेन्दू निभां गौरी मूलाधारं स्थितां प्रणम दुर्गा त्रिनेत्रा।
पटाम्बर परिधानां रत्नकिरीटा नानालंकार भूषिता॥
प्रफुल्ल वदनां पल्लवाधरां कातंकपोलां तुब कुचाम।
कमनीयां लावण्यां स्मेरमूखी क्षीणमध्यां नितम्बनीम्॥**

कवच—पीली सरसों लेकर अपने चारों ओर डालते हुए इस मंत्र को बोलें—

**ओमकारः मे शिरः पातु मूलाधार निवासिनी।
ह्रींकारः पातु ललाटे बीजरूपा महोश्वरी॥
श्रीकारः पातु वदने लज्जारूपा महेश्वरी।
हंकारः पातु हृदये तारिणी शक्ति स्वघृता॥
फट्कार पातु स्वांगे सर्वसिद्धि फलप्रदा।**



स्तोत्र—ध्यान और कवच के बाद निम्न स्तोत्र का पाठ करें—

प्रथम दुर्गा त्वंहि भवसागर तारणीम्।
धमन्न ऐश्वर्य दायिनी शैलपुत्री प्रणमाम्यहम्॥
त्रिलोकजननी त्वंहि परमानंद प्रदीयनाम्।
सौभाग्यरोग्यं दायनी शैलपुत्री प्रणमाम्यहम्॥
चराचरेश्वरी त्वंहि महामोह विनाशिन।
मुक्ति, भुक्ति दायनी, शैलपुत्री प्रणमाम्यहम्॥
चराचरेश्वरी त्वंहि महामोह विनाशिन।
भूक्ति, मुक्ति दायिनी शैलपुत्री प्रणमाम्यहम्॥

शैलपुत्री के जपनीय मंत्र—

1. वंदे वांछित लाभाय चन्द्रार्ध शेखरम्।
   वृषारूढ़ां शूलधरां शैलपुत्रीं यशश्विनीम्॥
2. ॐ शं शैलपुत्र्यै नमः।
3. ॐ शैलजादेव्यै नमः।

शैलपुत्री के रूप में प्रथम कन्या का पूजन—शैलपुत्री के रूप में प्रथम नवरात्र को या नवरात्र की अंतिम तिथि को प्रथम कन्या के रूप में 'कुमारी' का पूजन किया जाता है। 'कुमारी' के लिए दो वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। निम्न मंत्र से शैलपुत्री को भोज्य पदार्थ अर्पित करें—

जगद् पूज्ये जगद् वन्द्ये सर्वशक्ति स्वरूपिणि।
पूजां गृहाण कौमारि! जगन्मातर्नमोऽस्तुते॥

प्रथम नवरात्र में सिद्धिदायक मंत्र, यंत्र तथा टोने-टोटके

इस प्रकरण में हम अपने जीवन को सुख, सौविध्य और सर्वेश्वर्य सम्पन्न करने के लिए मंत्र, यंत्र तथा टोने-टोटकों के माध्यम से बनाने के विषय में चर्चा करेंगे।

आरती शैलपुत्री की

ॐ जय शैलसुते मैया जय शैलसुते।
भयहारिणि भवतारिणी पार्वती तू वर दे॥ टेक॥
द्याता स्वरूप धरिकै रचि सृष्टि सारी।
पालौ प्रजा अखिल अच्युत भेषधारी॥ ॐ जय०॥
नाशौ बहोरि सब शंकर अंक आर्यी॥
लीला अपार तव अंब न जाय गायी॥ ॐ जय०॥
भावी अतीत अरू संप्रति काल ज्ञाता।

तू ही सतोरज तमोगुण-पूर्णा-गाता॥ ॐ जय०॥
आद्यांतहीन, अखिलेश्वरि तू ही एका।
है तू ही जाहि जपते तपसो अनेका॥ ॐ जय०॥
सप्रेम पूजि जिनको नर नेमधारी।
पावें कवीन्द्र पद पावन कीर्तिकारि॥ ॐ जय०॥
नावें नृदेव निज पायन पै स्वमाथा।
दंड़प्रणाम तिनको ममजोरि माथा॥ ॐ जय०॥
ब्रह्मा, विष्णु निधिनायक नीरनाथा।
सानन्द जासुगुण गावत जोरि हाथा॥ ॐ जय०॥
सद्कीर्ति तासुयह पावर ज्ञानहीना।
हा! हा!! कहे किमि महामतिमंद हीना॥ ॐ जय०॥
पीयूषपूर्ण दृग तू जननी हमारी।
संताप तप्ततन बालक मैं दुखारी॥ ॐ जय०॥
संबंध सत्य अस मातु हिये बिचारी।
कीजै यथा उचित देवि! हमें निहारी॥ ॐ जय०॥

इन मंत्र, यंत्र तथा टोने-टोटकों में मंत्र का प्रयोग साधक को गुरु द्वारा दीक्षा लेकर पूर्ण करना चाहिए तथा समस्त क्रियाविधि का पूर्ण पालन करते हुए करना चाहिए। माँ भगवती के प्रत्येक अनुष्ठान में शौच शुद्धता अति अनिवार्य है।

मंत्र प्रकरण—

भक्ति-प्राप्ति हेतु मंत्र—माँ भगवती शैलपुत्री की भावभीनी कृपा प्राप्त करने के लिये कुशासन पर बैठकर पूर्वाभिमुख होकर माँ भगवती का ध्यान करें, पश्चात् पञ्चमुखी रुद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का 31,000 जप दशांश हवन, दशांश तर्पण तथा दशांश मार्जन करना चाहिए। एक समय फलाहार रहकर जप संख्या पूर्ण करना चाहिए पश्चात् दो वर्ष की नौ कन्याओं को भोजन तथा दक्षिणा से संतुष्ट करना चाहिए। भोज्य पदार्थ में बेलपत्थर का हलुआ देने से शीघ्र शैलपुत्री प्रसन्न होती हैं। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ त्वं परा प्रकृतिः साक्षाद् ब्रह्मणः परमात्मनः
त्वत्तो जातं जगत्सर्वं त्वं जगज्जननी शिवे॥

स्वकार्य की प्रशंसा के लिए मंत्र—अक्सर लोगों को कहते सुना जाता है कि हम अपने कार्यक्षेत्र में काफी परिश्रम से कार्य करते हैं, कार्य सफल भी हो जाता है परन्तु हमारे अधिकारी हमें प्रशंसा के दो शब्द भी नहीं कहते हैं उसके स्थान पर किसी दूसरे विषय को लेकर झिड़क देते हैं या कह देते हैं—"यह कार्य कर आपने कोई किला नहीं जीत लिया।" इस कार्य से दुःख तो होता ही है, मन में ठेस भी होती है। इससे अधिक मन अशान्त तो तब होता है जब आपके किए

कार्य की प्रशंसा किसी और को मिलती है। इस मंत्र का कम से कम 21,000 जप करना चाहिए।

विष्णोर्माया भगवती यमा सम्मोहितं जगत्।
आदिष्टा प्रभुणांशेन कार्यार्थे सम्भविष्यति॥

स्त्री वशीकरण मंत्र—अज्ञानता या भ्रमवश जिस पुरुष को अपनी पत्नी के प्रति यह भय उत्पन्न हो जाए कि मेरी पत्नी मुझे तलाक दे देगी या मुझसे तलाक मांग लेगी। अथवा पत्नी येन-केन-प्रकारेण हावी रहती हो उसके चले जाने या आत्महत्या करने का भय हो; अर्थात् गृहस्थ डांवाडोल हो रहा हो तो इस मंत्र के करने से घर में शान्ति आती है। अपने घर गयी पत्नी आ जाती है। इस मंत्र को जपते समय कमलगट्टा की माला से 51 या 101 माला का जप करना चाहिए। लाल और पीला पुष्प देवी शैलपुत्री को भेंट करना चाहिए—

इयं गेहे लक्ष्मी रियममृतवर्त्तिर्नयनयो,
रसावस्या: स्पर्शो वपुषि बहलश्चन्दनरस:।
अयं कण्ठे बाहु: शिशिर मसृणो मौर्क्तकसर:,
किमस्या न प्रेयो यदि परमसह्यस्तु विरह:॥

दु:ख तथा दारिद्रय निवारण के लिए—दरिद्रता के नाश के लिए तथा दु:ख के निवारण के लिए निम्न मंत्र का कमलगट्टा या रुद्राक्ष की माला से 21,000 का जप करें, पुन: 210 या 2,100 गुलाब या कमल के पुष्पों को भगवती शैलपुत्री को अर्पण करने से दरिद्रता का नाश तथा सुख की प्राप्ति होती है। मंत्र इस प्रकार है—

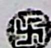
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तो,
स्वस्थै: स्मृता मतिमतीत शुभां ददासि।
दारिद्रय दु:ख भयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्द्रचित्ता॥

इस मंत्र की एक माला प्रतिदिन करने से भी माँ भगवती शैलपुत्री प्रसन्न होती हैं और शनै:-शनै: इच्छित फल देती हैं।

सुलक्षणा पत्नी की उपलब्धि के लिए मंत्र—इस मंत्र का प्रतिदिन 5 या उससे अधिक माला जप करने से शीघ्र ही उत्तम कुल की कुलीन कन्या की प्राप्ति होती है। इस मंत्र को सावधानीपूर्वक शुद्ध उच्चारण के साथ ही करना चाहिए।

पत्नीं मनोरमां देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग संसार—सागरस्य कुलोद्भवाम्॥

अतुल धन-धान्य प्रयोग हेतु मंत्र—धन-धान्य से परिपूर्णता प्रदान करने वाली अन्नपूर्णा माता शैलपुत्री की साधना की जाती है। यह वह मंत्र है जो द्रोपदी ने अपनी सिद्धि से अक्षय पात्र प्राप्त किया था जिसके फलस्वरूप उस छोटे पात्र



का अन्न तब तक खत्म नहीं होता था जब तक स्वयं द्रोपदी भोजन नहीं कर लेती थी। माता शैलपुत्री ने साध्वी द्रोपदी को प्रसन्न होकर दिया है।

कुशासन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। षोडशोपचार विधि से पूजन कर माता अन्नपूर्णा के निम्न मंत्र को प्रत्येक अन्नपूर्णा स्तोत्र मंत्र के आगे और पीछे सम्पुट लगाएं। मंत्र और अन्नपूर्णा स्तोत्र दिया जा रहा है–

अन्नपूर्णा मंत्र–ॐ ह्रीं नमो भगवती अन्नपूर्णे स्वाहा।

अन्नपूर्णा स्तोत्र

नित्यानन्दकरी वराभयकरी सौन्दर्यरत्नाकरी,
निर्धूताखिलघोरपावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी।
प्रालेयाचलवंशपावनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥1॥
नाना रत्नविचित्रभूषणकरी हेमाम्बराडम्बरी,
मुक्ताहारविलम्ब मानविल सद् वक्षोजकुम्भान्तरी।
काश्मीरागरुवासितांगरुचिरे कांशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥2॥
योगानन्दकरी रिपुक्षयकरी, धमार्थनिष्ठाकरी,
चन्द्रार्कानलभासमानलहरी त्रैलोक्य रक्षाकरी।
सर्वैश्वर्यसमस्तवाञ्छितकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥3॥
कैलासाचलकन्दरालयकरी गौरी उमा शंकरी,
कौमारी निगमार्थगोचरकरी ओंकारबीजाक्षरी।
मोक्षद्वारकपाटपाटनकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपालम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥4॥
दृश्यादृश्यविभूतिवाहनकरी ब्रह्माण्ड भाण्डोदरी,
लीलानाटकसूत्रभेदनकरी विज्ञान दीपांकुरी।
श्री विश्वेशमनः प्रसादनकारी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥5॥
उर्वीसर्वजनेश्वरी भवगती मातान्नपूर्णेश्वरी,
वेणीनीलसमानकुन्तलहरी नित्यान्नदानेश्वरी।
सर्वानन्दकरी सदा शुभकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥6॥
आदिक्षान्तसमस्तवर्णनकरी शम्भोस्त्रिभावाकरी,
काश्मीरत्रिजतेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुरा शर्वरी।
कामाकांक्षकरी जनोदयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बन करी मातान्नपूर्णेश्वरी॥7॥

देवी सर्वविचित्ररत्नरचिता दाक्षायणी सुन्दरी,
वामं स्वादु पयोधरप्रियकरी सौभाग्यमाहेश्वरी।
भक्ताभीष्टकरी सदाशुभकरी काशीपुराधीश्वरी॥
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥8॥
चन्द्रार्कानलकोटिकोटिसदृशा चन्द्रांशु बिम्बाधरी,
चन्द्रार्ग्निसमानकुन्तलधरी चन्द्रार्कवर्णेश्वरी।
मालापुस्तकपाशसांकुशधरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥9॥
क्षत्रत्राणकरी महाऽभवकरी माता कृपासागरी,
साक्षान्मोक्षकरी सदा शिवकरी विश्वेश्वरी श्रीधरी।
दक्षाक्रन्दकरी निरामयकरी काशीपुराधीश्वरी,
भिक्षां देहि कृपावलम्बनकरी मातान्नपूर्णेश्वरी॥10॥
अन्नपूर्णे सदापूर्णे शंकरप्राणवल्लभे।
ज्ञान वैराग्यसिद्ध्यर्थं भिक्षां देहि च पार्वति॥11॥
माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः।
वान्धवाः शिव भक्ताश्च सवदेशो भुवनत्रयम्॥12॥

उत्तम वर प्राप्त करने के लिए मंत्र—देवी यंत्र स्थापित करके स्फटिक की माला से निम्न मंत्र की प्रतिदिन सात माला जप करने से शीघ्र ही कन्या को उत्तम वर की प्राप्ति होती है—

हे गौरि शंकरार्धांगि यथा त्वं शंकरप्रिया।
तथा माँ कुरु कल्याणि कान्ताकान्ता सुलभाम्॥

ऋणहर्त्ता गणेश मंत्र—धन-धान्यप्रदाता गणेश जी का कोई भक्त यदि ऋणग्रस्त हो तो यह मंत्र नियमित जप करे और चैत्र शुक्ल प्रतिपदा रविवार में आरम्भ करे तो गणेश तथा माता शैलपुत्री की कृपा से धन-धान्य से पूर्ण हो जाता है। वह इतना समर्थ हो जाता है कि अपने ऊपर लदा ऋण-भार उतार सके और सुखपूर्वक जीवन व्यतीत कर सके।

विनियोग

ॐ अस्य श्री ऋणहरणकर्तृ गणपति स्तोत्र मंत्रस्य सदाशिव ऋषिः, अनुष्टुप् छंद, श्रीऋणहर्तुगणपतिदेवता ग्लौं बीजं गः शक्तिः गौं कीलकं, मम सकल ऋणनाशने जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति

ॐ सिंदूरवर्णं द्विभुजं गणेशं, लम्बोदरं पद्मदले निविष्टम्।
ब्रह्मादिदेवैः परिसेव्यमानं, सिद्धैर्युतं प्रणमामि देवम्॥
सृष्ट्यादौ ब्रह्मणा सम्यक् पूजितः फल सिद्धये।
सदैव पार्वती पुत्रः, ऋणनाशं करोतु मे॥
त्रिपुरस्य वधात् पूर्वं शंभुना सम्यगर्चितः।

सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥
हिरण्यकश्यप वादीनां वधार्थे विष्णुनार्चितः।
सदैव पार्वती पुत्र ऋण नाशं करोतु मे॥
महिषस्य वधे देव्या गणनाथ प्रपूजितः।
सदैव पार्वती पुत्रः ऋणनाशं करोतु मे॥

जप-मंत्र—

ॐ गणेश ऋणं छिन्धि वरेण्यं हुं नमः फट्।

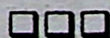
लम्बाई बढ़ाने हेतु—चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से प्रतिदिन पंचमुखी रुद्राक्ष की माला से निम्न मंत्र का 11 माला जप करें, जपोपरान्त माला को गंगाजल में डाल दें। शाम को माँ भगवती की माला से रक्तपुष्प (विशेषतः गुलाब) का एक पुष्प लेकर उसे भी गंगाजल में डाल दें। माँ भगवती की आरती कर पुष्प को पवित्र स्थान पर रखें और रुद्राक्ष की माला निकालकर जल को तीन घूंट में क्रमशः **ॐ ऐं, ॐ ह्रीं, ॐ क्लीं** का उच्चारण कर पीलें। बाद में एक माला का जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

गवां सर्वांगजं क्षीरं स्रवेत् स्तनमुखाद्यथा।
तथा सर्वत्रगो देवः प्रतिमादिषु राजते॥

यह कार्य दशमी तक प्रतिदिन करें। देवी प्रतिमा के साथ गौ-बछड़े को दूध पिलाती हुई की प्रतिमा या मूर्ति रखना अनिवार्य है।

शैलपुत्री के वाहन का रहस्य

इन नव शक्तियों में प्रथम ब्राह्मी शक्ति है। ब्राह्मी सृष्टि-शक्ति को कहते हैं। अखण्ड चैतन्य समुद्र के जिस अंश में सृष्टि क्रिया प्रकाशित हो उस चैतन्यांश का नाम ब्रह्मा कहते हैं और चेतनाधिष्ठान से जो क्रियाशक्ति प्रकाशित हो वही 'ब्राह्मी' है। इसका वाहन हंस है। हंस जीव को कहते हैं। व्यष्टि मन समष्टि मन का अंश मात्र होने के कारण समष्टि मन विराट मन है। इसी में सृष्टिक्रिया प्रकाशित होती है। मन का धर्म कल्पना है एवं कल्पना शक्तिरूपा है। इसी को क्रियाशक्ति कहते हैं, जो ब्राह्मी नामक है। यह हंसवाहिनी है। प्रति जीव में जो विभिन्न संकल्प देखा जाता है उसके मध्य होकर ही यह समष्टि मन का प्रकाश समझा जाता है, उसके मध्य होकर ही यह समष्टि मन का प्रकाश समझा जाता है। अतः जीव ही सृष्टि का परिचालक है। यदि जीव नहीं हो तो सृष्टि शक्ति के ज्ञान का उपाय हो ही नहीं सकता। इस कारण सृष्टि शक्तिरूपिणी ब्राह्मी का वाहन जीवरूपी हंस का होना ही उचित है। जीव श्वास-प्रश्वास के द्वारा दिन-रात में इक्कीस हजार छः सौ हंस मन्त्र का जप कर लेता है अतः उसे तान्त्रिक शब्दों में 'अजपा' कहते हैं। यही कारण है कि जीव हंस कहा जाता है।



द्वितीयं ब्रह्मचारिणी

दधाना करपद्माभ्याम मालाकमण्डलम्।
देवी प्रसीदतु मयि ब्रह्माचारिण्यनुत्तमा॥

भगवती दुर्गा की नौ शक्तियों का दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी का है। ब्रह्म का अर्थ है, तपस्या। तप का आचरण करने वाली भगवती जिस कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा गया, वेदस्तत्वं तपो ब्रह्म, वेद, तत्व और ताप ब्रह्म अर्थ है ब्रह्मचारिणी देवी का स्वरूप पूर्ण ज्योतिर्मय एवं अत्यन्त भव्य है। इनके दाहिने हाथ में जप की माला एवं बायें हाथ में कमण्डल रहता है।

जन्माद्यस्य यतः। *(ब्रह्मसूत्र 1-1-2)*



जन्म आद्यस्य यत इति पदच्छेदः। आद्यस्य (प्रथम जातस्य) ब्रह्मण इत्यर्थः। यतः (यस्याः) जन्म (यद्ब्रह्म–विधेयप्रधान्यात् तदिति नपुंसक निर्देशः)।

अर्थात् जिनसे आद्य अर्थात् प्रथमजात ब्रह्माजी का जन्म हुआ, वही ब्रह्म है। 'आद्य' शव्द का अर्थ प्रथमजात है। श्रुति में कहा है–

ब्रह्मा देवानां प्रथमः संबभूवविश्वस्य कर्त्ता भुवनस्य गोप्ता।
(मुण्डकोपनिषद् 1-1-1)

हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे..................। *(ऋग्वेद 10-121-1),*
(यजुर्वेद मध्यान्दिनी 13-4)

इत्यादि श्रुतियों में कहा है कि ब्रह्मा प्रथमजात हैं। प्रथमजात ब्रह्मा की उत्पत्ति आद्या-शक्ति से हुई है, इसका प्रमाण ऋग्वेद के देवी सूक्त में इस प्रकार है—

यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणम्...........। *(10-125-5)*

अर्थात् 'रुद्र तथा ब्रह्मा की सृष्टि मैं करती हूं।'

मार्कण्येपुराणान्तर्गत दुर्गा सप्तशती में ब्रह्माजी द्वारा की हुई आद्या शक्ति की स्तुति में लिखा है—

विष्णुः शरीरग्रहणमहमीशान एव च
कारितास्ते....................................॥

'हे देवि! विष्णु जी का मेरा (ब्रह्मा जी का) तथा शिवजी का शरीर ग्रहण आपके द्वारा ही हुआ है।

उपरोक्त विवरण से ज्ञात होता है कि श्री गायत्री ब्रह्मस्वरूप हैं। वे ही ब्रह्मा का आचरण करती हैं अतः ब्रह्मचारिणी हैं।

माँ भगवती ब्रह्मचारिणी की पूजा मुख्य रूप से षोडशोपचार से की जाती है। माँ जगज्जननी जगदम्बा ब्रह्मचारिणी के पूजन में जिन सामग्रियों का प्रयोग होता है उन्हें ही उपचार कहते हैं। ये सभी उपचार इस प्रकार हैं—1. आसन (मूर्ति को बिठाना), 2. स्वागत, 3. पाद्य (चरण धोने के लिए जल), 4. अर्घ्य (हाथ धोने के लिए जल), 5. और 6. आचमन (पीने तथा मुंह धोने के लिए जल दो बार दिया जाता है), 7. मधुपर्क (दही, शहद, घी और दूध), 8. स्नान (स्नान के लिए जल), 9. वसन (वस्त्र), 10. आमरण (गहने), 11. गन्ध (सुगन्धित द्रव्य), 12. पुष्प, 13. धूप, 14. दीप (प्रकाश), 15. नैवेद्य, 16. वन्दन अर्थात् नमस्कार की क्रिया।

पूजा सामग्री रखने का स्थान

बायीं ओर—(क) सुवासित (गुलाब या कमल गंध से युक्त) जल से भरा पात्र, (ख) घण्टा, (ग) धूपबत्ती/अगरबत्ती, 4. तेन (तिलक) का दीपक (बायीं ओर रखें।

दायीं ओर—(क) घी का दीपक (ख) सुवासित जल से भरा शंख/नारियल की कटोरी/दूसरा अन्य पात्र, (ग) रुद्राक्षा या रुद्राक्ष की माला।

सामने—(क) कुमकुम (केशर) और कपूर के साथ पिसा गाढ़ा चंदन, पुष्प आदि सामान। चंदन को ताम्रपात्र में न रखें।

ब्रह्मचारिणी पूजा विधान

दूसरे नवरात्र में माँ ब्रह्मचारिणी की पूजा का विधान है। अतः इनका पूजन भी पूर्व दिशा की ओर मुख करके ही किया जाता है। (यहां मैं स्पष्ट कर दूं कि आगे किस दिशा में मुख करके बैठाना चाहिए? यह केवल उन लोगों के लिए ही

है जो केवल उस दिन ही पूजा कर रहे हैं या उस दिन से ही अपनी पूजा आरम्भ कर रहे हैं। जो प्रथम दिन से आरम्भ कर रहे हैं वे पूर्वाभिमुख या जिस दिशा में देवी का मंदिर है उस दिशा की ओर मुख कर पूजन करें।) अपने बालों पर जल लगाकर या जल से धोकर शिखा बंधन करके ही बैठना चाहिए। (कुछ स्त्रियां भूल से सिर धोने के बाद बाल सुखाने के उद्देश्य से बालों को पूजा करते समय खोले रखती हैं। यह कार्य पूर्णतया निन्दनीय है।) तत्पश्चात् निम्न मंत्र से तीन बार आचमन करें–

आचमन– **ॐ गणेशाम्बायै नमः॥**
ॐ ब्रह्मणे नमः॥
ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः॥

आचमन के पश्चात् पहले घी का दीपक जलायें, उसके बाद तेल का दीपक जलायें। जिस लकड़ी या तीली से घी का दीपक जलाया गया है उससे तेल का दीपक न जलाकर दूसरी तीली का प्रयोग न करें।

आवाहन–जननी ब्रह्मचारिणी को आमंत्रण करना आवाहन है। हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें, फिर उस पुष्प को देवी ब्रह्मचारिणी के चरणों में अर्पित करें।

स्वयं अजन्मा रहकर माँ
जग को उत्पन्न प्रसिद्ध हुई॥
हृदय देश में आवाहन जो
करता माँ झण सिद्ध हुई॥

आसन–लाल वस्त्र की चौकी पर बिछाकर चावल से त्रिकोण आकृति बनाकर माता ब्रह्मचारिणी को बैठने के लिए निवेदन करें। अथवा कुशा लेकर या कुशासन लेकर उस पर माँ भगवती ब्रह्मचारिणी को बैठने के लिए निवेदन करें–

स्वर्ण सिंहासन कुश कम्बल से
ढका हुआ यह तेरा॥
आकर विराजिए देवि दयाकर
सब धन अर्पण मेरा॥

ॐ महादेव्यै ब्रह्मचारिण्यै नमः। आसनं समर्पयामि॥

(लाल कपड़े पर जहां त्रिकोणाकृति बनाई है उस पर माता ब्रह्मचारिणी की प्रतिमा स्थापित करें। अथवा कुशासन पर विराजमान करें।) निम्न मंत्रों से पाद्य, अर्घ्य, आचमन तथा स्नान हेतु जल प्रदान करें–

ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। पाद्यं समर्पयामि। (दोनों पैरों पर जल अर्पण करें।)

ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। अर्घ्यं समर्पयामि। (दोनों हाथों को जल अर्पण करें।)

ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। आचमनं समर्पयामि। (जल मुख से स्पर्श करायें तथा अपने हाथ धो लें)

ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। स्नानं समर्पयामि। (इस मंत्र से देवी ब्रह्मचारिणी को सुगंधित जल से स्नान करायें।)

पञ्चामृत स्नान—दूध, दही, घी, बूरा और शहद—इन पांचों अमृत वस्तुओं से बने पंचामृत से निम्न मंत्र द्वारा स्नान करायें—

(क) दुग्ध स्नान—

पृथ्वी, औषधि अन्तरिक्ष
सब दिशा दूध मय अर्पित।
इसकी कमी न हो जीवन में
जो माँ तुझे समर्पित॥

दूध से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

(ख) दधि स्नान—

चन्द्रमा प्रभा सम शुद्ध स्वच्छ
ओ अम्लीय मधुर मनोहर है।
स्नान हेतु माँ तुझे समर्पित
करता दिव्य धरोहर है॥

दही से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

(ग) गोघृत स्नान—

जिससे होता है हवन
हव्य भी जिसमें देते जन हैं।
जिससे होते तृप्त द्रेव द्विज
घृत अर्पण माँ मन है॥

घी से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

(घ) मधु स्नान—

मधुमक्खियां पुष्प रस ले
संचय करतीं रसमधुरम्।
स्वादसयुक्त अति मधुर
मधू मा अर्पित है यह प्रचुरम्॥

शहद से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

(ङ) शर्करा स्नान–

शशिप्रभा सदृश यह शर्करा
मीठे होते सब अन्न।
स्नान हेतु अर्पित करूँ
ग्रहण करो माँ छन्न॥

बूरा से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

गंधोदक स्नान–चंदन तथा इत्र को जल में मिलाकर गंधोदक बनायें तथा निम्न मंत्र से स्नान करायें–

द्रव द्रव्य से उत्पन्न यह
कस्तूरी गन्ध भरा है।
गन्धोदक तुझको देकर
माँ तन मन हरा-भरा है॥

ॐ जगदम्बायै ब्रह्मचारिण्यै नमः। गंधोदकं समर्पयामि॥

शुद्धोदक स्नान–गन्धोदक स्नान के बाद भगवती ब्रह्मचारिणी को निम्न मंत्र द्वारा शुद्ध जल से स्नान करायें–

चन्दन अगर मिला जिसमें
मलयाचल का है दिवय वास।
हे ब्रह्मचारिणी स्नान हेतु
तुम ग्रहण करो सब दुःख नास॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै ब्रह्मचारिण्यै नमः। शुद्धोदकं समर्पयामि॥

वस्त्र-उपवस्त्र–निम्न मंत्र से जल द्वारा अभिमंत्रित कर वस्त्रों को अपने दाहिने में रखकर पुनः मंत्र पढ़ें–

शीत उष्ण से सदा बचाये
लोक-लाज की रक्षा।
हे ब्रह्मचारिणी दिव्य वस्त्र
अर्पित है दो शुभ शिक्षा॥

ॐ ब्रह्मचारिण्यै नमः। वस्त्रमुपवस्त्रं च समर्पयामि॥ वस्त्र या कलावासूत्र अर्पित करें। पुनः आचमन करायें।

सौभाग्य सूत्र–अपने हाथ में कलावा लेकर उसको हार का रूप दें। उसे जल से अभिमंत्रित निम्न मंत्र से करें–

स्वर्ण मणी से युक्त
सूत्र सौभाग्य गले में धारो।
भाग्यवान हों भक्त तुम्हारे
सबको शीघ्र उबारो॥

श्री जगदम्बायै ब्रह्मचारिण्यै नमः। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि॥ अभिमंत्रित किये गये कलावासूत्र पर हल्दीचूर्ण का स्पर्श कर माँ ब्रह्मचारिणी को धारण करायें। (पुरुष माँ के दाहिने हाथ में पहनायें।) माँ भगवती को कलावे में विभिन्नमुखी रुद्राक्ष पहनाने की भी अपनी पद्धति है। जो विभिन्न कामनाओं में प्रयोग किए जाते हैं।

पुष्पमाला– **अति सुगंधित मालती की**
माल गले पहनाऊं।
अपने ही द्वारे लाये इन
पुष्पों को तुम्हें चढ़ाऊँ॥

इस मंत्र से पुष्प और पुष्पमाला चढ़ाएं। यद्यपि भगवती ब्रह्मचारिणी को अनेक पुष्प चढ़ाए जाते हैं तथापि कमल और गुलाब का पुष्प चढ़ाने से तात्कालिक कष्टों का निवारण होता है। विभिन्न पीड़ित ग्रहों के अनुसार विभिन्न पुष्प माँ भगवती को चढ़ाए जाते हैं। अतः ग्रह और पुष्प के सहित जपनीय मंत्र दिए गए हैं, जिसके फलस्वरूप ग्रहजन्य दोष दूर होंगे।

ग्रह का नाम	पुष्प का नाम	जपनीय मंत्र
सूर्य	आक का पुष्प या श्वेत कमल या केसरिया गुलाब	ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः। अथवा ॐ दुंदुर्गायै नमः अथवा ॐ ब्रह्मचारिणी सूर्याभ्यां नमः।
चन्द्र	श्वेत कमल, सफेद गुलाब	ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः। अथवा ॐ शैल्यै नमः। अथवा ॐ आद्यदेव्यै नमः अथवा ब्रह्मचारिणी चन्द्रेश्वराभ्यां नमः। अथवा चन्द्रशेखराय नमः।
मंगल	लाल गुलाब, गुड़हल, लाल कमल	ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः अथवा ॐ दुर्गायै नमः अथवा शक्तिभौमाभ्यां नमः। अथवा ॐ नमो भगवते आञ्जनेयाय महाबलाय स्वाहा।
बुध	कमलदल सहित लाल कमल या पत्ती सहित लाल गुलाब अथवा पत्ते सहित बेला पुष्प	ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः। अथवा ॐ शक्तिबुधाभ्यां नमः। अथवा ॐ ब्रं ब्रह्मचारिण्यै देव्यै नमः।
बृहस्पति	पीला गुलाब, पीला कनेर, पीला कमल	ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं गुरवे नमः। ॐ दुं दुर्गपारायै नमः।

ग्रह का नाम	पुष्प का नाम	जपनीय मंत्र
शुक्र	सफेद गुलाब, सफेद कमल, कुमोदिनी, बेला, चमेली	ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः। ॐ दां दीं दौं दारिद्रयनाशिन्यै नमः।
शनि	नीलकमल चित्रविचित्र पुष्प	ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनिश्चराय नमः।
राहु	नील कमल भटकैया	ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
केतु	नीलकमल, कुशा	ॐ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः।

तुलसीदल और मञ्जरी—भगवती ब्रह्मचारिणी का एक रूप तुलसी भी माना गया है। अतः तुलसी की मञ्जरी तुलसीदल सहित भगवती को अर्पण करें।

स्वर्ण रूप सम यह तुलसी।
रत्नों सम जिसकी मंजरियाँ॥
भव सागर से यह पार करे
हरिप्रिया मनोरम वल्लरियाँ॥

ॐ भगवती ब्रह्मचारिण्यै नमः तुलसीदल मञ्जरी सहितं समर्पयामि।

आभूषण— **हार कंकण मंजला**
कपूर कुण्डल आदि हैं।
हीरों से जड़ा रत्न भूषण
लेकर हरती भव व्याधि हैं॥

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए स्त्री जिस-जिस क्रम में स्वयं आभूषण धारण करती है उस-उस क्रम में आभूषण माँ भगवती ब्रह्मचारिणी को अर्पित करें। यदि न कर सकें तो मंत्र के अंत में **ॐ जगदम्बिकायै ब्रह्मचारिण्यै नमः आभूषणं मनसा समर्पयामि।** इस मंत्र को बोलकर सफेद चंदन से देवी के उस-उस अंग का स्पर्श करें।

धूपबत्ती—भगवती ब्रह्मचारिणी को अपने दाहिने हाथ को बायीं ओर ले जाकर पुनः ऊपर की ओर ले जाते हुए व्रत क्रम में धूपबत्ती को घुमाना चाहिए। घुमाते समय एक बार मुख पर, तीन बार मस्तक पर, तीन बार हृदय पर, चार बार चरणों की ओर घुमाकर पुनः पांच या सात बार सम्पूर्ण प्रतिमा के चारों ओर घुमाएं। उसे माँ के बायीं ओर स्थापित करना चाहिए।

धूप—गाय के गोबर या गौसा को जलाकर माँ भगवती का ध्यान करते हुए घी में लोंग का जोड़ा चढ़ाएं। लोंग का जोड़ा नैष्ठिक ब्रह्मचारी पांच जोड़ा, ब्रह्मचारी एक जोड़ा तथा गृहस्थी को दो-दो जोड़े चढ़ाने चाहिएं। लोंग चढ़ाते समय **ॐ ब्रं ब्रह्मचारिण्यै नमः** या **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाय विच्चे** का उच्चारण करना चाहिए।

नैवेद्य— **दूध, दही, घी, शक्कर से**
तैयार तुम्हारा भोजन है
आहार स्वीकार करो देवी
ए तरसत मेटे लोचन हैं॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।

इस मंत्र से पहले नैवेद्य तुलसी मंजरी सहित तुलसीदल अर्पित करें। फिर निम्न मंत्रों से भूमि पर जल गिरायें या नैवेद्य के कोर तोड़कर अग्नि को अर्पण करें–

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा।

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ अमृतापिधानमसि स्वाहा।

फिर इसी प्रकार नैवेद्य देने के बाद भगवती का ध्यान करें, पुनः हाथ और मुख प्रक्षालन के लिए जल भगवती को अर्पण करें।

ऋतुफल– यह मधुर और अति दिव्य
अमृत फल तुमको अर्पित है माता।
जो तुझे चढ़ाये सुध पाये
भय से भी मुक्त वह हो जाता॥

ॐ भगवती ब्रह्मचारिण्यै नमः। ऋतुफलं समर्पयामि मध्ये आचमनीयं उत्तरापोशनं च जलं समर्पयामि॥ ऋतुफल अर्पण करें, इसके बाद आचमन तथा उत्तरापोऽशन के लिए जल भगवती को प्रदान करें।

ताम्बूल– नागबल्ली से भरा
यह महादिव्य पुंगीफल है।
लवंग-इलायची भी इसमें
ताम्बूल समर्पित शुभ फल है॥

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै ब्रह्मचारिण्यै नमः मुखवासार्थम् एलालवंगपूगीफलसहितं ताम्बूलं समर्पयामि। (इलायची, लौंग-सुपारी के साथ ताम्बूल भगवती ब्रह्मचारिणी को अर्पित करें।)

ध्यान– वन्दे वाच्छित लाभाय चन्द्रार्धकृत शेखराम्।
जपमाला कमण्डलुधरां ब्रह्मचारिणी शुभाम॥
गौरवर्णा स्वाधिष्ठानस्थितां द्वितीय दुर्गा त्रिनेत्राम्।
धवल परिधानां ब्रह्मरूपां पुष्पालंकार भूषिताम्॥
पद्मवंदना पल्लवाधरां कातंकपोलां पीन पयोधराम्।
कमनीयां लावण्यां स्मेरमुखी निम्ननाभि नितम्बनीम्॥

कवच– त्रिपुरा मे हृदये पातु ललाटे पातु शंकरभामिनी।
अर्पणा सदापातु नेत्रो अर्धरो च कपोलो॥
पंचदशी कण्ठे पातु मध्यदेशे पातु माहेश्वरी॥
षोडशी सदापातु नाभो गृहो च पादयो।
अंग प्रत्यंग सतत पातु ब्रह्मचारिणी॥

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए पीली सरसों से अपने चारों ओर डाल लें अथवा पञ्चमुखी रुद्राक्ष और गंगाजल में सफेद चंदन की रेखा अपने चारों ओर खींचें।

स्तोत्र– तपश्चारिणी त्वंहि तापत्रय निवारणीम्।
ब्रह्मरूपधरां ब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्॥
नवचक्र भेंदनी त्वंहि नवऐश्वर्य प्रदायनीम्।

धनदा-सुखदा ब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्॥
शंकरप्रिया त्वंहि भुक्ति-मुक्ति दायिनी।
शान्तिदा मानदा ब्रह्मचारिणी प्रणमाम्यहम्।

ब्रह्मचारिणी के रूप में द्वितीय कन्या का पूजन—ब्रह्मचारिणी के रूप में द्वितीय नवरात्र को या नवरात्र की अंतिम तिथि को 'कल्याणी' का पूजन किया जाता है। 'कल्याणी' के लिए चार वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। निम्न मंत्र से ब्रह्मचारिणी को भोज्य पदार्थ अर्पित करें—

कालात्मिकां कलातीता कारुण्यहृदयां शिवाम्।
कल्याणजननीं देवीं कल्याणीं पूजयाम्हम्॥

आरती ब्रह्मचारिणी माता की

जयति-जयति जै माँ जगदम्बे-2
जगमग ज्योति जला दे माँ, जगमग ज्योति जला दे॥ जयति.....।
खल दल भंजन असुर निखंदन जय अम्बे महारानी।
तीनों लोक में तेरी महिमा, है अद्भूत गुणखानी॥ जयति.....।
तू ही उमा है तू ही भवानी, तू ही वीणाधारी।
महिषासुर और शुम्भ-निशुम्भ को मैया तू संहारी॥ जयति.....।
विंध्याचल की विन्ध्यवासिनी मैहर की शारद देवी।
जम्बू में वैष्णो माता बन मैया तू ही बिराजी॥ जयति.....।
तेरी शक्ति से शिवजी चलते विष्णु जी मायापति कहलाते
देव दनुज तेरे नाम की मैया हर दम जय जय करते॥ जयति....।
तू ही मोहिनी रूप धारके भस्मासुर को भस्म करी।
दुष्ट दलन करने के खातिर माँ धरती पर हैं पांव धरी॥ जयति...।

मंत्र प्रकरण—भगवती ब्रह्मचारिणी की कृपा से तीनों आद्य देवों की उत्पत्ति हुई है। प्रथम पूज्य गणपति की इन पर असीम कृपा होती है। अतः कुछ देवीभक्त इस दिन से भी व्रत आरम्भ करते देखे जाते हैं। अतः गणेश जी के निम्न मंत्रों पर ब्रह्मचारिणी देवी की कृपा विशेष रूप से रहती है। गणेश के निम्न मंत्रों को ऐसे साधकों जो शैलपुत्री का व्रत-पूजन करते हैं वे उस दिन से भी आरम्भ कर सकते हैं।

त्रैलोक्य मोहन कर (वशीकरण) मंत्र—वशीकरण के लिए इस मंत्र का नियमित जप करना चाहिए। यह नवरात्र की प्रतिपदा या द्वितीया तिथि से आरम्भ किया जाता है। अनुष्ठान की पूर्ति हेतु पांच लाख की संख्या में जप करना आवश्यक है। सामान्यतः दैनिक पूजा में इसका जप करने से लाभ होता है। इस मंत्र के साथ देवी की आराधना भी की जाती है। मंत्र विनियोग, ध्यान स्तुति करके करना चाहिए—

विनियोग

ॐ अस्य त्रैलोक्य मोहनकर गणेशमंत्रस्य गणक ऋषिः गायत्री छन्दः त्रैलोक्य मोहनकरो गणेशो देवता ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति

गदाबीजपूरे धनुः शूल चक्रे, सरोजोत्पले पाशधान्याग्रदंतान्।
करैः संदधानं स्वशुंडाग्रराजत् मणीकुंभ मंगाधिरूढं स्वपत्न्या॥
सरोजन्मना भूषणानां भरेणोज्ज्वलद्धस्ततन्व्या समालिंगितांगम्।

जप-मंत्र

ॐ वक्रतुंडकै दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वर वरद सर्व जनं वशमानय स्वाहा।

विघ्न-विनाशक वक्रतुण्ड मंत्र—इकत्तीस अक्षरों वाला यह मंत्र अत्यंत प्रभावकारी है। कार्यों में आने वाली अड़चनों को दूर करने वाला यह मंत्र 51 हजार में सिद्ध हो जाता है। कार्य में आते विघ्न को दूर करने के लिए सिद्ध करने के बाद प्रयोग के समय दूर्वा के तिनकों पर इस मंत्र को पढ़कर तोड़ देने से विघ्न भी स्वतः टूट जाता है। मंत्र इस प्रकार है—

विनियोग

ॐ अस्य श्री वक्रतुंड गणेशमंत्रस्य भार्गवऋषिः अनुष्टप् छंदः विघ्नेशो देवता यं बीजम यं शक्तिम् ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

पूर्व वर्णित छह अक्षरों वाले मंत्र की 'ध्यान-स्तुति' यहां भी प्रयोजनीय है।

जप-मंत्र

रायस्पौषस्य ददिता निधिदा रत्न धातुमान्।
रक्षोहणो बलगहनो वक्रतुंडाय हुम्॥

तंत्र साधना में सफलता-प्राप्ति हेतु मंत्र—सभी गणपति मंत्रों में इसे बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। विशेष रूप से तंत्र साधना में सफलता के लिए यह मंत्र प्रभावशाली है। कोई भी साधक इसकी साधना कर सकता है।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीउच्छिष्ट गणेश नवार्ण मंत्रस्य, कंकोलऋषिः, विराट्छंदः, उच्छिष्ठ गणपतिर्देवता, अखिलाप्तये जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति

चतुर्भुजं रक्ततनुं त्रिनेत्रं पाशांकुशौ मोदकपात्र दन्तौ।
करैर्दधानं सरसीरुहस्थं उन्मुक्तमुच्छिष्ट गणेश मीडे॥

जप-मंत्र

हस्ति पिशाचि लिखे स्वाहा।

पारिवारिक सुख-समृद्धि हेतु मंत्र—भौतिक अभावों को दूर करके पारिवारिक सुख-समृद्धि और धन-धान्य की प्राप्ति कराने में यह मंत्र बहुत ही शक्तिशाली माना जाता है। इस मंत्र के साधनाकाल में साधक का भोजन, निवास, वस्त्र, आसन, जपमाला, गणेश प्रतिमा, चंदन, पुष्प, चावल और नैवेद्य सब कुछ पीले हों। मंत्र-जप के लिए हल्दी की गांठों की माला लेनी चाहिए तथा यहां देवी की उपासना बगुलामुखी के रूप में करनी चाहिए। एकाहार, एकांत पवित्र जीवन, श्रद्धा, दया, धर्म, दान-पुण्य,

भूमि-शयन और ब्रह्मचर्य—ये सभी साधनाओं के अपरिहार्य अंग हैं। इस नियम का पालन करने से सिद्धिप्राप्ति का आधार निर्मित होता है। इसके विपरीत आचरण करने से तपस्या खंडित हो जाती है और जप का परिणाम नहीं निकलता।

विनियोग

ॐ अस्य हरिद्रागणनायकमंत्रस्य मदनऋषिः अनुष्टुप् छंदः हरिद्रागणनायको देवता ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनयोगः।

ध्यान-स्तुति

पाशांकुशौ मोदकमेकदंत करैर्दधानं कनकासनस्थम्।
हारिद्रखण्डप्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांशुकं रात्रि गणेशमीडे॥

जप-मंत्र

ॐ हुंग्लौं हरिद्रा गणपतये वर वरद सर्वजन हृदयं स्तंभय-स्तंभय स्वाहा।

महालक्ष्मी-प्राप्ति और दारिद्रय निवारण के लिए मंत्र—ब्रह्मचारिणी माता दुःख तथा दरिद्रता को हरण करने में समर्थ हैं। वह अपने पुत्रों को सुखी ही देखना चाहती हैं। निम्न मंत्र का प्रतिदिन 21 माला जप करने से 100 दिन में एक शतचण्डी महायज्ञ का फल प्राप्त होता है। साधक शीघ्र ही धनसंपदा से युक्त होता है।

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्रय दुःख-भयहारिणि का त्वदन्या
सर्वोपकार-करणाय सदाऽऽर्दचित्ता॥

विश्वव्यापी विपत्तिनाशक मंत्र—

देवि! प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरि! पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि! चराऽचरस्य॥

उपरोक्त मंत्र के जप करने से आँधी-तूफान, अधिक वर्षा को रोकना, बवंडर तथा सुनामी जैसी लहरों को रोका जा सकता है। विभिन्न प्रकार की दैहिक, दैविक तथा भौतिक आपत्तियों को दूर करने के लिए इस मंत्र का पुश्चरण जप करना चाहिए।

पापनाशक मंत्र—**हिनस्ति दैत्यतेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।**
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्योऽनः सुतानिव॥

जाने-अनजाने किए गए पाप के दोष से मुक्त होने के लिए इस मंत्र पश्चात्तापपूर्ण कम से कम एक माला जप अथवा तब तक करना चाहिए जब तक मन में पश्चात्तापाग्नि शान्त न हो। पश्चात्ताप और श्रद्धा के अभाव में इस मंत्र का उच्चारण निष्फल होता है।

व्यापार बंध दूर करने का मंत्र—किसी कारणवश आपका व्यापार ठप्प हो गया है या किसी ने शत्रुता के कारण बांध दिया तो कदापि निराश न हों। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आते ही हैं। आप एक मोती शंख, सात गोमती चक्र, ग्यारह

लक्ष्मी कारक कोड़ियां, 108 काली मिर्च, 108 लौंग और 100 ग्राम सरसों के तेल में स्थापना से पूर्व पीसकर रख लें। सायंकाल के समय (द्वितीया को) काला कपड़ा बिछायें और कटोरी में मिश्रण को भरकर स्थापित करें। तदुपरांत सरसों के तेल का दीपक जलाकर (कटोरी में) मंत्र पाठ करें–

ॐ दक्षिण भैरवाय भूत-प्रेत बंध तंत्र बंध निग्रहनी सर्वसंहारिणी कार्यं सिद्धि कुरु-कुरु फट् स्वाहा।

उपरोक्त मंत्र का प्रतिदिन तीन माला जप दक्षिणमुख होकर करें। व्यापार सम्बंधी सभी बाधाएं निश्चित रूप से दूर हो जायेंगी, किन्तु कर्म से विमुख न हों।

उपद्रव-नाशक प्रयोग–नवरात्र की द्वितीय रात्रि को स्नान करके साफ स्वच्छ धोती धारण करें। यदि संभव हो तो पीली धोती धारण करें।

उसके बाद हनुमान जी का यंत्र चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर स्थापित करें। यंत्र पर सिन्दूर का तिलक करें तथा कुमकुम से **हुं हनुमते नमः** लिखें। गुड़ का भोग लगाकर दशमी तिथि तक मूंगे की पांच माला नित्यप्रति करें।

ॐ घंटाकर्णो महावीर सर्व उपद्रव नाशाय कुरु-कुरु स्वाहा।

नौकरी में उन्नति के लिए सिद्ध प्रयोग–आप नौकरी पेशा व्यक्ति हैं और आपकी उन्नति नहीं हो रही हो तो 'देव्यानुग्रह यंत्र' नवरात्र में विधिपूर्वक स्थापित करके मूंगे की माला से मंत्र पाठ करें–

ऐं ह्रीं क्ली चामुण्डाये विच्चै, ॐ ग्लौ हुं क्लीं जूं सः, ज्वालय-ज्वालय ज्वल-ज्वल, प्रज्वल-प्रज्वल ऐं ह्री क्लीं चामुण्डाये विच्चै। ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।।

उपरोक्त मंत्र का पाठ करने से मनोकामना पूर्ण होती है।

संतान-प्राप्ति हेतु मंत्र–संतानहीनों के लिए परम कल्याणकारी यह मंत्र उस औषधि के समान है जो मृत्यु को प्राप्त हो रहे प्राणी को पुनर्जीवित कर देती है।

संतान-प्राप्ति हेतु 'संतान गोपाल यंत्र' स्थापित करके पूजन करें। फिर रुद्राक्ष की माला से मंत्र जाप करें। नवरात्र की द्वितीया तिथि से लगातार 45 दिनों तक 108 बार निम्न मंत्र का पाठ करें। देवी प्रसन्न होकर पुत्र-प्राप्ति का आशीर्वाद देकर तुम्हें धन्य करेंगी।

सदपि नित्यं परतिप्यमानं, व्यामेव सीतात्याभिभाषमाः।
दृढ़व्रतौ राजसुतौ महात्मा तवैव लाभायकृतः प्रयत्नः॥



श्री कृष्ण

पूजास्थल पर बाल गोपाल श्री कृष्ण का चित्र लगायें।

यश-प्राप्ति के लिए मंत्र—लेखक, साहित्यकार अथवा कलाकार अथवा कम्प्यूटर में फैशन डिजाइनिंग आदि में सफलता प्राप्त करने के लिए भगवती ब्रह्मचारिणी की कृपा आवश्यक है। वे सरस्वती रूप में आकर साधक का भला करती हैं। अतः भगवती सरस्वती यंत्र स्थापित कर 41 दिन तक 11 माला का जप करें।

सरस्वती महामाये विद्ये कमललोचने।
विद्यारूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते॥

गड़ा धन प्राप्त करने के लिए प्रयोग—नवरात्र स्थापना दिवस को बाजोट पर काला वस्त्र बिछाकर एक थाली में 'श्री' लिखकर पुष्प आसन पर 'कनक धारा' यंत्र स्थापित करके नीचे लिखे मंत्र का पाठ तन्मय होकर करें—

ॐ वं श्रीं वें ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं कनक धारायै स्वाहा॥

पूरे नवरात्र भर यंत्र का पूजन करें तत्पश्चात् दशमी के दिन यंत्र को उस भवन या जमीन में दबा दें जहां गढ़ा धन होने की संभावना हो। चालीस दिन के अन्दर स्वप्न में वह गढ़ा धन आपको दिखायी देगा।

ब्रह्मचारिणी वाहन का रहस्य

द्वितीय शक्ति माहेश्वरी अर्थात् ब्रह्मचारिणी हैं। महेश्वरी लय शक्ति को कहते हैं। अखण्ड चैतन्य-समुद्र के जिस अंश में प्रलय-भाव का प्रकाश हो उस चैतन्यांश का नाम महेश्वर है अर्थात् आत्मा जहां पर प्रलय क्रिया का अभिमान करे उस स्थान में वह 'महेश्वर' नाम से पुकारा जाता है। उस चेतनाधिष्ठान से जो प्रलयरूप क्रियाशक्ति प्रकाशित हो, वही माहेश्वरी शक्ति है। इसका वाहन वृष (बैल) है। 'वृष' शब्द का अर्थ 'धर्म' होता है। इसके तप, शौच, दया, दान—ये चार चरण हैं। धर्म सत्वगुण से उत्पन्न होता है और सत्व शुभ्रवर्ण है। इस कारण—

"कारणगुणाः कार्यगुणानारमन्ते।"

इस नियम से धर्म भी श्वेतवर्ण ही हो सकता है यही हेतु है कि धर्म को वृष की उपाधि शास्त्रकारों ने दी है।

❑❑❑

तृतीयं चन्द्रघण्टा

पिण्डजप्रवरारूढ़ा चन्डकोपास्त्रकैर्युता।
प्रसादं तनुते महं-चन्द्रघण्टेति विश्रुता॥



भगवती दुर्गा तीसरी मूर्ति के रूप में चन्द्रघण्टा नाम से जानी जाती है। नवरात्र के तीसरे दिन इन्हीं के विग्रह का पूजन आराधन किया जाता है। इनका स्वरूप परम शान्तिदायक और कल्याणकारी है। इनके मस्तक में घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र है इसी कारण से इन्हें चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता है। इनके शरीर का रंग स्वर्ण के समान चमकीला है। इनके दस हाथ हैं। दसों हाथों में खड्ग आदि शस्त्र, बाण आदि अस्त्र विभूषित हैं। इनका वाहन सिंह है। इनकी मुद्रा युद्ध के लिए उद्यत रहने वाली है। इनके घण्टे-सी भयानक चण्डध्वनि से अत्याचारी दानव-दैत्य, राक्षस सदैव प्रकम्पित रहते हैं।

चन्द्रमा के समान शीतल ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाली जगवन्दनीय माता चन्द्रघण्टा अपने भक्तों के प्रति सदैव विनयशील रहती हैं। भक्तों को सदैव पुत्र की दृष्टि से निहारने वाली माता चन्द्रघण्टा के चरणों में वंदना करने से आत्मा को शान्ति मिलती है। क्रोध का नाश होता है। दया, क्षमा, निद्रा, स्मृति, क्षुधा,

तृष्णा, तृप्ति, श्रद्धा, भक्ति, धृति, मति, तुष्टि, पुष्टि, शांति, कान्ति, लज्जा आदि इन्हीं महाशक्ति की शक्तियां हैं। यही गोलोक में श्री राधा, साकेत में श्री सीता, क्षीरोदसागर में लक्ष्मी, दुर्गतिनाशिनी मेनकापुत्री दुर्गा हैं। चन्द्रघण्टा माता में माता-पिता का वात्सल्य, गुरु की गुरुता, साधु की साधुता, लेखकों की लेखनशक्ति, वाग्मियों की वक्तृत्वशक्ति, न्यायी नरेशों की प्रजापालन शक्ति विराजमान है। जो भी प्राणी सच्चे मन से माता चन्द्रघण्टा के चरणों का ध्यान करता है उसे अनेक प्रकार की कठिनाइयों से मुक्ति मिलती है।

भावना हृदय की भाषा है और भवानी इसी भाषा को समझती हैं, क्योंकि वह हृदय को पहचानती हैं। यह भाषा किसी प्रांत विशेष की बपौती नहीं है और न किसी व्यक्ति विशेष की निजी सम्पत्ति है। इस पर सबका समान अधिकार है। जिसका दिल खुलकर बोल सकता है, उसी को भवानी का संबल मिल जाता है। लेकिन दिल की जबान तभी खुल सकती है जब बाहर का कोलाहल शांत हो, मन प्रसन्न हो, विचार निर्मल हों और आत्मा का आलोक अंतर्मुख नयनों के सामने प्रकट हो। इसलिए यह काम इतना आसान नहीं है, जितना कि समझा जाता है। फिर भी भवानी की कृपा से यह भी संभव है।

साधक के मन में सत्ता की सच्ची भावना का उदय साधना, संस्कार और संयोग के संकलित परिपाक से होता है और जब होता है तब सारा संसार उस भाव-जगत् के सामने सारहीन दिखाई देता है। साधना के जितने प्रकार हैं, सब इसी भावना को लक्ष्य बनाकर चलते हैं। परम सत्य का प्रतिपादन करने वाला सुन्दर स्तोत्र पाठ हो, मन का मालिन्य मिटाकर अंतःकरण को पवित्र बनाने वाला मंत्र जाप हो या इष्ट देवता की अभीष्ट रूप कल्पना को साकार बनाने वाली ध्यानलीनता हो, सबका एकमात्र ध्येय नश्वर में अविनश्वर का साक्षात्कार करना ही है और यह केवल भावना के माध्यम से ही संभव है। वाणी के माध्यम से परमेश्वरी के स्थूल रूप का वर्णन किया जा सकता है। मन के माध्यम से देवी के सूक्ष्म रूप का मनन किया जा सकता है। पर सर्वकारणा शक्ति के कारण स्वरूप को हृदयंगम करने के लिए निर्मल अंतःकरण की उर्मिल भावना चाहिए, वाणी या मन से काम नहीं चलेगा। जहां वाणी मौन बन जाती है, मन सुमन की तरह खिल उठता है, वहां भावना भवानी के भव्य रूप को आत्मसात् कर लेती है और भावुक भावना और भवानी में तादात्म्य स्थापित हो जाता है। जीव-जगत् में प्रत्येक जीव को सजीव बनाने वाली संजीवनी शक्ति की खोज करते-करते साधक इस भाव-जगत में पहुंच जाता है। इस प्रकार की भाव-भूमिका में पहुंचे हुए भाव योगी के लिए भवानी ही संसार का सत्व सार या भव की रानी दिखाई देती है। इस भावना पर पहुंचने के बाद प्राणी को भव की बाधा सता नहीं पाती। महावन की तरह फैला हुआ भुवन भवानी की पावन अनुकंपा से भावना का उपवन बन जाता है। भावना के कुठार से वह संसार के वन को नष्ट-भ्रष्ट कर उसे

उपवन की शोभा प्रदान करती है। जीवन की जटिल समस्याओं को सुलझाकर वह फूलों को वेणी की तरह जीवन धारा को सजाती है। इसीलिए श्रीमाता को यहां 'भवारण्य कुठारिका' कहा गया है।

भद्रता भवानी की प्रमुख विशेषता है। संसार में जो कुछ भद्र, शुभप्रद या मंगलकर है, वह देवी के लिए प्रिय है। इसलिये उनको 'भद्रप्रिया' कहा गया है।

चन्द्रघण्टा पूजन विधान

नवरात्र के तीसरे दिवस में माँ की तीसरी शक्ति चन्द्रघण्टा की पूजा होती है। माता के मस्तक में घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र है जिस कारण इन्हें चन्द्रघण्टा कहा जाता है। माता के घण्टे की अति तीव्रतम ध्वनि असुरों को भयभीत करती है, यहां यह भी कहा जाता है कि चौरासी लाख योनियों के भय को दूर करने के लिए माता के मंदिर में चौरासी घण्टों की ध्वनि की जाती है। चौरासी घण्टों से सुसज्जित माँ चन्द्रघण्टा के पूजन के लिए पूर्वाभिमुख होकर आसन पर बैठ जायें। जल से प्रोक्षण कर शिखा बांधें। तिलक लगाकर आचमन एवं प्राणायाम करें। संकल्प करें। हाथ में फूल लेकर अंजलि बांधकर चन्द्रघण्टा का ध्यान करें।

ध्यान— तुम बोलो न बोलो, सुनौं न सुनौं
हमैं दाबि हिया को कराहनै हैं।
तुम ओर हमारी लखौ न लखौ
हमैं रूपपयोनिधि थाहने हैं॥
तुम आन मिलौ न मिलौ हमैं तो—
पग-धूरि लै भूरि सराहनै हैं।
रटि नाम तिहारोइ चंद्रा भनैं
हमैं नेह को नातो निबाहनै हैं॥

आवाहन— हे चन्द्रघंटा आइये
स्थान पर हरषाइये।
पूजा करूं जब तक तुम्हारी
जलकृपा बरषाइये॥

श्री जगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। चन्द्रघण्टामावाहयामि। आवाहनार्थे पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

(पुष्प माँ भगवती चन्द्रघण्टा के चरणों में चढ़ायें। यदि प्रतिष्ठित प्रतिमा हो तो 'चन्द्रघण्टामावाहयामि। आवाहनार्थे' के स्थान पर ध्यानार्थे बोलना चाहिए।)

आसन—भगवती चन्द्रघण्टा को श्वेत धान्य अति प्रिया हैं अतः चावल या सफेद तिल से चौकी पर सफेद या लाल वस्त्र बिछाकर घण्टा की आकृति बनाकर उस पर माँ भगवती को आसन अग्रांकित मंत्र से प्रदान करें—

नाना मणियों, रत्नों से युत
यह स्वर्ण सिंहासन जगदम्बे।
ग्रहण करो दिव्यासन यह
हे चन्द्रघटा दुर्गे अम्बे॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। आसनार्थे तन्दुलान् समर्पयामि।

(भगवती को स्थापित करने के बाद चरणों में चावल चढ़ायें।)

घण्टा पूजन—घण्टा को चन्दन और फूल से अलंकृत कर निम्नलिखित मंत्र से प्रार्थना करें—

आगमनार्थं तु देवीनां गमनार्थं च रक्षसाम्।
कुरु घण्टे वरं नादं देवीस्थान संनिधौ॥

(प्रार्थना के बाद घण्टा को बजायें।)

घण्टास्थिताय गरुडाय नमः इस नाम मंत्र से घण्टे में स्थित गरुड़ देव की भी पूजा करें। घण्टा भगवती चन्द्रघण्टा को अर्पित करें।

शंख पूजनम्—शंख में दो दर्भ (कुशा) या दूब, तुलसी और फूल डालकर '**ॐ**' कहकर उसे सुवासित जल से भर दें। इस जल को गायत्री मंत्र से अभिमंत्रित करें। फिर निम्न मंत्र पढ़कर शंख में तीर्थों का आवाहन करें—

पृथिव्यां यानि तीर्थानि स्थावराणि चराणि च।
तानि तीर्थानि शंखेऽस्मिन् विशन्तु ब्रह्मशासनात्॥

तब '**शंखाय नमः चन्दनं समर्पयामि**' कहकर चन्दन लगायें और '**शंखाय नमः, पुष्पाणि समर्पयामि**' कहकर फूल चढ़ायें। इसके बाद निम्नलिखित मंत्र पढ़कर शंख को प्रणाम करें—

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृता करे।
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य! नमोऽस्तुते॥

प्रणाम कर पुष्पों सहित भगवती चन्द्रघण्टा को अर्पित करें।

पाद्य— **गंगा यमुनादिक नदियों**
का यह उत्तम जल ले आया हूं।
पांवों को धोने हेतु तुम्हें
इस जल को स्वच्छ बनाया हूं॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। (जल चढ़ायें।)

अर्घ्य— **गन्ध पुष्प अक्षत से युत**
यह अर्घ्य समर्पित करता हूं।
चन्द्रघण्टा माँ ग्रहण करो
तन-मन-धम अर्पित करता हूं॥

श्री जगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। हस्तयौः अर्घ्यं समर्पयामि। (चन्दन, पुष्प, अक्षत से युक्त अर्घ्य दें।)

आचमन– **कर्पूर सुवासित शीतल जल**
जो स्वादभरा आचमन हेतु।
हे घंटेश्वरि माँ ग्रहण करो
कर दो किरण हे जननि सेतु॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। आचमनं समर्पयामि॥

(कर्पूर से सुवासित जल द्वारा भगवती चन्द्रघण्टा को शीतल जल चढ़ायें।)

स्नान– **सभी पाप को हरने वाला**
गंगाजल ले आया हूं।
स्नान हेतु माँ स्वीकारो
मैं अतिशय हरषाया हूं॥

श्री जगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। स्नार्थं जलं समर्पयामि॥

(पवित्र जल या गंगाजल से भगवती चन्द्रघण्टा भवानी को स्नान करायें।)

पञ्चामृत–दूध, दही, घी, बूरा, शहद–इन पांचों अमृत वस्तुओं का मिश्रण पञ्चामृत है। पञ्चामृत में मेवा, तुलसीदल आदि चरणामृत हो जाने के बाद ही मिलाना चाहिए। विशेषतः देवीपूजन में पञ्चामृत में तुलसी चरणामृत में ही डालें पहले नहीं। अक्सर लोग पञ्चामृत को चरणामृत बोल देते हैं। यह उनकी भूल है। पञ्चामृत चरणामृत तब बनता जब पञ्चामृत से देवी या देवता का स्नान कराते समय चरणों के पास से वह अमृत पदार्थ एकत्रित किया जाता है। प्रचलित परम्परा में पञ्चामृत दो तरह से अर्पण किया जाता है–(क) सूक्ष्म रूप से (इसमें समस्त अमृत रस एकत्र करके एक साथ अर्पण होते हैं)। (ख) सामान्य रूप से (प्रत्येक अमृत रस अलग-अलग चढ़ाये जाते हैं)।

सूक्ष्म विधि–दूध, दही, घी, बूरा, शहद को एक पात्र में एकत्र करें और निम्न मंत्र से स्नान करायें–

पञ्चामृत स्नान– **दूध, दही, घृत और मधु**
शर्करा मिलाकर लाया हूं।
स्नान करो पंचामृत से
भय दूर रहे हरषाया हूं॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि॥

पंचामृत स्नान के बाद साफ जल से स्नान करायें और स्वच्छ वस्त्र से पोंछ दें।

सामान्य विधि–प्रत्येक अमृत रस का क्रमवार माँ भवानी चन्द्रघण्टा को उनके सामने लिखे मंत्र से स्नान करायें औंर प्रत्येक अमृत रस के स्नान के बाद जल से स्नान करायें।

दुग्ध स्नान–

पृथ्वी, औषधि अन्तरीक्ष
सब दिशा दूध मय अर्पित।
इसकी कमी न हो जीवन में
जो माँ तुझे समर्पित॥

श्रीजगदम्बायै भगवत्यै चन्द्रघण्टायै नमः। दुग्धस्नानं समर्पयामि॥

(गोदुग्ध से स्नान करायें।)

दधि स्नान–

चन्द्रमा प्रभा सम शुद्ध स्वच्छ
ओ अम्लीय मधुर मनोहर है।
स्नान हेतु माँ तुझे समर्पित
करता दिव्य धरोहर है॥

श्रीजगदम्बायै भगवत्यै चन्द्रघण्टायै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि।

(गोदधि से स्नान करायें।)

गोघृत स्नान–

जिससे होता है हवन
हव्य भी जिसमें देते जन हैं।
जिससे होते तृप्त देव द्विज
घृत अर्पण माँ मन है॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। घृतस्नानं समर्पयामि॥

(गोघृत से स्नान करायें।)

मधु स्नान–

मधुमक्खियां पुष्प रस ले
संचय करतीं रस मधुरम्।
स्वादसयुक्त अति मधुर
मधू मा अर्पित है यह प्रचुरम्॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि॥

(मधु से स्नान करायें।)

शर्करा-स्नान–

शशिप्रभा सदृश यह शर्करा
मीठे होते सब अन्न।
स्नान हेतु अर्पित करूँ
ग्रहण करो माँ छन्न॥

श्री जगदम्बायै चन्द्रघंटायै नमः।। शर्करा स्नानं समर्पयामि।

(बूरा से स्नान करायें।)

गन्धोदक स्नान–

द्रव द्रव्य से उत्पन्न यह
कस्तूरी गन्ध भरा है।
गन्धोदक तुझको देकर
माँ तन मन हरा-भरा है॥
ॐ जगदम्बायै ब्रह्मचारिण्यै
नमः। गंधोदकं समर्पयामि॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि॥ (मलयचन्दन और अगरु से मिश्रित जल चढ़ायें।)

शुद्धोदक स्नान– गंगा यमुना कृष्णा नर्मदा देवी गोदावरी सरस्वती।
सरयू इन सप्त नदियों का जल अर्पित तुमको
भगवती॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥ (शुद्ध जल से स्नान करायें।)

आचमन–शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥ (आचमन के लिए जल दें।)

वस्त्र– लज्जा शील के जो रक्षक,
ये वस्त्र तुम्हें समर्पित हों।
देहालंकरण से पंचभूत
चंद्रघण्टा जू को अर्पित हों॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। वस्त्रोपवस्त्रं कञ्चुकीयं च समर्पयामि॥ (धौतवस्त्र, उपवस्त्र और कञ्चुकी निवेदित करें।)

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दें।)

सौभाग्य सूत्र– दुर्भागी को सौभागी करतीं
देवी चंद्रघण्टा माता।
सूत्र सौभाग्य को अर्पण करने
ये भक्त दर तेरे आता॥

श्रीजगदम्बायै भगवत्यै चन्द्रघण्टायै नमः। सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि॥
(सौभाग्यसूत्र चढ़ायें।)

चन्दन– चंद्रबदन पंकज-सा कोमल,
तेरा रूप सलौना।
तेरे भाल पर अर्पित चंदन
करने आया तेरा छौना॥

श्रीजगदम्बायै भगवत्यै चन्द्रघण्टायै नमः। चन्दनं समर्पयामि॥ (मलयचन्दन लगायें।)

सिन्दूर– लोक-लाज कुल की मर्यादा
रक्षा करता है सिंदूर।
इस घर का सिंदूर अमर रहे माँ
अवगुण हमसे भागें दूर॥

श्री जगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि॥ (सिन्दूर चढ़ायें।)

हरिद्रा चूर्ण–सुख-सौभाग्य की मन में इच्छा ले,
हल्दी चूरन लाया हूं।
ग्रहण करो हे चंद्रघंटे मैं
अब पूरण इच्छा पाया हूं॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। हरिद्रां समर्पयामि॥ (हल्दी का चूर्ण चढ़ायें।)

कुमकुम– कुमकुम अनंग का दिव्य रूप,
कामनी रति का कारक है।
कुमकुम से चित बने कुमकुम,
लिये हुआ ये उपासक है॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। कुमकुम समर्पयामि॥ (कुमकुम चढ़ायें।)

कज्जल (काजल)– काजल ग्रहण करो चाँदबदने
जो शान्ति को बढ़ाता है।
नेत्रज्योति में वृद्धि करता
कर्पूर धूम्र से उद्भव पाता है॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। कज्जलं समर्पयामि॥ (काजल चढ़ायें।)

दूर्वाङ्कुर– कांतमणि की सी प्रभा दूर्वा से,
पूजा करता मैं चंद्रघण्टे।
चरणों में तेरे समर्पित है
चन्द्रवदने माँ चंद्रघण्टे॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि॥ (दूब चढ़ायें।)

विल्वपत्र– त्रिदल जहाँ तीन गुण
नेत्र त्रय आवुध तीन जहाँ हैं।
तीन जन्म के पाप करे
जो दूर, पत्र यहाँ है॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। विल्वपत्रं समर्पयामि॥ (विल्वपत्र चढ़ायें।)

आभूषण– कंकण हार मेखला
केयूर कुण्डल आदि हैं।
हीरा पन्ना जड़े हैं इसमें
लेकर हरती भव-व्याधि हैं॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। आभूषणानि समर्पयामि॥ (आभूषण चढ़ायें।)

पुष्पमाला–डाली-डाली के सुमनों का ज्यों अति पराग चुन लेता है।
उसी तरह चुन इन कुसुमों को अर्पित तुमको कर देता है॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि॥ (पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ायें।)

सौभाग्यपेटिका–

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि॥
(सौभाग्यपेटिका समर्पण करें।)

नानापरिमलद्रव्य–अबीर गुलाल हरिद्रा से है युक्त द्रव्य नाना परिमल।
ग्रहण करो हे चंद्रघटा मारो अंतर के खरदल बल॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि॥
(अबीर, गुलाल, हल्दी का चूर्ण चढ़ायें।)

धूपबत्ती–भगवती चन्द्रघण्टा भवानी को धूपबत्ती अपने दाहिने हाथ के बायीं ओर ले जाकर पुनः ऊपर की ओर ले जाते हुए वृत्त क्रम में निम्न मंत्र बोलते हुए घुमायें–

प्रकृति की उत्तम औषधि से,
धूप बनी है गुणकारी।
धूम्र सुवसित ग्रहण करो,
चंद्रघटा माँ कल्याणी॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। धूपमाघ्रापयामि।

दीपक–घण्टाकृति चावल से पहले या भूमि पर बनायें और उस पर अलग से दीपक जलाकर स्थापित निम्न मंत्र से करें–

सुंदर सुगम नरम कपीसा।
योजित घृत वर्तिका सुहासा॥
ज्योतिदीप धारण कर माते।
हारो पाप मम लगते ताते॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। दीपं दर्शयामि॥ (घी का दीपक दिखायें, हाथ धो लें।)

धूप–गाय के गोबर से बना उपला जलाकर माँ भगवती चन्द्रघण्टा का ध्यान करके घी में लौंग का जोड़ा घी में भिगोकर जलते उपले पर 'ॐ चं चं चं चन्द्रघण्टायै हुं' कहकर चढ़ायें। लौंग का जोड़ा शैलपुत्री के पूजन में दी गयी विधि के अनुसार चढ़ायें।

नैवेद्य– अर्पित कर अन्न चंद्रघंटा को,
कर पाऊं तब अन्नाप्रासन।
माता आप ही अन्न की देवी,
इस जग का तू ही है शासन॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥ (नैवेद्य निवोदित करें।)

आचमनीय आदि–नैवेद्यान्ते ध्यानमाचमनीयं जलमुत्तरापोऽशनं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि॥ (आचमनी से जल दें।)

ऋतुफल– मौसम और ऋतुओं ने
जो फल जग को प्रदान किये।
लेकर उनकी तुच्छ भेंट
चंद्रघटा तुम्हें दान किये॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि॥ (ऋतुफल समर्पण करें।)

ताम्बूल– कोमल पात पान सुहावा।
लोंग इलायची जाती फल पावा॥
ग्रहण करो चंद्रघटा भवानी।
है जगजननी माँ कत्याणी॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि॥ (इलायची, लौंग, पूंगीफल के साथ पान निवेदित करें।)

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। कर्पूरारार्तिक्यं समर्पयामि॥ (कर्पूर की आरती करें।)

चन्द्रघण्टा के रूप में तृतीय कन्या का पूजन–चन्द्रघण्टा के रूप में तृतीय नवरात्र को या अन्तिम नवरात्र की तिथि को तृतीय कन्या के रूप में 'रोहिणी' का पूजन किया जाता है। 'रोहिणी' के लिए पांच वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। निम्न मंत्र से चन्द्रघण्टा को भोज्य पदार्थ अर्पित करें–

अणिमादिगुणाधारां मकाराद्यक्षरात्मिकाम्।
अनन्त शक्तिकां लक्ष्मीं रोहिणीं पूजयाम्यहम्॥

मंत्र प्रकरण–भगवती चन्द्रघण्टा तृतीया तिथि की अधिष्ठात्री हैं। वे विभिन्न मंत्रों के प्रभाव से साधक का कल्याण करती हैं। नीचे कुछ मंत्र दिए जा रहे हैं–

विविध उपद्रवों को दूर करने का मंत्र–देव, दानव, मनुज द्वारा विभिन्न उपद्रव हमारे जीवन में आते हैं। जिनमें कुछ स्वयं द्वारा अज्ञानवश तथा कुछ स्वतः ही प्राप्त होते हैं। इनके शमनार्थ इस मंत्र का जप करना चाहिए। शीघ्रतापूर्वक आए उपद्रव का भी शमन अग्रांकित मंत्र द्वारा हो जाता है–

रक्षांसि यत्रोग्र विषाश्च नागा,
यत्रारयो दस्यु बलानि यत्र।
दावानलो यत्र तथाऽब्धि मध्ये,
तत्र स्थिता त्वं परिपासि विश्वम्॥

इस मंत्र द्वारा बालकों को आए विभिन्न बाल ग्रह जन्य दोषों का निवारण भी हो जाता है।

पाप-नाश के लिए साधना व प्रयोग—तीसरे नवरात्र को सूर्योदय से पूर्व स्नानादि से निवृत होकर पश्चिम दिशा में आसन बिछाकर अपने सम्मुख लकड़ी के फट्टे पर चावल की ढेरी रखकर शालिग्राम शिवलिंग स्थापित कर धूप-दीपादि से पूजन कर तुलसी की माला से नीचे लिखे मंत्र का नित्यप्रति 10 माला का जप करें—

हिनस्ति दैत्य तेजांसि स्वनेनापूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि! पापेभ्योऽनः सुतानिवः।

विद्या वृद्धि प्रयोग मंत्र—पढ़ने वाले बालक यह प्रयोग करके परीक्षा में पूर्ण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

स्थापना के समय पूर्व दिशा की ओर मुख करके चौकी पर सफेद वस्त्र बिछा दें, उसके बाद थाली में केशर से **ह्रीं** या **चन्द्रघण्टायै नमः** लिखकर सरस्वती कवच स्थापित करके केशर का तिलक करें तथा स्फटिक की माला से 11 माला प्रतिदिन पूर्णिमा तक पाठ करें।

ॐ नमो श्री वद वद वाग्वादिनी बुद्धिं बर्द्धय ॐ ह्रीं नमः स्वाहा।

पूर्णिमा को कवच धारण करें। परीक्षा में सफलता मिलेगी।

विवाद निवारक सिद्धि मंत्र—किसी प्रकार के विवाद का निवारण करने हेतु नवरात्र में यह मंत्र सिद्ध करें—

सर्वबाधाविनिर्मुक्तो धनधान्य सुतान्वितः
मनुष्यो मत्प्रसादे न भविष्यति न संशयः॥

नवरात्रि से 21 दिन तक 108 बार प्रतिदिन मंत्र पाठ करें।

शत्रु को दुःखी करने हेतु प्रयोग—शत्रु को दुःखी करना हो तो निम्न मंत्र सिद्ध करें—

ॐ चाण्डालिनी कामाख्यावासिनी शत्रु परस्पर विद्वेषणाय फट्।

अखण्ड सौभाग्य-प्राप्ति की कामना—अखण्ड सुहागन रहना कौन स्त्री नहीं चाहती। पति का सुख सर्वश्रेष्ठ सुख है। अखण्ड सौभाग्यशाली होने के लिए तृतीया से त्रयोदशी तक निम्न मंत्र का प्रतिदिन 108 बार कर जप करें—

ॐ ह्रीं क्रीं ह्रीं स्वाहा।

ग्रह-दोष निवारण हेतु—ग्रहों की चाल पर मानव-जीवन निर्भर है। ग्रह शुभ स्थिति में हो तो शुभ फल, अशुभ स्थिति में हो तो अशुभ फल प्राप्त होता है।

ग्रहों की शान्ति के लिए नवरात्र में स्थापना के दिन एक थाली में केशर से स्वास्तिक बनाकर उसके चारों ओर एक-एक रुपये आठ सिक्के रखें और सिक्कों पर कुमकुम की बिन्दी लगायें तथा नीचे लिखे मंत्र का नौ दिनों तक पाठ करें—

ॐ ब्रह्मामुरारी त्रिपुरान्तकारी भानुः राशि भूमि सुतो बुधश्च।
गुरुश्च शुक्रः शनि राहु केतवः सर्वेग्रहाः शान्ति कराः भवन्तु॥

दुर्घटना रक्षक प्रयोग—दुर्घटना नाशक यंत्र का नवरात्र में धूप, दीप अक्षत (चावल) पुष्प आदि से पूजन करें। पूजन के समय सियार सिंगी स्थापित करें। पूजन समाप्त होने पर सियारसिंगी सदैव अपने पास रखें या काले धागे में पिरोकर गले अथवा दाहिनी भुजा में धारण करें।

श्रीअम्बाजी की आरती

जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामागौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिव जी॥1॥ जय अम्बे०
मांग सिंदूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वलसे दोउ नैना, चंद्रवदन नीको॥2॥ जय अम्बे०
कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला कण्ठनपर साजै॥3॥ जय अम्बे०
केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुखहारी॥4॥ जय अम्बे०
कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चंद्र दिवाकर सम राजत ज्योति॥5॥ जय अम्बे०
शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर-घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती॥6॥ जय अम्बे०
चण्ड मुण्ड संहारे, शोणितबीज हरे।
मधु-कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे॥7॥ जय अम्बे०
ब्रह्माणी, रुद्राणी तुम कमला रानी।
आगम-निगम बखानी, तुम शिव-पटरानी॥8॥ जय अम्बे०
चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूं।
बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू॥9॥ जय अम्बे०
तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तनकी दुख हरता सुख-सम्पत्ति करता ॥10॥ जय अम्बे०
भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मनवाञ्छित फल पावत सेवत नर-नारी॥11॥ जय अम्बे०
कंचन थाल विराजत अगर कपुर बाती।

(श्री) मालकेतु में राजत कोटिरतन ज्योति ॥12॥ जय अम्बे०
(श्री) अम्बेजी की आरति जो कोई नर गावै।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख-सम्पत्ति पावै ॥13॥ जय अम्बे०

प्रदक्षिणा—यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। प्रदक्षिणां समर्पयामि॥ (प्रदक्षिणा करें।)

मन्त्रपुष्पाञ्जलि—श्रद्धया सिक्तया भक्त्या हार्दप्रेम्णा समर्पितः।
मन्त्रपुष्पाञ्जलिश्चायं कृपया प्रतिगृह्यताम्॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। मन्त्रपुष्पाञ्जलिं समर्पयामि॥ (पुष्पाञ्जलि समर्पित करें।)

नमस्कार— या देवी सर्वभूतेषु मातृरूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः॥

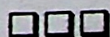
श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। नमस्कारान् समर्पयामि॥ (नमस्कार करें, इसके बाद चरणोदक सिर पर चढ़ायें।)

क्षमा याचना—मन्त्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं सुरेश्वरि।
यत्पूजितं मया देवि परिपूर्णं तदस्तु मे॥

श्रीजगदम्बायै चन्द्रघण्टायै नमः। क्षमायाचनां समर्पयामि। (क्षमायाचना करें।)

चन्द्रघण्टा के वाहन का रहस्य

नव महाशक्तियों में तृतीय महाशक्ति चन्द्रघण्टा हैं। इन्हें कौमारी भी कहा जाता है। जो असुरविजयिनी शक्ति आसुरिक वृत्तिपुञ्जों का दमन करती हुई देवशान्ति समूहों का परिचालन करें वही कौमारी या चंद्रघण्टा शक्ति हैं। उससे अधिष्ठित चैतन्यशक्ति ही कुमार है। इसका वाहन मयूर है। मयूर सांप का भक्षक एक पक्षी है। टेढ़ी चाल चलने वाले को सर्प कहते हैं। साधारणतः इन्द्रियवृत्ति समूह विषयाभिमुख विसर्पित भाव से—वक्रगति से परिचालित होता है। जब कोई साधक उनके विलय के हेतु बल या सामर्थ्य का अर्जन करता है तो वह मयूरधर्मी होता है। इस तरह का मयूरधर्मी जीव ही पूर्वोक्त कौमारी शक्ति का वाहन है। आत्मा का जो अंश देवभाव समूह के आसुरी भावों का विमर्दन करता हुआ परिचालित करता है उस अंश को कुमार एवं उस अधिष्ठान चेतन का अवलम्बन कर जो शक्ति देवभावों को परिचलित करती है वही कौमारी शक्ति है, अतः उपर्युक्त से कौमारी शक्ति का मयूर वाहन होना ही सर्वथा युक्त है।



चतुर्थ कूष्माण्डा

सुरासम्पूर्णकलशं रुधिराप्लूमेव च।
दधाना हस्तपदमाभयां कूष्माण्डा शुभदास्तु मे।

भगवती दुर्गा के चतुर्थ स्वरूप का नाम कूष्माण्डा है। अपनी मंद हँसी द्वारा अण्ड अर्थात् ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करने के कारण इन्हें कूष्माण्डा देवी के नाम से अभिहित किया गया है। जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, चारों ओर अंधकार-ही-अंधकार परिव्याप्त था, तब इन्हीं देवी ने अपने ईर्षत हास्य से ब्रह्माण्ड की रचना की थी, अतः यही सृष्टि की आदिस्वरूपा आदि शक्ति हैं। इनके पूर्व ब्रह्माण्ड का अस्तित्व था ही नहीं।



इनकी आठ भुजाएं हैं, अतः ये अष्टभुजा देवी के नाम से विख्यात हैं, इनके सात हाथों में क्रमशः कमण्डल, धनुष, बाण, कमल, पुष्प अमृतपूर्ण कलश, चक्र तथा गदा हैं, आठवें हाथ में सभी सिद्धियों को और निधियों को देने वाली जपमाला है। इनका वाहन सिंह है, संस्कृत भाषा में कूष्माण्डा कुम्हड़े को कहते हैं। बलियों में कुम्हड़े की बलि इन्हें प्रिय है। इस कारण से ही यह कूष्माण्डा कही जाती हैं।

संसार में तीन ताप होते हैं—दैहिक, दैविक और भौतिक। इन तीनों तापों के निवारण हेतु आद्याशक्ति ने कूष्माण्ड (तुमड़ी, पेठा) से अपना आविर्भाव किया। ऐसा कुछ विद्वानों तथा शास्त्रों का उल्लेख है। दैहिक, दैविक तथा भौतिक ताप मनुष्य ही नहीं अन्य जीवों को भी कष्ट ही देते हैं। ये मनुष्य की विवेकशीलता

को नष्ट करने के साथ अत्यन्त दुःखी करते हैं। त्रिविध तापों के निवारण हेतु माता कूष्माण्डा की पूजा-अर्चना की जाती है।

जो मनुष्य पूर्ण श्रद्धा और भक्ति से माता कूष्माण्डा के चरणों का ध्यान करते हुए विधि-विधान से पूजा एवं जप करता है उसे परम सुख और शान्ति प्राप्त होती है। वह इस लोक का यश प्राप्त करके परलोक में स्वर्ग का अधिकारी होता है। कूष्माण्डा देवी का बसेरा भीमा पर्वत पर है।

कूष्माण्डा पूजा विधान

वैसे तो किसी भी शुक्रवार या शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन भगवती देवी की कूष्माण्डा के रूप में पूजा की जा सकती है, किन्तु नवरात्र की चतुर्थी तिथि में माता कूष्माण्डा की पूजा विशेष रूप से की जाती है। सामग्री के रूप में सर्वप्रथम माता कूष्माण्डा का चित्र पहले स्थापित करे। फिर लाल चंदन, लाल पुष्प, गौखुरी, धूप, लालवस्त्र, अक्षत, नैवेद्य घृतदीपक आदि से तथा किसी एकान्त अथवा पवित्र स्थान में देवी की पूजा करके लाल चंदन की माता से जप आदि क्रियाएं की जाती हैं।

आचमन– ॐ भीमायै नमः॥

ॐ दुर्गायै नमः॥

ॐ कूष्माण्डायै नमः।

उपरोक्त मंत्र से आचमन करें। आचमन के पश्चात् घी का दीपक जलायें। उसमें लाल चंदन या सिंदूर से रंगी हुई रूई का प्रयोग करें। उसके उपरांत दूसरी तीली या अग्नि तत्व से तेल का दीपक जलाएं।

ध्यान–**अणिमादि गुणौदारां मकराकार चक्षुषाम्।**

अनन्त शक्ति भेदां तां कामाक्षीं प्रणमाम्यहम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डायै नमः। ध्यानं समर्पयामि॥ इस मंत्र से हाथ में लाल फूल लेकर भगवती कूष्माण्डा देवी का ध्यान करें।

आवाहन–भगवती कूष्माण्डा को आमन्त्रण करना ही आवाहन है। हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें। फिर उस पुष्प को पुनः माता कूष्माण्डा के चरणों में अर्पित करें–

हे ब्रह्मवादिनी कूष्माण्डा

आओ वरदान प्रदान करो।

हे महादेवि हे कल्याणी!

भक्तों को जीवन दान करो।

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डायै नमः। आवाहनं समर्पयामि॥

आसन–सफेद या क्रीम रंग के वस्त्र को चौकी पर बिछाकर चावल को हल्के हरे रंग से रंगकर या मूंग की दाल से वृत्ताकार अथवा पेठा के समान गोल आकृति बनाएं। माता कूष्माण्डा देवी को बैठने के लिए निवेदन करें–

रत्नों और मणियों से मण्डित
अर्पण करना चाहूं मैं आसन।
ग्रहण करो हे कुष्माण्डे तुम,
स्वर्णमण्डित दिव्यासन।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डादेव्यै नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि॥

पुनः इस मंत्र के बाद चरणों में चावल अर्पित करें।

पाद्य–हाथ में सुवासित जल लेकर माँ भगवती के प्रथम पैर के अंगूठे, पुनः समस्त पैर धोएं। यहां पहले दाहिना, पुनः बायां पैर व्यवहार में लाना चाहिए। दोनों चरण धोते समय निम्न मंत्र का उच्चारण करें–

जिसकी भक्ति के लेश मात्र से
परमानंद सम्भव हो जाता है।
पाद्य अर्घ्य उस कूष्माण्डे को
करे, मन सुख पा जाता है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डायै नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

अर्घ्य–

कुशा दूर्वा तिल सर्वपयुत
यह अर्घ्य समर्पित करता हूं।
ग्रहण करें देवी कूष्माण्डा जी
तन-मन-धन अर्पित करता हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डायै नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

उपरोक्त मंत्र से दोनों हाथों को जल द्वारा प्रक्षालन करें।

आचमन–

कर्पूर सुवासित शीतल जल
जो स्वादु भरा आचमन हेतु।
हे कूष्मांडे माते ग्रहण करो,
कर दो किरपा हे जननि सेतु

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, आचमनीयं समर्पयामि।

इससे आचमन के लिए लौंग या लौंग के इत्र से युक्त जल अर्पित करें। पुनः अपने हाथ धो लें।

स्नान—निम्न मंत्र से जल द्वारा भगवती कूष्माण्डा को स्नान करायें—

गंगा का पावन अचरज भरा
तीर्थराज से भर लाया हूं।
स्नान हेतु माँ स्वीकारो
मैं अतिशय हरषाया हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कूष्माण्डायै नमः। स्नानार्थे जलं समर्पयामि॥

मधुपर्क—भगवती के चरणों में उर्द के बड़े या उर्द की दाल, दही, शहद, घी से युक्त मधुपर्क निम्न मंत्र द्वारा अर्पित करें—

दही थी शहद से युत
उड़दयुक्त तेरा भोजन ये।
करता है जग को मायामुक्त
मधुपर्क शोभित भोजन ये।।

ॐ भुर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः, मधुपर्कं समर्पयामि।
मधुपर्कान्ते आचमनीयं समर्पयामि भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः।

पहले मधुपर्क अर्पित करें, उसके बाद जल अर्पित करें।

पञ्चामृत—दूध, दही, गोघृत, बूरा तथा शहद—इन पांच अमृत वस्तुओं का समन्वय पञ्चामृत है। इनका एक साथ मिश्रण या अलग-अलग करके भगवती कूष्माण्डा को स्नान कराना चाहिए।

दूध स्नान—

घास-फूंस यव हरिता से
धेनु ने दूध पवित्र बनाया है।
अमृत तुल्य गोसुत सेवित यह
माँ दर तेरे आ चढ़ाया है।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डादेव्यै नमः पयः स्नानं समर्पयामि।

दूध से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

दधि स्नान—

धेनुदुग्ध दोहन करके,
स्वच्छ शुद्ध दधि बनाया है।
चन्द्रप्रभा की रश्मि इसमें,
कूष्माण्डे चरण तुम्हारे आया है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डा देव्यै नमः, दधिस्नानं समर्पयामि।

दहि से स्नान कराके पुनः जल से स्नान करायें।

घृत स्नान–

आग को यौवन देने वाला
द्विज देव बना जो गोघृत है।
शक्ति वर्धक गोघृत ये
कूष्माण्डे तुमको अर्पित है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डादेव्यै नमः घृतस्नानं समर्पयामि।
घी-स्नान के बाद जल से स्नान करायें।

मधु स्नान–

फूलों-फूलों से चुन-चुनकर,
मक्खी ने शहद बनाया है।
सुंदर स्वादिष्ट मधुर वरेण्य
स्नानार्थ तुम्हें यह आया है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डायै नमः मधुस्नानं समर्पयामि।
शहद से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

शर्करा स्नान–

गन्ने की ओटी पोनी से
मीठा-मीठा रस बरसा।
शर्करा बना कूष्माण्डा तुमको
अर्पण करने को मन तरसा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डायै नमः शर्करास्नानं समर्पयामि।
बूरा या शक्कर से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

गन्धोदक–इत्र (सैन्ट) या चंदन जल में डालकर भवगती को पुनः स्नान करायें–

इत्र चंदन मौलश्री युत
कस्तूरी गंध भरा है।
गंधोदक तुमको देकर
माँ तन-मन हरा-भरा है।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डादेव्यै नमः गंधोदकस्नानं समर्पयामि।
पुनः स्वच्छ वस्त्र से प्रोक्षण (पौंछना) करना चाहिए।

वस्त्रार्पण–निम्न मंत्र से स्वसुविधानुसार भगवती को वस्त्र अर्पण करें–

चित्र-विचित्र वर्णों से युत
वस्त्र तुम्हें अर्पण करता हूं।
हे मात कूष्माण्डे देवी
[illegible] समर्पित करता हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीगायत्रीदेव्यै नमः उपवस्त्रसहितं वस्त्रं समर्पयामि।

अलंकार–भगवती कूष्माण्डा को शृंगार के लिए अनेक वस्तुएं माता/बहिनें अर्पण करती हैं। नीचे कुछ वस्तुएं और उनके मंत्र दिए हैं उन्हें वे अपनी सुविधानुसार भगवती को अर्पण करें। स्मरण रहे प्रत्येक वस्तु के वाद जल अर्पित करें।

अलंकार (कंगन या चूड़ी)–

माणिक्य मुक्ता मणिखंडो से
सुनार ने इसे बनाया है।
सुंदर से सोने के कंगनों को
ये भक्त पहनाने आया है।।

कुण्डल–

पूनो के चाँद से गोल बने
माणिक्य खण्ड से शोभित हैं।
स्वर्णसूत्र से निर्मित ये
कूष्माण्डे तुमको अर्पित हैं।

अंगुद (बाजूबंद)–

जानु ग्रंथि तक फैली तेरी
बाहु पर अंकित करने को।
सुंदर चित्रित अंकित ये
अंकित तव धारण करने को।।

हार (माला)–

कल कंठ का भूषण बनने को
मणि-मानिक इसमें पिरोए हैं।
धारण करो माँ कूष्माण्डा
सुवासित जल बिच धोए हैं।।

अंगूठी–

हेममयी मनोहारी ये
मुदरिका मनमोहक प्यारी है।
स्वर्ण मणि के खंडों से
शोभित महिमा तेरी न्यारी है।

कौंधनी–

धरती धरती जिस तरह
शेषनाग की बनी मेखला।
कूष्माण्डा तुम भी धारण कर लो
स्वर्ण तन्तु की बनी शृंखला।।

नूपुर (घुंघरू)–

रुनझुन रुनझुन ध्वनि मरोहर।
पद पंकज में नूपुर के स्वर।।
कूष्माण्डा तुम देवि अति पावन।
बने हैं नूपुर स्वर के सावन।।
मातु हमारी जय जगदम्बे।
नूपुर लीजै है माँ अम्बे।।
रुनझुन रुनझुन करते तव घुंघरु।।
नाचे उठे शिव लेके डमरू।।

मुकुट–

स्वर्ण युत हीरक जडित मात तुम्हारे माथ।।
अर्पण करने आया हूं दीजो मेरा साथ।।

गंध–

श्री खंड चंदन-सा है तेरा रूप सलौना।
श्वेत चंदन को अर्पण करने आया तेरा छौना।।

कुमकुम–

कुमकुम कामिनी के मस्तक पर जो कुमकुम शोभित होता है।
उसको कूष्माण्डा अर्पण करे ये भक्त उपस्थित होता है।।

केशपाश संस्करण (कंघी)–

सूर्यकांति की किरणों सम
तेरे सुंदर बालों में।
चंपक वेला कनक सूत्र युत
गूंथने तेरे बालों में।
अगणित दांतों वाला माते,
तेरे दर पर कंघा लाया हूं।
इसके सम दोष दूर करो माँ
यह अर्ज साथ में लाया हूं।

सौवीराञ्जनम् (सुरमा)–

काजल ग्रहण करो कूष्माण्डे,
जो है शान्ति का कारक।
कर्पूर ज्योति से उत्पन्न हुआ
बना हमेशा ज्योतिवर्धक।।

सौभाग्यसूत्र (मंगल सूत्र)–

सौभाग्य सूत्र धारण कर देवी।
करें स्तुति हम नित ही तेरी।।
दुर्भागी को सौभागी करतीं।
हार स्वर्णमणि धारण करतीं।।

अत्तर (इत्र या सैन्ट/सुगंधित द्रव्य)–

चम्पक विल्व बेला चंदन।
इत्र सुगंध हो तुझको अर्पण।।
कूष्माण्ड रूपा जगदम्ब भवानी।
दिव्य सुगंध अर्पित करता अज्ञानी।।

सिन्दूर (सौभाग्य सिन्दूर)–

जपासुमन सम रक्त कांति का
सिंदूर तुम्हारे चरणों में।
अरुण रश्मि सम कांति ज्ञान की
दो, मैं आया तेरे शरणों में।।

राजोपचारान् (छत्र चढ़ाना)–

स्वर्णछत्र मस्तक पर सुहावा।।
धर्म वाता प्रनाशन पावा।।

चामरम् (चामर)–

चमरी पुच्छ निरमित यह चामर।
अधम निर्लज्ज हूं मैं अति पावर।।
धर्म सत्य भर दे चामुण्डा।
पाप राशि का करके खण्डा।।

तालवृत्तम् (पंखा)–

मध्य दण्ड से समन्वित जो
तालवृत्त का पंखा है।
बृहद-बृहद पंखों वाला
अर्पण करता पंखा है।।

दर्पणम् (शीशा)–

दर्पण बिम्ब का प्रतिबिम्ब बनें,
प्रतिविम्ब बने बिम्बन का दर्पण।
मम आत्मन बिम्ब को बिम्ब बने
हे कूष्माण्डे तुम्हें दर्पण अर्पण।।

गन्धलोशनम् (क्रीम)–

मृगनाभि को वासित कस्तूरि बनो
काश्मीरक केशर चूर्ण भयो।
अब कूष्माण्डा तव मस्तक पर
मकरंद गंध सो सुगंध भयो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डादेव्यै नमः भाले गन्धलोशनम् समर्पयामि॥

उपरोक्त सभी वस्तुएं महिला पूजक को उसी प्रकार अर्पण करनी चाहिएं जिस प्रकार वह स्वयं धारण करती हैं। समस्त शृंगारिक वस्तुएं अर्पण करने के बाद रोली से तिलक कर अक्षत (चावल) मस्तक पर लगायें/अर्पण करें।

पुष्प/पुष्पमाला–भगवती कूष्माण्डा को पहले मस्तक पर उसके बाद समस्त अंगों को पुष्पों से सजायें–

जपा करीर जाती अरु चंपक
कमल कुमोदिनी बेला की माला।
कहुं रक्त बने कहुं पीत सजे
इत रंग गुलाबी मनमोहक वाला।।
और सुलभ हुए जो कुसुम मंजरी
थाली भर-भर लाया हूं।
कुसुमों-सी महके बगिया मेरी
यही अरज मांगने आया हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवन्त्यै कूष्माण्डादेव्यै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि॥

धूपबत्ती–माँ भगवती कूष्माण्डा को अपने दाहिने हाथ को बायीं ओर ले जाकर पुनः ऊपर की ओर ले जाते हुए वृत्तक्रम में धूपबत्ती घुमाना चाहिए। घुमाते समय एक बार मुख पर, तीन बार मस्तक पर, तीन बार हृदय पर, चार बार चरणों में घुमाकर पांच या सात बार सम्पूर्ण प्रतिमा के चारों ओर घुमाना चाहिए। इसके बाद माँ के बायीं ओर घूपबत्ती स्थापित करनी चाहिए।

दीपक–जमीन या पटड़े पर सात्विक (卐) बनाकर उस पर कुछ चावल रखकर पहले दीपक को अन्यत्र जलायें फिर चावल के ऊपर रखें। फिर चावल, पुंष्प तथा चंदन के साथ दीपक का पूजन करें–

हे ज्योति पुंज दीपक तुम
देवी की पूजा के साक्षी हो।
पापों की गठरी को अंधकारसम
दूर करने के साक्षी हो।।

पुनः हाथ चावल लेकर हाथ जोड़ने की मुद्रा बनाकर भगवती को दीपदान करें।

सुंदर सुगम नरम कर्पासा।
योजित घृत वर्तिका सुहासा।।
ज्वलित दीप धारण कर माते।
हरो पाप मम लगते ताते।।

हाथ में रखे चावल दीपक को अर्पण करें तथा भगवती को हाथ जोड़कर पुष्प चढ़ायें, पुनः हाथ मार्जन करें।

धूप—गाय के गोबर से बने उपले को जलाकर माँ भगवती कूष्माण्डा का ध्यान करके घी में लौंग का जोड़ा भिगोकर अग्नि को अर्पित करें। (गाय का वह गोबर जो बिना छुए सूख जाता है उस सूखे गोबर के उबले को, जिसे आरना भी कहते हैं, लेकर धूप के लिए अति उत्तम होती है। इस भस्म का प्रयोग नजर दूर करने के लिए प्रयोग कर सकते हैं।) लौंग चढ़ाते समय भगवती कूष्माण्डा का ध्यान करते हुए **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै नमः** मंत्र से लौंग का जोड़ा चढ़ायें। पुनः निम्न मंत्र से माँ भगवती कूष्माण्डा को कूष्माण्डा (साबुत पेठा/काशीफल) या ऋतुफल अथवा अनार चढ़ायें। भगवती को अनार या ऋतुफल एक से अधिक और कूष्माण्डा एक या सुविधानुसार चढ़ाया जाना चाहिए।

इदं फलं मया देवि स्थापितं पुरस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिभवेज्जन्मनि जन्मनि॥

श्री जगदम्बायै कूष्माण्डायै नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि॥ (यहां ध्यान दें यदि व्रत नहीं रखा है तब पहले भोजन की थाली में मोहनी भोग लगायें तब फल अर्पित करना चाहिए।)

ताम्बूल—

कोमल पात पान सुहावा।
लौंग इलायची जातीफल पावा।।
ग्रहण करो जगदम्ब भवानी।
हे कूष्माण्डा माँ कल्याणी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कूष्माण्डादेव्यै नमः मुखवासार्थं एलालवङ्गादिभिर्युतं ताम्बूलं समर्पयामि।

इस मंत्र से इलायची, लौंग, सुपारी तथा जायफल के साथ पान निवेदित करें।

ध्यान—

वन्दे वांछित कामर्थे चन्द्रार्घकृत शेखराम्।
सिंहरूढ़ा अष्टभुजा कूष्माण्डा यशस्वनीम्॥
भास्वर भानु निभां अनाहत स्थितां चतुर्थ दुर्गा त्रिनेत्राम्।
कमण्डलु, चाप, बाण, पदमसुधाकलश, चक्र, गदा, जपवटीधराम्॥
पटाम्बर परिधानां कमनीयां मुदुहास्या नानालंकार भूषिताम्।

मंजीर कार केयूर किंकिणि रत्नकुण्डल मण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वंदनीचारु चिबुकां कांत कपोलां तुंग कुचाम्।
कोमलांगी स्मेरमुखी श्रीकंटि निम्ननाभि नितम्बनीम्॥

हाथ में राशि के अनुसार पुष्प लेकर (देखें शैलपुत्री पूजन) अथवा लाल पुष्प लेकर माँ भगवती कूष्माण्डा का उपरोक्त मंत्र से ध्यान करें।

कवच—पीली सरसों लेकर अपने चारों ओर डालते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें—

हंसरै मे शिरः पातु कूष्माण्डे भवनाशिनीम्।
हसलकरीं नेत्रव, हंसरौश्च ललाटकम॥
कौमारी पातु सर्वगात्रे, वाराही उत्तरे तथा,
पूर्व पातु वैष्णवी इन्द्राणी दक्षिण मम॥
दिग्विदिक्षु सर्वत्रेय कूं बीजं सर्वदावतु॥

कूष्माण्डा का जपनीय मंत्र—

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै नमः।

कूष्माण्डा गायत्री मंत्र—

ॐ कूष्माण्डायै विद्महे चामुण्डाय धीमीह। तन्नो भीमा प्रचोदयात्।

स्तोत्र—भगवती कूष्माण्डा का कम से कम एक माला जप करके निम्न स्तोत्र का पाठ कर ध्यान करें—

दुर्गतिनाशिनी त्वंहि दारिद्रादि विनाशनीम्।
जपंदा धनंदा कुष्माण्डे प्रणमाम्यहम्॥
जगतमाता जगतकत्री जगदाधार रूपणीम्।
चराचरेश्वरी कूष्माण्डे प्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यसुंदरी त्वंहि दुःख शोक निवारिणीम्।
परमानंदमयी, कूष्माण्डे प्रणमाम्यहम्॥

कूष्माण्डा के रूप में चतुर्थ कन्या का पूजन—कूष्माण्डा के रूप में चतुर्थ नवरात्र को या नवरात्र की अन्तिम तिथि को चतुर्थ कन्या के रूप में कूष्माण्डा देवी का पूजन किया जाता है। कूष्माण्डा को प्रचलित भाषा में चामड़ या चामुण्डा अथवा देवीमठी कहते हैं। कूष्माण्डा के लिए सात वर्ष की कन्या का पूजन किया जाता है। निम्न मंत्र से 'कूष्माण्डा' को भोज्य पदार्थ अर्पित करें—

चण्डवीरां चण्डमायां चण्ड-मुण्ड-प्रमञ्जनीम्।
पूजयामि सदा देवी चण्डिकां चण्डविक्रमाम्॥

भगवती चामुण्डा (कूष्माण्डा) आद्यादेवी हैं। ये क्षेत्र या निवास स्थल की देवी या ग्राम देवी अथवा वचन देवी कही जाती हैं। इनको गाय का दूध उतना ही प्रिय है जितना भैंस का। आज भी ग्रामीण पशु प्रसव के बाद प्रथम दूध इन्हीं देवी को अर्पित करके स्वयं ग्रहण करते हैं।

चामुण्डा देवी मंदिर

दुर्गा सप्तशती के पाठ में चामुण्डा देवी की वृहत् कथा है। सप्तशती के पंचम अध्याय से आरंभ होकर सप्तम अध्याय में चामुण्डा देवी की कथा समाप्त होती है। जब देवतागण शुम्भ और निशुम्भ के अत्याचारों से बहुत ही संतप्त हुए, तब वे देवी की प्रार्थना के निमित्त हिमलाय पर्वत पर पहुंचे। वहां पहुंचकर उन्होंने जगदम्बा की अनेक प्रकार से स्तुति की। उसी समय माता पार्वती गंगा-स्नान को जा रही थीं। देवताओं की करुण पुकार को सुनकर माता द्रवित हो गईं। उनके शरीर से एक अत्यंत सुंदरी देवी प्रकट हुई, जिनका नाम कौशिकी हुआ। कौशिकी के निकलते ही माता पार्वती का रंग काला हो गया। कौशिकी देवी ने देवताओं को आश्वासन दिया कि वे शुम्भ-निशुम्भ का अवश्य ही वध करेंगी। भगवती कौशिकी देवताओं के चले जाने पर वहीं एक शिला पर बैठ गईं। उसी समय शुम्भ-निशुम्भ के द्वारा भेजे गए दूत चण्ड-मुण्ड वहां आए और भगवती के सुंदर रूप के बारे में अपने स्वामी शुम्भ-निशुम्भ को सूचना दी। शुम्भ-निशुम्भ ने अपने दूत से देवी को यह सूचना भिजवाई कि वह उनसे परिणय-सूत्र में बंधना चाहता है, पर देवी ने इसे ठुकरा दिया। शुम्भ-निशुम्भ के सेनापति धूम्रलोचन ने अपनी सेना के साथ देवी को बलात् ले जाना चाहा, पर देवी ने उसकी सेना को भस्म कर दिया और धूम्रलोचन मारा गया। इसके बाद शुम्भ-निशुम्भ ने चंड-मुंड को देवी के साथ युद्ध करने को भेजा। अब अम्बिका के मस्तक से भयंकर रूप वाली कालिका प्रकट हुई। उन्होंने चण्ड-मुण्ड के सिरों का छेदन कर डाला। इसके बाद कालिका देवी ने भगवती अम्बिका देवी के सामने उन दोनों सिरों को प्रस्तुत किया। देवी इससे प्रसन्न हो गईं और कहा—

यस्माच्चण्डं च् मुण्डं गृहीत्वा त्व मुपागताः।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि॥

हे देवी! तुम चण्ड और मुण्ड नामक महादैत्यों का वध कर और उनके मस्तकों को लेकर मेरे समक्ष आई हो इसलिये जगत में तुम्हारी ख्याति चामुण्डा के नाम से होगी।

चामुण्ड देवी का यह पुनीत स्थान हिमालय पर्वत श्रेणी पर स्थित है। यह शक्तिपीठ जालंधर पीठांतर्गत 108 शक्ति पीठों में एक है। यह स्थान हिमाचल के कांगड़ा जिले के वाणगंगा नदी के तट पर स्थित है। इस सुंदर स्थान पर पहुंचने के लिए पठानकोट-बैजनाथ-पपरोला तक के रेलमार्ग से जगरीटो-बंगवां नामक स्टेशन पर उतरना पड़ता है, जहां से मला तक आकर पुनः पांच किलोमीटर बस से जाना होता है। पठानकोट से सीधी बसें कांगड़ा तक जाती हैं। कांगड़ा से पालमपुर और बैजनाथ-पपरोला तक सीधी बस सेवा है। इस बस से मला उतरकर धर्मशाला

की ओर जाने वाली सड़क पकड़कर 5 किलोमीटर चलकर चामुण्डा स्थान पहुंचा जा सकता है।

चामुण्डा देवी के मंदिर का निर्माण काल 700 वर्ष है। यह स्थान प्राचीन सिद्धपीठ रहा है। इस पावन माता के तीर्थ के पास अन्य दर्शनीय स्थल भी हैं।

आरती कूष्माण्डा देवी की

आरती करो श्री कूष्माण्डा की।
जगजननी माँ चामुण्डा की॥
कंचन थाल, कपूर की बाती।
जगम ज्योत करे दिन राती,
भक्तों की प्रेम दीवानी जी की॥आरती......
जो भी माँ के द्वारे आये।
पापी अधर्मी सबको तारे।
चरण पड़ो कल्याणी जी की॥आरती......
अष्टभुजा है, नयन विशाला।
लाल चुनर और लाल दुशाला,
मन में बसाओ, कात्यायनी जी की॥आरती......
ऋषि मुनि देव अप्सरा गायें।
हरि ब्रह्मा शिव शीश झुकायें,
विनती करो ब्रह्माणी जी की॥आरती......
महिषासुर मधुकैटभ मारे।
रक्तबीज को स्वर्ग सिधारे,
शरण लगो विज्ञानी जी की॥आरती......
प्रेम भाव से विनय सुनाओ
माँ के दर पर शीश झुकाओ
मांगों दया की भीख मात से
जगकल्याणी दयालु जी की।
आरती करो भवानी जी की॥

मंत्र प्रकरण—भगवती कूष्माण्डा चामुण्डा रूप में क्षेत्र की रक्षा करती हैं। इन्हें दूध अतिप्रिय है। अतः प्रत्येक मंत्र का जप करने से पूर्व बिना उबाला दूध विशेषतः भैंस का दूध लेकर स्नान कराना चाहिए। नीचे कुछ मंत्र दिए जा रहे हैं।

विपत्तिनाशक मंत्र—करोतु सा नः शुभ हेतुरीश्वरी
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

उक्त मंत्र को 108 बार बोलने से अचानक आई विपत्ति किनारा कर जाती है और मंगल शगुन होते हैं। प्रयोग में लाने से पूर्व इसे 51,000 का जप करके सिद्ध कर लेना चाहिए।

ऋद्धि-सिद्धिदायक प्रयोग—नवरात्रि काल में ऋद्धि-सिद्धि यंत्र को बाजोट पर पीले वस्त्र पर स्थापित करें तथा यंत्र के चारों ओर कुमकम से स्वास्तिक बनायें तत्पश्चात् यंत्र को स्वच्छ जल में स्नान कराकर तिलक करें और पहले दिन एक माला, दूसरे दिन दो माला, तीसरे दिन तीन माला—इस प्रकार निम्नलिखित मंत्र का पाठ करें—

ॐ पद्मावती पद्मनेत्रे लक्ष्मीदायिनी सर्वकार्य सिद्धि करि करि ॐ ह्रीं श्रीं पद्मावत्यै नमः॥

शत्रु-बुद्धि विनाशक मंत्र—यदि आप शत्रु की बुद्धि का विनाश करना चाहते हैं तो हकीक के पत्थर पर शत्रु का नाम सिन्दूर से या कुंकुम से लिखकर 21 बार मंत्र पढ़कर पत्थर पर फूंक मारें। शत्रु की बुद्धि भ्रष्ट हो जायेगी।

ॐ नमो भगवते शत्रुणां बुद्धि स्तम्भमं कुरु-कुरु स्वाहा।

प्रयोग करने से पूर्व मंत्र को चतुर्थी से त्रयोदशी तक प्रतिदिन 21 माला जप करके सिद्ध कर लें।

आकर्षण प्रयोग—नवरात्र में चतुर्थी को या नवरात्र के किसी रविवार की शाम, सूर्यास्त के समय अपनी सबसे छोटी उंगली से रक्त निकालकर कनेर की कलम से भोजपत्र पर उस व्यक्ति का नाम लिखें जिसे आकर्षित करना चाहते हों इसके बाद नीचे यह मंत्र लिखें—

ॐ नमो वैतालाय आदि पुरुषाय अमुकं आकर्षण कुरु-कुरु सवाहा।

व्यावसायिक बंधन-मुक्ति का मंत्र—नवरात्र के प्रथम या चतुर्थ दिन चमेली के तेल का दीपक जलाकर ऊनी आसन पर बैठकर तुलसी की माला से नौ दिन तक 54 माला का जप करें—

ॐ कीली कीली स्वाहा॥

अन्तिम दिन दीपक बुझाकर उसका तेल किसी डिब्बी में बंद कर व्यावसायिक प्रतिष्ठान में स्थापित करके प्रतिदिन पूजन करें—मनोकामना पूर्ण होगी।

धनवर्षा मंत्र—नवरात्र की चमुर्थी में पूजागृह में देवी कूष्माण्डा की मूर्ति अथवा चित्र स्थापित करें, पश्चात् 108 बार निम्न मंत्र का पाठ करें—

**पद्मासने पद् अरु पद्मक्षि पद्म सम्मवे।
तन्मे भजसि पद्माक्षि, येन सौख्यं लभामहे॥
अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने।
धनं में जुषतां देवि सर्वकामांश्च देहि मे।**

तीन हकीक पत्थर, तीन मोती, शंख एवम् चार गोमती चक्र को एक तांबे के सिक्के के साथ बांधकर पूजास्थल में रखकर पाठ करें।

धन-धन्य हेतु अन्नपूर्णा प्रयोग—धन-धान्य से परिपूर्णता प्रदान करने वाली अन्नपूर्णा देवी की साधना इस प्रकार करें—

कुशासन पर उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठें। बाजोट (तख्त) पर 'धनदा यंत्र' स्थापित करके पूर्ववर्णित विधि से पूजन करें, तत्पश्चात् दीपक प्रज्जवलित करके इस मंत्र का पाठ करें—

ॐ ह्रीं नमो भगवती अन्नपूर्णे स्वाहा॥

शत्रु निवारण साधना—शत्रुओं का संहार करने वाली श्री माता कालिका देवी मंत्र का पाठ करें—

ॐ ऐं ह्रीं शत्रुनाशाय ह्रीं ऐं ॐ फट्॥

पूजन के लिए आवश्यक सामग्री—एक हत्थाजोड़ी, एक मोती, शंख, सात गोमती चक्र, ग्यारह रक्त बूंजा के बीज पूजन से पूर्व एकत्रित कर लें।

शनि-दोष निवारण प्रयोग—शनि के प्रकोप से कौन बच सका है? देवता, दानव, मानव शनि की टेढ़ी दृष्टि से मुसीबतों के जाल में घिर जाते हैं—शनि की कुदृष्टि से पांडव वनवासी हुए। पुरुषोत्तम राम को वनवास जाना हुआ। यदि शनि ग्रह की अशुभ दशा से आप प्रभावित हैं तो नवरात्र स्थापना दिवस से नवमी तक नीचे लिखे मंत्र का पाठ करें—

ॐ प्रां प्रीं प्रौं शं शनये नमः॥

मंत्र पाठ करने से पहले पूजन करें। पूजन करने के लिए एक लकड़ी की चौकी पर उड़द का ढेर रखें और चुटकीभर सिंदूर छिड़कें और शनि यंत्र स्थापित करके सरसों के तेल का दीप प्रज्जवलित करें, तत्पश्चात् कंबल का आसन लगाकर शनिमाला से मंत्र का जाप करें। पाठ पूर्ण कर दशमी के दिन समस्त सामग्री काले कपड़े में लपेटकर तिराहे (तीन रास्तों वाला चौपला) पर रख आयें।

कूष्माण्डा के वाहन का रहस्य

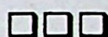
कूष्माण्डा वैष्णवी चतुर्थ शक्ति के रूप में विराजमान हैं। जो चैतन्य सत्ता स्थिति शक्ति से अभिमान करे वही विष्णु है। अधिष्ठान चैतन्य का आश्रय ले जो शक्ति जगत का पालन करे वही शक्ति वैष्णवी हैं। इनका वाहन गरुड़ है।

श्रीमद्भागवत के द्वादश स्कन्ध में लिखा है—**'त्रिवृद्वेदः सुपर्णस्तु यज्ञं वहति पूरुषम्'** त्रिवृत् वेदरूपी गरुड़ यज्ञपुरुष विष्णु को ढोता है। इस गरुड़ पक्षी के ज्ञान और कर्म—ये दो पांख हैं। **योगवासिष्ठ** में लिखा है—

उभाभ्यामेव पक्षाभ्यां यथा खे पक्षिणां गतिः।
तथैव ज्ञानकर्मभ्यां जायते परमं पदम्॥
केवलात् कर्मणो ज्ञानान्नहि मोक्षोऽभिजायते।
किन्तु ताभ्यां भवेन्मोक्षः साधनं तूभयं विदुः॥

अर्थात् जिस प्रकार पक्षीगण दोनों पांखों के सहारे आकाश में भ्रमण करने में समर्थ होते हैं उसी प्रकार साधक ज्ञान एवं कर्म-साधन से विष्णु के परम पद को पाते हैं।

जीव जब वेदोक्त कर्मकाण्ड के ज्ञानमय अनुष्ठानों में तत्पर होता है तब वह पक्षी होता है। वेदप्रतिपादित कर्म और ज्ञान—ये ही दो गरुड़ के पक्ष हैं। इसके अतिरिक्त गरुड़ का एक और धर्म 'पन्नगाशनत्व' है। कर्मसमूह जितना ही ज्ञानमय होता है उतना ही संसारासक्त देहात्मबोधरूपी कुटिलगति सर्प विलय को पाता है, यही इस गरुड़ का भक्ष्य सर्प है। मनुष्य जब इस प्रकार गरुड़ भाव का सर्वतोभावेन लाभ करता है तब देख पाता है कि—जगद्व्यापक वैष्णवी शक्ति उस पर ही आसीन हैं। इस प्रकार वैष्णवी शक्ति का गरुड़ वाहन भी निरतिशय सारदें गर्भित ही है।



पञ्चमं भगवती स्कन्दमाता सरस्वती

ज्ञान, बुद्धि प्रतिभा, स्मरण-शक्ति, चेतना, विवेक, सात्विकता, औचित्य बोध, वाणी, भाषण-शक्ति, संगीत, स्वर, विद्या, प्रत्युत्पन्नमतित्व, लेखन, काव्य, सृजन, तर्कशक्ति, धारणाशक्ति, विचारशक्ति, अनुसंधान-क्षमता, कल्पना और संवेदना जैसे गुणों की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को सृष्टिकर्त्ता ब्रह्मा की शक्ति (पत्नी) माना गया है। वस्तुतः ये संसार की चेतना शक्ति की स्वामिनी हैं, यही स्कन्दमाता हैं। स्कन्दमाता अर्थात् सरस्वती सदैव अपने चरणों में महामूर्ख, विवेकहीन, समाज से तिरस्कृत मनुष्यों को स्थान देती हैं। मैया के चरणों में जो प्राणी एक बार भक्तिपूर्वक अपना मस्तक रख दे उसे दिव्य ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। स्कन्दमाता की कृपादृष्टि से महामूढ़ कालिदास महाज्ञानी कहलाये। उन्होंने कुमार सम्भवम्, मेघदूतम् तथा अभिज्ञान शाकुन्तलम् जैसे ग्रन्थों की रचना की।

कालिदास जी के सम्बन्ध में कथा है कि वे वृक्ष की जिस डाली पर बैठे थे उसी डाली (शाखा) को कुल्हाड़े से काट रहे थे। उनके कार्य को देखकर विद्योत्तमा से शास्त्रार्थ में हारकर निराश लौट रहे पंडितों ने अपने मन में विचार किया कि इससे बड़ा मूर्ख सम्पूर्ण सृष्टि में कोई अन्य नहीं होगा। शास्त्रार्थ में विद्योत्तमा से हारकर तिरस्कृत होने के कारण वे पंडित स्वयं को अपमानित हुआ समझ रहे थे। विद्योत्तमा अतीव सुन्दरी थी और उसने प्रण किया था कि जो मुझे शास्त्रार्थ में पराजित कर देगा उसी से विवाह करूंगी।

दूर-दूर से ज्ञानी विद्वान उससे शास्त्रार्थ करने आये किन्तु उसके ज्ञान के कारण लज्जा को प्राप्त हुए। लज्जाभिभूत होकर उन्होंने परस्पर विचार किया, किसी प्रकार इस अभिमानी विद्योत्तमा का विवाह किसी महामूर्ख से करा दिया जाये जिससे यह जीवन भर दुःखी रहे।

उन पण्डितों ने पेड़ की डाल काट रहे कालिदास को नीचे बुलाया और अच्छे वस्त्र पहनाकर राजसभा में ले गये। जहां विद्योत्तमा आकर शास्त्रार्थ करती थी। पंडितों ने मार्ग में ही कालिदास को भली प्रकार समझा दिया था कि विद्योत्तमा कुछ भी पूछे, कोई भी प्रश्न करे तुम मुंह बंद रखना अर्थात् तुम्हें कुछ नहीं बोलना है।

तत्पश्चात् जब शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ तो पण्डितों ने राजसभा में कालिदास का परिचय अपने गुरुजी के रूप में कराया तथा बताया कि उन्होंने मौन व्रत धारण

कर रखा है। अतः तुम जो भी प्रश्न करना चाहती हो सांकेतिक भाषा में पूछ सकती हैं। यह जानकर कि सम्मुख बैठा विद्वान मौन धारण किए हुए है तो विद्योत्तमा ने एक उंगली उठाई। उसे क्या मालूम था कि सामने बैठा व्यक्ति महामूर्ख है। कालिदास ने अपनी ओर विद्योत्तमा की उंगली उठी देखकर मन में विचार किया कि यह मेरी एक आंख फोड़ना चाहती है। तब उन्होंने अपनी दो उंगलियों को उठाते हुए मूक भाषा में संकेत भाषा में कहा—तू मेरी एक आंख फोड़ेगी तो मैं तेरी दोनों फोड़ दूंगा। जिसका अर्थ पण्डितों ने समझाया—"हे राजकुमारी! आपने एक अंगुली उठाकर यह कहा कि ईश्वर एक है जिसका उत्तर गुरुदेव ने दो अंगुली उठाकर दिया—इनके दोनों अंगुली उठाने का अर्थ यह है कि ईश्वर और जीव दो हैं। इन दोनों के बिना सृष्टि सम्भव नहीं है।"

तब विद्योत्तमा ने पांचों अंगुलियां उठायीं। कालीदास ने सोचा कि यह तुझे थप्पड़ मारना चाहती है। उन्होंने घूंसा दिखाया कि तू मुझे थप्पड़ मारेगी तो मैं तेरा घूंसे से मुंह तोड़ दूंगा। जिसका अर्थ ब्राह्मणों ने बताया कि तुमने पांचों अंगुली उठाकर यह संकेत किया कि तत्व पांच हैं (पञ्चतत्व—धरती, आग, पानी, वायु और आकाश) जिसका उत्तर हमारे गुरुदेव ने मुट्ठी बांधकर दिया कि पांचों तत्व अलग-अलग अर्थहीन हैं। जब ये पांचों एक साथ आपस में मिल जाते हैं तब शरीर का निर्माण होता है। सृष्टि का सृजन होता है। इस प्रकार से शास्त्रार्थ चलता रहा और वहां बैठे ब्राह्मण उत्तर देते रहे। एक समय ऐसा आया कि विद्योत्तमा को उनसे विवाह करना पड़ा।

समय के साथ विद्योत्तमा को मालूम हुआ कि कपट से उसे महामूर्ख पति मिला है। एक दिन दोनों अपने आवास पर वार्तालाप कर रहे थे। उसी समय एक ऊंट उधर से गुजरा। जिसे देखकर कालिदास उट्र-उट्र कहने लगे। 'उष्ट्र' (संस्कृतभाषा) को उट् कहते देखा तो विद्योत्तमा उसी क्षण जान गयी कि मेरा पति महामूर्ख है। उसने कालिदास को बहुत धिक्कारा। पत्नी से प्रताड़ित कालिदास को महान दुःख हुआ। उनका मन आत्मग्लानि से भर उठा। वे उसी क्षण भवन से बाहर निकले और देवी के मन्दिर में जा पहुंचे। माता के चरणों में शीश झुकाकर विनय करते रहे—हे माता! मैं महामूर्ख हूं। मूर्ख होने के कारण ही आज मुझे स्त्री से अपमानित होना पड़ा है। मैं आपकी पूजा-अर्चना भी करना नहीं जानता। क्या करूं? कैसे करूं?

भक्तवत्सला माँ! करुणामयी माँ जो सकल संसार की माँ हैं। एक पुत्र की पुकार कैसे न सुनतीं। कालिदास की विह्लता को देखकर माँ ने अपनी कृपादृष्टि से कालिदास के अन्दर दिव्य ज्ञान की ज्योति जगा दी और वही कालिदास, महाकवि कालिदास हुए जिनका नाम अमर है।

बौधिक क्षेत्र में कार्यशीलजन उनका स्मरण-चिंतन और स्तवन-पूजा करते रहते हैं। कवियों, गद्य-पद्य के क्षेत्र में सक्रिय (साहित्य साधकों) की वे माता, प्रेरक, पोषक और रक्षक हैं। उनकी उपेक्षा करके कोई व्यक्ति बौद्धिक क्षेत्र में अग्रसर होने की कल्पना करे, तो उसका मूर्खतापूर्ण दंभ ही कहा जाएगा।

परमात्मा एक ही है उसी परमात्मा की अनेक शक्तियों में से एक स्कन्दमाता अर्थात् सरस्वती हैं। हम जानते हैं कि सभी देवी-देवता ज्ञान, योग, ऐश्वर्य एवं सिद्धियों से संपन्न होते हैं, तथापि 'शब्द ब्रह्म' में समाहित ज्ञानात्मिका शक्ति यानी वाग्देवी सरस्वती साक्षात ब्रह्मस्वरूपिणी हैं। यह देवी महालक्ष्मी एवं महाकाली से भिन्न नहीं हैं, अतः शास्त्रों में इनका मुख्य नाम 'श्री' और अपर नाम 'श्री पंचमी' है। महाकवि निराला ने सरस्वती के रूप का दर्शन किया था, वे कहते हैं–

विश्व-रूपिणी तुम हो, तुम्हें मूर्ति में रचकर।
पूजा की बसंत के दिन दीनता-विकच कर॥

प्रतीकमयी भारतीय संस्कृति में देवी सरस्वती विद्या, विज्ञान एवं कला आदि की प्रतीक हैं एवं प्रतीक हैं प्रकृति के सत्व गुण की।

सरस्वती संज्ञा की व्युत्पत्ति

संस्कृत शब्द 'सर' से सरस्वती संज्ञा की व्युत्पत्ति हुई है। 'सर' का अर्थ है गति। अतः सरस्वती का अर्थ हुआ, जो गतिशील है, प्रवाहयुक्त है। इसलिए जल के प्रवाह से युक्त नदी के अर्थ में जहां सरस्वती का प्रयोग किया गया है, वहां दूसरी ओर वाणी के प्रवाह की अधिष्ठात्री के लिए इस शब्द का प्रयोग किया गया है। आध्यात्मिक दृष्टि से भगवती सरस्वती को निष्क्रिय ब्रह्मा का सक्रिय रूप माना जाता है। इस प्रकार भारतीय वाङ्मय एवं हिन्दू धार्मिक ग्रंथों में 'सरस्वती' शब्द का व्यवहार दो अर्थों में किया जाता है—एक नदी के अर्थ में और दूसरा देवी के अर्थ में। किसी भयंकर प्रलयंकारी प्राकृतिक उथल-पुथल के फलस्वरूप सरस्वती नदी का लोप हो गया, अतः सरस्वती की नदी के रूप में आराधना कालांतर में नहीं रही और विद्या की देवी के रूप में पूजित होने लगी। संप्रति सरस्वती वाग्देवी के रूप में एक लोकप्रिय आराधना है।

कहते हैं कि शुंभ और निशुंभ दैत्यों के अत्याचारों से पीड़ित होकर देवताओं ने हिमालय पर जाकर देवी भगवती की अनेक प्रकार से स्तुति की। देवताओं की प्रार्थना पर भगवती पार्वती ने प्रकट होकर उन्हें दर्शन दिए। उसी समय पार्वती के शरीर कोष में सरस्वती देवी प्रकट हुईं। तब उनका नाम कौशिकी प्रसिद्ध हुआ। देवी भागवत में आया है कि सरस्वती देवी का प्राकट्य भगवान श्रीकृष्ण की जिह्वा के अग्रभाग से हुआ था।

स्कन्दमाता सरस्वती पूजन

आचमन, प्राणायाम शिखाबंधन, मंगलाचरण करने के बाद एक सफेद, लाल वस्त्र पटड़े या चौकी पर बिछाकर चावल से कमलाकृति का निर्माण करें। उस पर मोरपंख को चन्द्रभाग रखकर स्कन्दमाता सरस्वती का आवाहन करें–

आवाहन–

शरद रितु की चन्द्रप्रभा ज्यों धरती तल पर शोभा देती है।
मात शारदे तेरी आभा ज्ञान की ज्योति भर देती है।
सदा-सर्वदा सन्निधि रहना मैं शरण में तेरी आया हूं।
स्कन्दमाते सन्निधि भर यही कामना लाया हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः। सरस्वतीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च॥ इस मंत्र का उच्चारण कर सरस्वती के चरणों में श्वेत पुष्प अर्पण करें।

आसन–

अनेक रत्नों नाना मणियों से
बना तेरा आसन लाया।
श्वेत सूत्र से बना कपास का
वर्ण तुम्हारा सा पाया।।

श्री जगदम्बायै स्कन्दमात्रे नमः आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि। आसन स्थान पर माँ भगवती के चरणों के पास पुष्प अर्पित करें।

पाद्य–निम्न मंत्र से भगवती स्कंदमाता के चरणों को धुलायें–

गंगा सागर नर्मदा जमुना
रेवा गंडकी सरस्वती।
कावेरी कृष्णा सरयू तट से
जल लाया हे भगवती।।
इस परम सम्मीलित जल से
मैं चरण तुम्हारे धोता हूं।
पद्यार्घ ग्रहण करो शारदे
चरण पखार खुश होता हूं।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमात्रे नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥

अर्घ्य–

गंध सुवासित सुमनों का
अर्घ्य समर्पित जल है ये।
अक्षत सम्पादित जल को लेकर
दूर करो मन का मल है ये।।

श्री भगवत्यै स्कन्दमात्रे नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। इस मंत्र से भगवती स्कन्दमाता सरस्वती के हाथों में जल डालकर हाथ धुलवायें।

आचमन–

स्वादु सुशीतल सुगंध भरा,
कर्पूर सुवासित ये पानी।
स्कन्दमाता तुम्हें समर्पित
मात शारदे वरदानी।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमात्रे नमः। आचमनं समर्पयामि॥

स्नान–

नीरज का जीवन आधार है जो
ऐसा सुवासित जल मैं लाया हूं।
मात स्कंदा स्नान करो
बस यही कामना लाया हूं।

इस मंत्र से देवी सरस्वती को सुगंधित जल से स्नान करायें।

पञ्चामृत–दूध, दही, घी, बूरा और शहद–इन पांचों अमृत रसों से बने पंचामृत से स्नान करायें।

भगवती स्कन्दमाता को पंचामृत दो विधि से कराया जाता है। दोनों विधि नीचे दी जा रही हैं–

प्रथम विधि–इसमें प्रत्येक वस्तु का अलग-अलग मंत्र से स्नान होता है और प्रत्येक स्नान के बाद **'ॐ सरस्वत्यै नमः स्नानार्थे जलं समर्पयामि'** कहकर जल से स्नान कराया जाता है–

दूध स्नान (दूध से स्नान)–

कामधेनु से उत्पन्न हुआ सबका जो जीवनरक्षक है।
दूध से स्नान करो वीणा तू ही मेरी संरक्षक है।।
ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः। पयःस्नानं समर्पयामि॥

दधिस्नान (दही से स्नान)–

शशीप्रभा से मधुर हुआ
मधुर-मधुर ये गोरस।
माँ स्कंदे मधुर दधि
अर्पण तुमको है अब बस।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमातादेव्यै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि॥

घृत स्नान (घी से स्नान)–

सभी जनों के संतोष का कारक
नवनीत बना नवनीत बना।।
स्नानार्थ लाया नूतन घृत
परम पुनीत बना नवनीत घना।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः। घृतस्नानं समर्पयामि॥

मधु स्नान–

फूलों-फूलों से चुन-चुनकर
मकरंद एकत्र किया उसने।
मकरंद बना मधुर मधु
मन मधुर हो मेरे अपने।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमात्रे नमः। मधुस्नानं समर्पयामि॥

शर्करा स्नान (बूरा से स्नान)–

दिव्य स्नान हेतु मात स्कन्दे
शुद्ध शर्करा लाया हूं।
इसमें चूक्षुरस है देवि
पा तुम्हें मैं हर्षाया हूं।

श्री स्कन्दमात्रे नमः। षर्करास्नानं समर्पयामि। (भगवती स्कन्दमाता को बूरा से स्नान करायें।)

आलोक–माँ भगवती को पंचामृत एक पात्र में मिलाकर इस मंत्र से भी स्नान कराया जा सकता है–

पञ्चामृत स्नान–

दही, दूध, घी, अरु मक्खन।
शक्कर करते मधु भी अर्पण।।
करो स्नान मात स्कंदा।
तुम्हीं शारदे जग की अंबा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः पञ्चामृतं समर्पयामि।

गन्धोदक स्नान–

मलयाचल के सुंदर वन में
चंदन ने है जनम लिया।
कर सुवासित गंगाजल में
शारदे अर्पण तुम्हें किया।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः, गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (भगवती स्कन्दमाता को गन्धोदक से स्नान करायें।)

शुद्धोदक स्नान–

गंगा, यमुना, कृष्णा, नर्मदा, देवी, गोदावरी, सरस्वती।
सरयू इन सप्त नदियों का जल अर्पित है सरस्वती।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः, शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (शुद्ध जल से स्नान करायें।)

वस्त्र–

लज्जाशील के जो रक्षक
ये वस्त्र तुम्हें समर्पित हों।
देहालंकरण से पंचभूत
ये मात शारदे अर्पित हों।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, वस्त्रं समर्पयामि। (वस्त्र समर्पित करें।)

आचमन–वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दें।)

उपवस्त्र–

जिस भाव के कारण शास्त्रोक्त
कर्म सिद्ध हो जाते हैं।
ये सर्वकर्मोपकारक कपड़े
स्वयं सिद्ध हो जाते हैं।
भाव की रसगंगा में ये
वस्त्र सुवासित है माते।
उपवस्त्रों को ग्रहण करो
आया तेरे दर माते।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः, उपवस्त्रं (उपवस्त्राभावे रक्तसूत्रम् समर्पयामि)। (उपवस्त्र समर्पित करें।)

आचमन–उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दें।)

यज्ञोपवीत–

पंचभूत यज्ञों-सा पवित्र
यज्ञोपवीत है पावन ये।
त्रिसूत्र से त्रिसूत्र बना
पुनः त्रिसूत्र का शासन ये।
ब्रह्म रुद्र की ग्रंथि इसमें
दामोदर भी शोभा पाते हैं।
सूत कपास से बना हुआ
मातु तुम्हें चढ़ाते हैं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। (यज्ञोपवीत समर्पित करें।)

आचमन–यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।
(आचमन के लिये जल दें।)

श्रीखण्ड चंदन-सा है तेरा रूप सलौना।
तेरा रंग-सा धवल बना लाया तेरा छौना।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

(चन्दन अर्पित करें।)

अक्षत–

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः, अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ायें।)

पुष्पमाला–

डाली-डाली से सुमनों को ज्यों अलि पराग चुन लेता है।
उसी तरह चुने कुसुमों को यह भक्त चयनित कर लेता है।।
कोमल किसलय से पुष्पों की माला एक बनाई है।
ज्ञान-दायिनी स्कंत माते अब तेरी शोभा पाई है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महासरस्वत्यै नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

इस मंत्र से माँ भगवती सरस्वती को सफेद पुष्पों की माला प्रदान करें।

कुमकुम–

जाती के पुष्पों-सा रक्त रंग मुख कान्ति को बढ़ाता है।
कुमकुम नाम दिया जिसने यह भक्त उसे चढ़ाता है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीसरस्वतीदेव्यै नमः, भाले कुङ्कुमं समर्पयामि।

सिन्दूर–

कोई अरुण किरण-सा इसे माने
किसी को जपासुमन-सा लगता है।
स्कन्दमाते सौभागी बना
सिंदूर तव भाल-सा लगता है।।

श्रीजगदम्बायै सरस्वत्यै नमः, सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर चढ़ायें।)

कज्जल (काजल)–

काजल ग्रहण करो शारदे जो है शांति का कारक।
उत्पन्न हुआ कर्पूर ज्योति से बना हमेशा ज्योतिवर्धक।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमाता दिव्यै नमः, कज्जलं समर्पयामि। (काजल चढ़ायें।)

दूर्वांकुर–

कान्तमणि की सी प्रभा दूर्वा से
पूजा करता हूं सरस्वती।
चरणों में तेरे अर्पित है।
वीणावादनी माँ भगवती।।

श्रीजगदम्बायै सरस्वतीदेव्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूब चढ़ायें।)

विल्व पत्र–

त्रिदल त्रिगुणाधार बने
त्रिनेत्र बने त्रिआयुध से।
तीनों जन्मनें का पाप हरें
विल्व दल बने ये आयुध से।

श्रीजगदम्बायै शारदायै नमः। विल्वपत्रं समर्पयामि॥ (विल्वपत्र चढायें)

आभूषण–

हार, कंगन, केयूर, मेखला
कुण्डल दर ले आया हूं।
स्कन्दमाते धारण कीजै
यही कामना लाया हूं।।

ॐ भगवती शारदायै नमः, नाना भूषणान् समर्पयामि।

इस मंत्र का उच्चारण करते हुए समस्त आभूषण अंग विशेष के अनुसार धारण करायें। नीचे कुछ दूसरे मंत्र दिए जा रहे हैं जो किसी आभूषण विशेष के लिए उपयुक्त हैं। उनको उसी मंत्र के अनुरूप अर्पण करें।

अंगुलीय–

प्रबाल गोमेद से रत्नों की
स्वर्णमयी बनी अंगूठी है।
स्कन्दा देवी ग्रहण करो
दिव्यांग रूपा यह अनूठी है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै स्कन्दमात्रे नमः, करयोंगुलिमुद्रिकां समर्पयामि।

इस मंत्र में भगवती स्कन्दमाता को अंगूठी पहनायें।

कटिभूषण–

कांचन शुभ्र हारक निर्मित
त्रैलोक्य विजित ये कटिभूषण।
स्कन्दा देवी ग्रहण करो
दूर करो मन के खर-दूषण।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै स्कन्दमात्रे नमः कटिदेशे काञ्चीं समर्पयामि। इस मंत्र से भगवती स्कन्दमाता को करधनी पहनायें।

नूपुर–

सुसुन्दर हण्रक से निर्मित
तेरे पैरों की शोभा पाते हैं।
नूपुर ग्रहण करो वीणा
दर तेरे लेकर आते हैं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भवान्यै श्री स्कन्दमात्रे नमः, पादयोः नूपुर समर्पयामि। इस मंत्र से भगवती स्कन्दमाता को पायजेब या घुंघरू पहनायें।

पादुकार्पण–

नवरत्न युत समर्पित हो!
ये पादुकाएं हे जगदम्बे।
तव चरणों की बस धूलि मिले
हंसवासिनी हे अम्बे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै स्कन्दमात्रे नमः, चरणयोः पादुके समर्पयामि। माँ भगवती स्कन्दमाता को पादुका अर्पित करें।

पुष्प–माँ भगवती शारदा को वेला या सफेद पुष्प अतिप्रिय है, उन्हें निम्न मंत्र से पुष्प अर्पित करें–

नाना वर्णों से युत सुमनों को
तेरे चरणों में चढ़ाने आया हूं।
जपा, करीर श्वेत कमल कुमोदिनी
वेला तुझको लाया हूं।।
सुमनों-सा खिले ये घर मेरा
सबके सुमन भी हरषायें।
कोमल-सी कलियां घर बेटी हों
उन्हीं लखि-लखि दम्पती हरषायें।।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः, पुष्पाणि समर्पयामि।

अक्षत–

माते सुवासित पुष्पों से
इत्र द्रव्य बना है सुन्दर-सा।
बेला कुसुम अक चमेली सुमनों से
सुवासित हो घर सुमनों-सा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै सरस्वतत्यै नमः, अङ्गेषु विलेपनार्थं अक्षतं समर्पयामि। इससे स्कन्दमाता को अक्षत चढ़ाएं।

धूपबत्ती–

दस अंगों से रंजित धूप बनी।
विघ्न विनाशक यह धूप घनी।।
शारदा तव अर्पण करने को
धूप बनी यह नव धूप बनी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै स्कन्दमात्रे नमः, धूपं निवेदयामि।

भगवती स्कन्दमाता को अपने दाहिने हाथ को बायीं ओर ले जाकर पुनः ऊपर की ओर ले जाते हुए वृत्तक्रम में धूपबत्ती उपरोक्त मंत्र उच्चारण करते हुए घुमायें तथा अंत में प्रतिमा के बायीं ओर स्थापित कर दें।

धूप—गाय के गोबर या कण्डा को जलाकर माँ भगवती स्कन्दमाता का ध्यान करते हुए घी में लौंग का जोड़ा भिगोकर **ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॐ स्कन्दमातेति स्वाहा**। इस मंत्र से अग्नि में चढ़ायें।

दीप—

तीनों लोकों के अंधकार को
जैसे दीपक हर लेता है।
वैसे ही स्कन्दा दूर करो
अज्ञान तम को ये कहता है।

ॐ भूर्भुवः स्वः स्कन्दमात्रे नमः। आरार्त्तिक्यं समर्पयामि॥ इस मंत्र से हाथ में पुष्प लेकर स्कन्दमाता का ध्यान कर दीपक के पास पुष्प अर्पित करें। पुनः हाथ धो लें।

नैवेद्य—

खोवा पनीर अन्य सुस्वादु चीजों
से नाना प्रकार का भोजन ये।
दधि दूध खीर अरु हलुआ
ये सब समर्पित भोजन ये।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमात्रे नमः। नैवेद्यं निवेदयामि। (नैवेद्य निवेदित करें।)

आचमनीय आदि—**नैवेद्यान्ते ध्यानमाचमनीयं जलमुत्तरापोऽशनं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि॥**

इस मंत्र से पूर्व तुलसी मंजरी सहित तुलसीदल अर्पित करें। फिर मंत्र बोलें। मंत्र के बाद सात बार जल भूमि पर छोड़ें या नैवेद्य के कोर लेकर अग्नि को समर्पित करें—

ॐ अमृतोपस्तरणमसि स्वाहा
ॐ प्राणाय स्वाहा
ॐ अपानाय स्वाहा
ॐ समानाय स्वाहा
ॐ उदानाय स्वाहा
ॐ व्यानाय स्वाहा
ॐ अमृतापिधा नमसि स्वाहा।

ऋतुफल—

मौसम और ऋतुओं ने
जो फल जग को प्रदान किये।
लेकर उनकी तुच्छ भेंट
स्कन्दा तुम्हीं को दान किये।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमात्रे नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि॥ (ऋतुफल समर्पण करें।)

ताम्बूल–

नागवल्ली के पावन पत्रों में
लौंग, इलायची को लेकर
पूगीफल को लेकर देवी
संतुष्ट होऊं तुझको देकर।।

श्रीजगदम्बायै स्कन्दमात्रे नमः। ताम्बूलं समर्पयामि॥ (इलायची, लौंग, पूंगीफल के साथ पान निवेदित करें।)

ध्यान (एक)–

सरस्वतीं मया दृष्ट्वा वीणा पुस्तक धारिणीं।
हंसवाहनसंयुक्ता विद्यादानं करोतु मे॥
तरुणशकलमिन्दो विभ्रती शुभ्रकान्ति, कुचभरनमितांगी
सन्निषण्णी सिताब्जै।
निजकरकमलोद्यल्लेखनीं पुस्तकश्री, सकलविभव
सिद्धयै पातु वाग्देवता नः॥
घण्टा शूल हलानि शंख मुसले चक्रं धनुः सायकम्,
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्त विलसच्छीतांशु तुल्य प्रभाम्।
गौरी देह समुद्भवां त्रिजगतामाधार भूतां महा,
सर्वामंत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादि दैत्यार्दिनीम्।
शरत्पूर्णेन्दु शुभ्रां सकललिपिमयीं लाल रक्तत्रिनेत्रां,
शुक्लालंकारभासां शशिमुकुट जटाभार हारप्रदीप्ताम्॥
विद्याभ्रक् पूर्णकुम्भान् वरमपिदधतीं शुद्ध पट्टाम्बराढ्यां,
वाग्देवीं पदमवक्त्रां कचभरनमितां चिंतयेत् साधकेन्द्रः॥

ध्यान (दो)–

आरूढा श्वेतहंसैर्भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं,
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्यम्।
सा वीणां वादयन्ती स्वकरजपैः शास्त्र–विज्ञानशब्दैः,
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधराभारती सुप्रसन्नाः॥
श्वेतपद्मासना देवी श्वेतगन्धानुलेपना।
सां च तैर्मुनिभिः सर्वेर्ऋषिभिः स्तूयते सदा॥
या कुन्देदुतुषारहा धवला या श्वेत वस्त्रावृता।
या वीणा वरदण्डमण्डितकरा या श्वेत पद्मासना॥
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता।
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं।
वीणा-पुस्तक धारिणीमभयदां जाड्यांधकारापहाम्॥
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

आत्म-निवेदन

स्तौमि त्वां त्वां च वन्दे मम खलु रसनां नो कदाचित्तयेजेथा,
मा मे बुद्धिर्विरुद्धा भवतु न च मनो देवि मे यातु पापम्।
मा में दुःखं कदाचित्क्वचिदपि विषयेऽप्यस्तु मे नाकुलत्वम्,
शास्त्रे वादे कवित्वे प्रसरतु मम धीर्मास्तु कुंठा कदापि॥
इत्येतैः श्लोकमुख्यैः प्रतिदिनमुषसि स्तौति यो भक्तिनम्रो,
वाणीं वाचस्पतेरप्यविदितविभवो वाक्पटुमृष्टकण्ठः।
या स्यादिष्टार्थलाभैः सुतमिव सततं वर्धते सा च देवी,
सौभाग्यं तस्य लोके प्रभवति कविता विघ्नमस्तं प्रयाति॥
निर्विघ्नं तस्य विद्या प्रभवति सततं चाश्रुतग्रन्थबोधः,
कीर्तिस्त्रैलोक्यमध्ये निवसित वदने शारदा तस्य साक्षात्।
दीर्घायुर्लोकपूज्यः सकलगुणनिधिः सन्ततं राजमान्यो,
वाग्देव्या! संप्रसादात्त्रिजगति विजयी सत्सभासु प्रपूज्यः॥

सरस्वती स्तोत्र

या कुन्देन्तुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकर प्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥
आशासु राशीभवदंगवल्ली भासैव दासीकृतदुग्धसिंधुम्।
मंदस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं वंदेऽरविंदासनसुंदरि त्वाम्॥
शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे
सर्वदा सर्वदास्माकं
सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।
सरस्वतीं च तां नौमि वागधिष्ठातृदेवतां
देवत्वं प्रति पद्यन्ते यदनुग्रहतो जनाः॥
पातु ना निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती
प्रज्ञेतर परिच्छेदं वचसैव करोति या।
शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमाद्यां जगद् व्यापिनीं,
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्॥

हस्ते स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।
वीणाधरे विपुलमंगलदानशीले भक्तार्तिनाशिनि विरंचिहरीशवन्द्ये॥
कीर्तिप्रदेऽखिलमनोरथदे महार्हे विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्।
श्वेताब्जपूर्णविमलासनसंस्थिते हे श्वेतांबरावृत मनोहरमंजुगात्रे।
उद्यन्मनोज्ञसितपंकजमंजुलास्ये विद्याप्रदायिनि सरस्वति नौमि नित्यम्॥
मातस्त्वदीयपदपंकजभक्तियुक्ता ये त्वां भजन्ति निखिलानपरान्विहाय।
ते निर्जरत्वमिह यांति कलेवरेण भूवह्निवायुगगनाम्बुविनिर्मितेन॥
मोहान्धकारभरिते हृदये मंदीये मातः सदैव कुरु वासमुदारभावे।
स्वीयाखिलावयवनिर्मल सुप्रभाभिः शीघ्रं विनाशय मनोगतमन्धकारम्॥
ब्रह्मा जगत सृजति पालयतीन्दिरेशः शम्भुर्विनाशयति देवि तव प्रभावैः।
न स्यात्कृपा यदि तव प्रकटप्रभावे न स्युः कथंचिदपि ते निजकार्यदक्षाः॥

लक्ष्मीमेधा धरा पुष्टिगौरि तुष्टिः प्रभा धृतिः,
एताभिः पाहि तनुभिरष्टाभिर्मा सरस्वति।
सरस्वत्यै नमो नित्यं भद्रकाल्यै नमो नमः,
वेदवेदान्तवेदांगविद्या स्थानेभ्य एव च॥
सरस्वती महाभागे विद्ये कमल लोचने,
विद्यरूपे विशालाक्षि विद्यां देहि नमोऽस्तु ते।
यदक्षरं परं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्,
तत्सर्व क्षम्यतां देवि प्रसींद परमेश्वरि।

स्कन्दमाता के रूप में पंचम कन्या का पूजन—स्कन्दमाता के रूप में पंचम नवरात्र को या नवरात्र की अंतिम तिथि को पंचम कन्या के रूप में 'शाम्भवी' का पूजन किया जाता है। 'शाम्भवी' के लिए आठ वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। निम्न मंत्र से स्कन्द माता को भोज्य पदार्थ अर्पित करें।

सदाऽऽनन्द करी शान्तां सर्वदेवनमस्कृताम्।
सर्वभूतात्मिकां लक्ष्मीं शाम्भवीं पूजयाम्यहम्॥

श्री सरस्वती चालीसा (1)

॥ दोहे ॥

गौरी नंदन गजवदन प्रथम पूज्य संसार।
विघ्न हरण परसिद्ध है मंगल के भंडार॥
विद्या का भण्डार है बुद्धि की जड़ मात।
कारण दिव्य प्रकाश का हरे अविद्या रात॥

॥ चौपाई ॥

मात सरस्वती वीणे वाली, योग मोक्ष दोनों की ताली।
नाम तेरे की ऊंची शान, मूक को दे संस्कृत का दान।
बालक जो गुण गावै तेरा, उसके कण्ठ करे श्रुति डेरा।
सेवक के संकट हर लेती, वांछित वर प्रकट धर देती।
दुःख हरती शरणागति तेरी, निज भक्ति दे इच्छा मेरी।
योग मूल वीणा के राग, सुनो चंचलता चित्त को त्याग।
अनहद शब्द की वीणा शक्ति जप अपने की दे तू भक्ति।
वीणा स्वर से कटे उदासी, रसिकों को दे पद अविनाशी।
जड़ वैराग्य को काटै वीणा, शोक संताप को चाटै वीणा।
वीणे के स्वर प्रेम स्वरूप, हरती भक्तों का भव कूप।
वृति उचाट की औषध वीणा, कृष्ण कुंज का भूषण वीणा।
सरगम नाच जब वीणा गाती, नंद नंदन नटवर बन जाती।
नारद रसिक भी वीणा धरते, प्रसन्नता से विश्व विचरते।
सुरपुर के गंधर्व भी चेले, तेरी पाठशाला में खेले।
होंवें दीन न तेरे दास, नीति आद्य में निश्चय पास।
पूजा तेरी पुण्य बल देंती, प्यासे पितरों को जल देती।
लेख लिखे जीवों के तू ही, दुष्टों को दुर्मति दे तू ही।
भक्ति तेरी स्वर्ग निशानी, साक्षी निश्चय ईश्वर वाणी।
सेवा तेरी सब सुख मूल, स्वप्न में वेध सके नहिं शूल।
ममता जाल से सो नहिं छूटे, मूरख जो माता से रूठे।
जिसने आश्रय लिया तुम्हारा, प्रेम तत्व का पंथ संवारा।
कोटि तेंतीस देव शरणागत, ऋषि-मुनि सब करते हैं स्वागत।
दिव्य चक्षु दे पूर्ण दाती, घृणा करें उल्लू की जाती।
पशु सम नर जो विद्या विहीन, पा न सकें पदवी स्वाधीन।
सूर्य सहस्त्र न कटे अंधेरा, दिव्य प्रकाशी सेवक तेरा।
बांटे तू प्रारब्ध खजाना, भजे न हठ योगी अज्ञाना।
बिगड़े अंक दूर कर देती, शंकर से शीघ्र वर देती।
वाहन हंस का पावन ध्यान, परमहंस का देता ज्ञान।
दुर्भागी मोती नहिं चुगते, चुगने वाले रत्न भी चुगते।
एक हस्त जयमाल मैया के, दूसरे में करताल मैया के।
अरु दो हस्त कमल वीणे पर, ध्याता को दे अजर अमर कर।
चतुर भुजा के बाजू बंद, स्मरण से करते निर्द्वंद्व।

कानन कुण्डल रखते ज्योति, त्रिकालज्ञदृष्टी तब होती।
वाटिका तेरी में रहते मोर, पाप समूह के ये भी चोर।
कमल अष्टदल आसन तेरा, पूज्य विश्व प्रकाशन तेरा।
तेरे मूर्त रूप दिव्य धाम, लाखों तुमको मातु प्रणाम।
हरि समान हर घट में रहती, प्रेम पुष्प से पूजन चहती।
मंगल भुवन अमंगल हारिणि, शरण तेरी सब अंग विहारिणी।
मंत्रवर शुभ शारदा शरणम्, आनंद सागर भवभय हरणम्।
यह चालीसा जो नर गावे, सो जन वचन सिद्ध हो जावे।

॥ दोहा ॥

सुनती सुत की मात भी, दिव्य कानों के साथ।
दे मुख से आशीष माँ, धरती सिर पर हाथ॥

सरस्वती चालीसा (2)

॥ दोहा ॥

जय जय मातु सरस्वती, बुधि विद्या की खानि।
हंसवाहिनी अंबिके, जय जय वीणापाणि॥

॥ चौपाई ॥

जय श्री सकल बुद्धि बल रासी, जय सर्वज्ञा जय अविनासी।
जय जय जय वीणा करधारिणि, हंसवाहिनी जय मृदु हासिनि।
रूप चतुर्भुज तुम्हारो माता, तीनि लोक महं तुम विख्याता।
वाल्मीकि अति अत्याचारी, तुम्हरो कृपा भये कवि भारी।
कालिदास भए अति विख्याता, तुम्हरी दया अहै सब माता।
तुलसी सूर आदि विद्वाना, तुम्हरो सुयश सदैव बखाना।
शरदइंदु सम बदन तुम्हारो, रूप चतुर्भुज अतिशय प्यारो।
संकट सूर्य सम तन द्यातु पावन, राजहंस तुम्हरो शचि वाहन।
कानन कुण्डल लोल सुहावहिं, उरमणिमाल अनूप दिखावहिं।
वीणा पुस्तक अभय धारिणी, जगन्मातु तुम जग विहारिणी।
ब्रह्मासुता अखण्ड अनूपा, तुम्हरे गुण गावत सुरभूपा।
हरिहर करहिं तुम्हारो वंदन, वरुण कुबेर करहिं अभिनंदन।
मधु कैटभ की मति हरि लीन्हीं, पल महं बधकरि तुम गति दीन्हीं।
तुमही रूप पार्वती धारेउ, दुर्गा रूप असुर संहारेउ।

काली रूप अनूप बनावा, रक्तबीज कहं धरिण गिरावा।
आदिशक्ति तुम प्रकट भवानी, सचराचर स्वामिनि कल्यानी।
तुम्हरो नाम जपै जो कोई, विद्या बुद्धि पावे जन सोई।
तुम साहित्य सरोवर वासिनि, ललित कला संगीत प्रकासिनि।
चारु कल्पनाशीला माया, करहु सदा सेवक पर दाया।
सरस्वती पूजन जो करहीं, निश्चय ते भवसागर तरहीं।
विद्या, बुद्धि मिलहि सुखदानी, जय जय जय शारदा भवानी।
तुम्हरी कृपा मिटहिं सब पीरा, सेवक होंहि तुम्हारे धीरा।
तुम जननी ब्रह्माण्ड निवासिनि, सत रजतम गुण तीनि प्रकासिनि।
जगदंबा तुम अगजग भरणी, बुद्धि विधातृ सुमंगल करणी।
दुःख दरिद्र सब जाहिं नसाई, तुम्हरी कृपा न कछु कहि जाई।
परम पुनीत जगत आधारा, मातु अहै शुचि ज्ञान तुम्हारा।
सनकादिक नित गुण गण गावहिं, नारद मुनि तव सुयश सुनावहिं।
जापर कृपा तुम्हारी होई, ता पर कृपा करहिं सब कोई।
शुभ्रवसन कर राजत कंगन, कटि किंकिणी मधुर नुपूर स्वन।
आदि शक्ति तुम परम सयानी, महिमा वेद पुराण बखानी।
जग मंगल कर्त्री दुःख हर्त्री, सृष्टिस्वरूपा पालन कर्त्री।
तुम माया तुम प्रकृति सनातन, आदि सृष्टि तुम अतिशय पावन।
देवदनुज आरती उतारहिं, जय जय जय जय मातु उचारहिं।
तुम्हरी कृपा मिलहिं शुचि ज्ञाना, होई सकल विधि अति कल्याना।
मैं सेवक तुमहीं हो माता, सुयश तुम्हार भुवन विख्याता।
सब अपराध क्षमा करि दीजै, मातु शरण मो कहं तुम लीजै।
जो जन सेवा करहिं तुम्हारी, तिन कहं कतहुं नाहि दुःख भारी।
जो यह पाठ करै चालीसा, ता पर कृपा करहिं जगदीसा।

॥ दोहा ॥

जय शारद जय सरस्वती, जय माता जगदंब।
दीन जानि कीजै कृपा, देह दया अवलंब॥

सरस्वती चालीसा (3)

॥ दोहा ॥

जननि जनक पद पद्मरज, निज मस्तक पर धारि।
बंदहुं मातु सरस्वती, विद्या बुद्धि दातारि॥

॥ चौपाई ॥

जय श्री सकल बुद्धि बल रासी, जय सर्वज्ञ अमर अविनासी।
जय जय जय वीणा कर धारी, करती सदा सुहंस सवारी।
रूप चतुर्भुज धारी माता, सकल विश्व महं तुम विख्याता।
जग में पाप बुद्धि जब होती, पड़ती मंद धर्म की जोती।
तबहि मातु तुम लै अवतारा, पापविहीन करहु जग सारा।
वाल्मीकि जो थे हत्यारे, तब प्रसाद पाए गुण सारे।
राम चरित जो रचे बनाई, आदि कवि की पदवी पाई।
कालिदास जो थे विख्याता, तुम्हरी कृपा दृष्टि सो माता।
तुलसी सूर आदि विद्वाना, भए और जो ज्ञानी नाना।
तिनहिं न और रहेउ अवलंबा, केवल कृपा आपकी अंबा।
करहु कृपा सोई मातु भवानी, दुखित दीन निज दासहि जानी।
पुत्र करहि अपराध घनेरे, माता उर न धरहि तेहि केरे।
राखु लाज जननी अब मेरी, विनती करहुं भांति बहुतेरी।
मैं अनाथ तू है अवलंबा, करहु कृपा जय जय जगदंबा।
मधु कैटभ जो अति बलवाना, बाहू युद्ध विष्णु से ठाना।
पांच हजार वर्ष अति घोरा, युद्ध कियो तिन मुंह नहि मोरा।
मातु सहाय कीन्ह तेहि काला, बुधि विपरित भई खल हाला।
तेई ते मृत्यु भई खल केरी, पुरवहु मातु मनोरथ मेरी।
चण्ड मुण्ड जो थे विख्याता, छिनमहं तिनहि संहारेउ माता।
रक्तबीज से समरथ पापी, सुर मुनि हृदय धरा सब कांपी।
काटेउ सिर जिमि कदली खंबा, बार बार बिनवहुं जगदंबा।
जग प्रसिद्ध जे शुंभ निशुंभा, छिनमहं तिनहि बध्यो तुम अंबा।
भरत-मातु बुधि फेरेउ जाई, रामचंद्र वनवास कराई।
एहि विधि रावण वध तुम कीन्हा, सुर नर मुनि सबको सुख दीन्हा।
को समरथ तव यश गुणगाना, निगम अनादि अनंत बखाना।
विष्णु रुद्र अज सकहिं न मारी, जिनकी तुम रक्षक महतारी।
रक्तदंतिका और शताक्षी, नाम अनेकन दानव भक्षी।
दुर्गम काज धरम पर कीन्हा, दुर्गा नाम सकल जग लीन्हा।
दुर्गे आर्ति हरनि तुम माता, कृपा करहु जय जय सुखदाता।
नृप कोपित है मारन चाहै, कानन में घेरे मृग नाहै।
सागर मध्य पोत के भंजे, अति तूफान न कोऊ संगे।
भूत-प्रेत बाधा या दुःख में, हो दरिद्र अथवा संकट में।

नाम जपे मंगल सब होई, संशय तनिक करै नहिं कोई।
पुत्र हीन जो अति अकुलावै, मिले पुत्र देवी को ध्यावै।
करै पाठ नित यह चालीसा, होई पुत्र सुंदर गुणईसा।
संकट जापे आवे भाई, सरस्वती पूजन करवाई।
धूपादिक नैवेद्य चढ़ावै, संकटरहित अवस होई जावै।
भक्ति मातु की करे हमेशा, निकट न आवै ताहि कलेशा।
बंदी पाठ करै शतवारा, बंदी पाश होइ जरि छारा।
करहु कृपा बुधि हेत भवानी, कीजे कृपा दास निज जानी।

॥ दोहा ॥

कांति सूर्य सम मात तुम, अंधकार मम रूप।
बेगि बढ़हु, रक्षा करहु, परहुं न मैं भव कूप॥
बल बुधि विद्या देहु मोहि, सुरहु सरस्वति मात।
मम अज्ञानी अधम को, आश्रय तुही ददात॥

आरती श्री सरस्वती जी की (1)

ॐ जय वीणे वाली, मैया जय वीणे वाली।
ऋद्धि-सिद्ध की रहती, हाथ तेरे ताली॥
ऋषि-मुनियों की बुद्धि को, शुद्ध तू ही करती।
स्वर्ण की भाँति शुद्ध, तू ही माँ करती ॥1॥
ज्ञान पिता को देती, गगन शब्द से तू।
विश्व को उत्पन्न करती, आदि शक्ति से तू ॥2॥
हंसवाहिनी दीजे, भिक्षा दर्शन की।
मेरे मन में केवल, इच्छा तेरे दर्शन की ॥3॥
ज्योति जगा कर नित्य, यह आरती जो गावे।
भवसागर के दुःख में, गोता न कभी खावे ॥4॥

आरती श्री सरस्वती जी की (2)

जय सरस्वती माता, मैया जय सरस्वती माता।
सद्गुण वैभवशालिनी, त्रिभुवन विख्याता॥ मैया जय....
चन्द्रवदनि पद्मासिनी, द्युति मंगलकारी।
सोहे शुभ हंस सवारी, अतुल तेज धारी॥ मैया जय....
बायें कर में वीणा, दायें कर माला॥
शीष मुकुट मणि सोहे, गल मोतियन माला॥ मैया जय....

देवि शरण जो आये, उनका उद्धार किया।
पैठि मंथरा दासी, रावण संहार किया॥ मैया जय....
विद्या ज्ञान प्रदायिनी ज्ञान प्रकाश भरो।
मोह, अज्ञान और तिमिर का, जग से नाश करो॥ मैया जय...
धूप दीप फल मेवा, माँ स्वीकार करो
ज्ञान चक्षु दे माता, जग निस्तार करो॥ मैया जय....
माँ सरस्वती जी की आरती, जो कोई जन गावे।
हितकारी सुखकारी, ज्ञान भक्ति पावे॥ मैया जय...

मूल सरस्वती मंत्र—शोध कार्य करने में रुकावट आने, बालक के पढ़ने में मन न लगने तथा मन्दबुद्धि को कुशाग्र बुद्धि करने में मूल सरस्वती मंत्र का जप करना अति श्रेयष्कर है। इसका 41 हजार जप करना चाहिए, इससे यह सिद्ध हो जाता है। पुनः ब्राह्मी रस या शंखपुष्पी रस को इस मंत्र से अभिमंत्रित कर पीने से निर्विघ्न सफलता मिलती है। भोजन करने, पहनने तथा देवी पर अर्पण करने के लिए सफेद पुष्प लेने चाहिएं। साधक को शाम या रात्रि में दही, चावल, मट्ठा आदि वर्जित हैं।

विनियोग

ॐ अस्य सरस्वती मंत्रस्य कण्व ऋषिः, विराट् छंदः, वाग्वादिनी देवता, मम सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यान–स्तुति

तरुण सकलमिन्दो विभ्रति शुभ्र कान्ति,
कुचभरनमितांगी सन्निषण्णासिताब्जै।
निजकरकमलोद्यत् लेखनी पुस्तक श्री,
सकल विभव सिद्ध्यै पातु वाग्देवता नः॥

जप–मंत्र

वद् वद् वाग् वादिनि स्वाहा।

स्वसिद्धि मंत्र—कवि और गायक लोग इस मंत्र की सिद्धि करते हैं। बच्चे के तुतलाने और हकलाने को दूर करने में यह सहायक मंत्र प्रातःकालीन वेला में किया जाता है। इस मंत्र के समय प्रातः आधा बिलौया दही का प्रयोग करना चाहिए। शाम या रात्रि में दही का प्रयोग न करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्रीसस्वतिमंत्रस्य सनत्कुमार ऋषिः अनुष्टप् छंदः, श्रीसरस्वत्यै देवता, ऐं बीजम्, वदवदेति शक्तिः, सर्वविवद्याप्रपन्नोयेति कीलकं, मम वाग्निवलाससिद्धयर्थं जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति

दोभिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमालां दधाना,
हस्तेनैकेन पद्मं सिंतमति च शुकं पुस्तकं चापरेण।
या सा कुंदेदुशंखस्फटिमणिनिभा भासमानाऽसमाना,
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना॥

जप-मंत्र

ॐ ऐं क्लीं सौं ह्रीं श्रीं ध्रीं वद् वद् वाग्वादिनि सौं क्लीं ऐ श्री सरस्वत्यै नमः।

वाणी देवी का ज्ञान कुण्डली मंत्र—यह मंत्र स्वयं मेरे द्वारा (लेखक) प्रयोगित किया गया है जो पूर्णतः सफल हुआ है। इसके प्रभाव से मूक-बधिर बालक/बालिका बोलने तथा सुनने में सफल हुए हैं। इस मंत्र पर मुझें अटूट विश्वास है। यह मंत्र इकहत्तर हजार किया जाता है। विधिवत् पूजन करने के बाद अधिकतम इक्कीस दिन में इसे पूर्ण करना आवश्यक है। मंत्र साधना से पूर्व गुरुमंत्र लेना आवश्यक है। यह मंत्र वाणी और स्वर की शक्ति, सम्मोहन, प्रभाव और अमोघता देने की क्षमता प्रदान करता है।

ध्यान-स्तुति

सरस्वती मया दृष्ट्वा, वीणा पुस्तक धारिणी।
हंस वाहन संयुक्ता, विद्यादानं करोतु मे॥

जप-मंत्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं कली सौं क्लीं ह्रीं ऐं ब्लूं श्रीं, नीलतारे सरस्वती द्रां द्रीं क्लौं ब्लूं सः। ऐं ह्रीं श्रीं क्ली सौं सौं ह्रीं स्वाहा॥

विद्या देवी का मंत्र

विद्या, ज्ञान, प्रतिभा, बौद्धिक-क्षमता, धारणा-शक्ति और अनेक विषयों (वेद, शास्त्र, न्याय, दर्शन एवं अध्यात्म आदि) में पारंगति प्राप्त करने की कामना रखने वाले साधक विद्या देवी की उपासना करते हैं। इनकी उपासना भी सरस्वती जी की उपासना के समान है। विनियोग और ध्यानादि भी वो ही हैं जो स्वसिद्धि मंत्र में कहे गये हैं। केवल जप का मंत्र भिन्न है।

जप-मंत्र

ॐ ह्रीं श्रीं ऐं वाग्वादिनी भगवती अर्हनमुख निवासिनी सरस्वति ममास्ये प्रकाशं कुरु-कुरु स्वाहा ऐं नमः।

स्कन्दमाता का बीजक मंत्र

स्वर और शब्दों में (वाणी में) प्राण-तत्व तथा प्रभाव तत्व इन्हीं की कृपा से उत्पन्न होता है। महाकवि कालीदास की सिद्धि और प्रसिद्धि का एकमात्र आधार यही था कि वाणी देवी उन पर कृपालु थीं।

वाणी देवी की उपासना के लिए पूर्व वर्णित सरस्वती की उपासना-विधि अपनाई जाती है। उसके पश्चात् जप के लिए निम्नलिखित मंत्र का जप किया जाता है—

मंत्र—

ॐ ह्रीं ऐं ह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः।

सरस्वती गायत्री

सरस्वती गायत्री के मंत्र का जप करते समय उनका चित्र अथवा मूर्ति पूजागृह में स्थापित करें। फिर उसका विधिवत् चंदन, पुष्प, धूप और दीप आदि से पूजा करके, कलश पर दीपक जलाकर मंत्र का जप आरंभ करें। जप-संख्या प्रतिदिन समान और नियमित रूप से होनी चाहिए। यदि किसी अनुष्ठान का संकल्प किया गया हो, तो उसकी पूर्ति पर हवन और ब्राह्मण-कन्या को भोजन, वस्त्र दान भी देना चाहिए।

मंत्र—

ॐ वाग्देव्यै च विद्महे कामराजाय धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।

स्कन्दमाता के वाहन का रहस्य

नव शक्तियों में से पंचम स्कन्दमाता अर्थात् वाराही हैं। वारह शब्द का अर्थ है एक कल्पपरिमित काल है। क्योंकि वर शब्द का अर्थ श्रेष्ठ अर्थात् आत्मा है उसे जो आहत अर्थात् आवृत्त करे उसी का नाम वाराह है। काल सत्ता ही सर्वप्रथम आत्मा को आवृत्त करती है, इस कारण कालशक्ति का ही नाम है वाराह। यही पृथ्वी को पातल से दांतों द्वारा निकालता है। उस अधिष्ठान चैतन्य के आधार पर जो आधार शक्ति निर्भर है वही वाराह शक्ति है। इनका कोई वाहन नहीं है, क्योंकि यह किसी आधार पर प्रकाशित नहीं होतीं।

□□□

षष्ठं कात्यायनी

योगेश्वरी भगवती कात्यायनी स्वयं प्रकृति, प्रकृतिदेवी, शक्ति, शक्तिमयी, संकल्परूपिणी, सर्गस्थिति प्रलयरूप संसार की अधिष्ठात्री विधात्री हैं। जिस प्रकार लौकिक पदार्थों में स्फोटादि कार्यजनिका ज्वलन आदि उनकी शक्तियां होती हैं उसी प्रकार सच्चिदानन्दा उपादान भूता माँ कात्यायनी में अलौकिक शक्ति विद्यमान है। ये विचित्र कार्य करने के कारण 'महामाया', सर्वजगत का प्रकृष्ट निधान (आश्रय) होने के कारण प्रधन और सब जगत का उपादान होने के कारण 'प्रकृति' नाम से प्रसिद्ध हैं।

कात्यायनी देवी की कृपा जब तक प्राप्त नहीं होती तब तक शिक्षण कार्य तो क्या समस्त शोध तथा अन्वेषण कार्य कदापि सम्पादित नहीं होते। लेखक, वैज्ञानिक, चिकित्सक अधिवक्ता तथा इंजीनियर आदि इनकी कृपा के बिना अपना कार्य सम्पादित नहीं कर सकते। शोध तथा शोधनकार्य इनका प्रमुख गुण है।

परमात्मारूपा यह महाशक्ति स्वयं अपरिणामिनी हैं, परन्तु इन्हीं की मायाशक्ति से सारे परिणाम होते हैं, जो लोग कृष्ण की उपासना करते हैं उनके लिए कात्यायनी माता विशेष फल प्रदान करती है, क्योंकि वे स्वयं माता सुभद्रा के रूप में आकर भक्त का भोजन ग्रहण करती हैं। माता सुभद्रा का भगवान श्री कृष्ण से भाई-बहिन का सम्बंध जग जानता है। ऐसे लोग जिनकी बहिनें नहीं होतीं कुछ प्रान्तों में विशेषतः ब्रजप्रान्त के लोग माता भगवती कात्यायनी को बहिन के रूप में भी पूजते हैं। रक्षाबंधन के अवसर पर राखी भगवती कात्यायनी को अर्पण कर बहिन के रूप में माँ का ध्यान कर राखी को लेकर बंधवा लेते हैं।

भगवती कात्यायनी माता ही नहीं बहिन बनकर भी साधक का मंगल करती हैं। भगवती ने स्वयं अपने स्वरूप के प्रकट होने के सम्बंध में दुर्गासप्तमी में इस प्रकार कहा है—

नन्दगोप गृहे जाता यशोदा गर्भसंभवा।
ततस्तौ नाशयिष्यामि विंध्याचलनिवासिनी॥

अर्थात् "मैं नन्दगोप की पत्नी यशोदा के गर्भ से अवतरित होकर विंध्याचल में जाकर रहूंगी"—इस श्लोक से पता चलता है कि ये ही योगमाया हैं।

कात्यायनी पूजनम्

भगवती कात्यायनी का पूजन करने से पूर्व आचमन, प्राणायाम, शिखाबंधन, मंगलाचरण करने के बाद लाल वस्त्र पर मसूर की दाल से कमल की आकृति बनायें उसके चारों ओर अष्टभुजाकार चावल से बनायें।

(*आलोक*–नीली आकृति में चावल तथा लाल आकृति में मसूर की दाल सजायें।)



आवाहन–

आइये माँ कात्यायनी मैं चाहूं करना आराधना।
हो जाये भूल मुझसे हे शक्तिमयी क्षमा करना।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि च।

प्रतिष्ठा–ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ॥

(यजुर्वेद 2। 13)

फूलों से तेरा सजा दिया है सुंदर सिंहासन।
आए विराजें कात्यायनी मन मेरा तुझको अर्पण।।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि कात्यायन्यै नमः। (आसन के लिये अक्षत समर्पित करें)।

आसन–

नवरत्नों अरु मणियों से
सिंहसन तेरा बनाया है।
कात्यायनी हे प्रकृति की देवी
ये भक्त अर्पण करने आया है।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

(आसन स्थान या माँ के चरणों में पुष्प अर्पित करते हुए प्रार्थना करें–माँ भगवती कात्यायनी आप आसन ग्रहण करें।)

पाद्य–

गंगा आदि सब तीरथ से
सुवासित जल मैं लाया हूं।
पाद्यार्थ तुम्हें प्रकृति की देवी
मैं अर्पण करने आया हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायन्यै नमः। पादयो पाद्यं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से भगवती कात्यायनी के चरणों में जल चढ़ाकर धोयें।)

अर्घ्य–

नाना अक्षत अरु पुष्पों से
मनमोहक वासित जल है ये।
हे विन्ध्यवासिनी कात्यायनी
अर्पण करता हूं जल है ये।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि॥

आचमन–

कपूर सुवासित उत्तम जल
देवी पान करो तुम पान करो।
सर्व शक्तिमयी प्रकृति देवी
कल्याण करो कल्याण करो।।

ॐ भगवत्यै कात्यायन्यै नमः। आचमनं समर्पयामि॥ (कर्पूर से सुवासित जल से भगवती को आचमन करायें।)

स्नान–

मन्दाकिनी का उत्तम जल
सब पापहारी गंगाजल है।
कात्यायनी हे प्रकृतिस्वरूपा
अर्पण तुमको उत्तम जल है।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। स्नानार्थं जलं समर्पयामि॥

(भगवती कात्यायनी को सुवासित जल से स्नान करायें।)

स्नानाङ्ग-आचमन—स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।
(आचमन के लिये जल दें।)

पञ्चामृत स्नान—दूध, दही, घी, बूरा, शहद से युक्त मिश्रण से भगवती कात्यायनी को स्नान करायें।

शक्कर मधु को समन्वित कर
दूध दधि भी मिलाया है।
कात्यायनी तुम्हें समर्पण को
मधुर मधु भी मिलाया है।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से माँ कात्यायनी को पंचामृत स्नान करायें।)

(*आलोक*—भगवती कात्यायनी को अलग-अलग अमृतों से भी स्नान कराया जाता है। प्रत्येक अमृत के बाद जल से स्नान कराना चाहिए—

दुग्ध स्नान—

गैया के स्तन से निकल-निकल,
यह दूध बना उज्ज्वल-उज्ज्वल।।
कात्यायनी तेरे इन चरणों से,
बहता है तेरे हर पल-हर पल।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। दुग्धस्नानं समर्पयामि॥ (गोदुग्ध से स्नान करायें।)

दही स्नान—

धेनू के कोमल अंगों से
सुमनोहर दुग्ध रस पाया है।
शशिप्रभा की कांति पाकर
दधि रूप में इसको पाया है।
अब दधि समर्पित करता हूं।
हे कात्यायनी मुझे वर दीजै।
पूरन होवें कारज मेरे
दयादृष्टि मुझ पर कीजै।।

श्री जगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। दधिस्नानं समर्पयामि॥ (गोदही से स्नान करायें।)

घृत स्नान—

सर्व संतोषों कारक पुनीत बना सुनवनीतम्।
कात्यायनी घृतस्नान करें ध्यान धरें हम सुपुनीतम्।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। घृतस्नानं समर्पयामि॥ (गोघृत से स्नान करायें।)

मधु स्नान—

सर्वोषधि गुण उत्पन्ना सुस्वाद बना है मधुर मधु।
तेज पुष्टि कारक है कात्यायनी अर्पित है मधुर मधु।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनीदेव्यै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। (मधु से स्नान करायें।)

शर्करा स्नान—

जड़मूल रसगर्भित इक्षु से मधुर शर्करा का निर्माण किया।
मलापहारी दिव्यस्नान को अर्पित कर तव सम्मान किया।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायन्यै नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि।

गंधोदक स्नान—

मलयाचल में ठंडे झोकों बिच
चंदन का प्रादुर्भाव होता है।
उस चंदन को गंधोदक कर
देवी स्नान समर्पण होता है।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि॥ (मलयचन्दन और अगरु से मिश्रित जल चढ़ायें।)

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥ (शुद्ध जल से स्नान करायें।)

आचमन—शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दें।)

वस्त्र—

धारण कीजै कञ्चुकी सारी।
अरज सुनो जगदम्ब हमारी।।
तुम्हीं बिराजी जब कैलासा।
पीर हरो पीड़ा कर नासा।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायनीदेव्यै नमः। वस्त्रोपवस्त्रं कञ्चुकीयं च समर्पयामि॥ (धौतवस्त्र, उपवस्त्र और कञ्चुकी निवेदित करें।)

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। (आचमन के लिये जल दें।)

सौभग्यसूत्र—

सौभाग्य सूत्र स्वर्ण से मंडित
कण्ठ में तेरे धारण हो।
स्वर्ण छटा-सी मणियां इसे
सौभाग्य बने यह कारण हो।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि॥ (सौभाग्यसूत्र चढ़ायें।)

चंदन—

दिव्य मनोहर गुणकारी अर्पित करता इस चंदन को।
कात्यायनी प्रकृति देवी यह भक्त खड़ा तब वंदन को।।

श्री जगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। चन्दनं समर्पयामि॥ (मलयचन्दन लगायें।)

कुमकुम—

कुमकुम अनंग का दिव्य रूप
कामिनी रति का कारक है।
कुमकुम से चित्त बने कुमकुम
लिये हुआ ये उपासक है।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। कुङ्कुमं समर्पयामि॥ (कुमकुम चढ़ायें।)

हरिद्रा चूर्ण—

सुख-सौभाग्य पाने को माते हल्दी चूरन लाया हूं।
ग्रहण करो हे देवेशि! मैं अर्पित करने आया हूं।।

श्रीजगदम्बायै कात्यायन्यै नमः। हरिद्रां समर्पयामि॥ (हल्दी का चूर्ण चढ़ायें।)

सिन्दूर—

श्वेत लाल गुलाल से युत
मिश्रित इसमें हल्दी है
सिंदूर विंदू हो कात्यायनी
अब अर्पण करने की ज़ल्दी है।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीकात्यायनीदेव्यै नमः। सौभाग्यपरिमल-द्रव्याणि समर्पयामि। (इससे कात्यायनी देवी के लिए सौभाग्य द्रव्य तथा सिंदूर चढ़ाएं।)

काजल—

चम्पक कर्पूर अरु चंदन की
कालिख संग्रह से बना काजल
नेत्रों को अर्पण करूं प्रकृति देवी
स्वीकार करो मेरा काजल।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीकात्यायनीदेव्यै नमः। अक्षिभ्यां कज्जलं समर्पयामि॥ (इससे कात्यायनी देवी के लिए काजल अर्पण करें।)

दूर्वांकुर—

दूर्वा के अंकुर संग्रहीत कर
मैं मंगल कामना करता हूं।
प्रकृति की दूर्वा प्रकृति को
आज समर्पित करता हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै श्रीकात्यायन्यै नमः। दूर्वांकुरान् समर्पयामि॥

विल्व पत्र–

स्वच्छ साफ तीन दलों युत
विल्वपत्र समर्पित करता हूं।
त्रिजन्मों का पाप हरो देवी
विनय भाव अर्पित करता हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायन्यै नमः। विल्वपत्रं समर्पयामि॥ (विल्वपत्र के सामने की ओर बायें से दायें क्रमशः 'ॐ ऐं' 'ॐ ह्रीं', 'ॐ क्लीं' चन्दन से अनार की कलम से लिखकर उपरोक्त मंत्र से विल्वपत्र अर्पण करें।)

आभूषण–

कंकड़ केपूर मेखला कुंडल नूपुर हारों से,
हीरक मानिक स्वर्ण रजत सब नवरत्नों के फुहारों से।
भूषण बनाकर इन नवरत्नों से स्वर्णादि खनिजों से।
आज समर्पित हो हे प्रकृति देवी समलंकृत जाओ रत्नों से।।

(इस मंत्र से समस्त आभूषण पहनाएं।)

नीचे कुछ आभूषणों के मंत्र दिए गए हैं उन-उनका तत्सम्बंधी मंत्र को उच्चारण करके भी आभूषण धारण करा सकते हैं–

कंकण–

माणिक्य मुक्ता मणिखंड से युत,
स्वर्णकार ने संस्कार कर बनाया है।
ये कंगन स्वर्ण शिला से मंडित
कात्यायनी भक्त तुम्हारा लाया है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनीदेव्यै नमः। हस्तयोः कङ्कणे समर्पयामि॥ (इस मंत्र से कंगन या चूड़ी अर्पित करें।)

कर्णाभूषण–

कर्णफूल स्वर्ण से मंडित
कात्यायनी तुम्हारे कर्णों में।
नमन करें स्वीकार हे देवी
अब भक्त तुम्हारे चरणों में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कात्यायनीदेव्यै नमः। कर्णयोः कुण्डले समर्पयामि॥ (इस मंत्र से कुण्डल अर्पित करें।)

हार–

मणि-मुक्ता से बना हुआ
अब समर्पण कण्ठाभूषण।
ग्रैवेयक नाम इसका पावन
धारण करो देवी आभूषण।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कात्यायनीदेव्यै नमः। कण्ठे ग्रैवेयकं समर्पयामि। (इस मंत्र से हार गले में पहनायें।)

अंगद–

जानु तक जाने वाली भुजाओं में
स्वर्णांगुद समर्पण करता हूं।
मेरी बाहु में हो शक्ति वर्षा
जगदम्बा नमन अब करता हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कात्यायन्यै नमः बाह्वोः अंगदे समर्पयामि। (इस मंत्र से बांह का आभूषण (बाजूबंद) अर्पण करें।)

मुकुट–

हरितमणि प्रवाल मुक्ता से
सुंदर शोभित मुकुट बनाकर।
प्रकृति की तुम हो देवी
धारण करो यहां आकर।।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनीदेव्यै नमः। शिरसि मुकुटं समर्पयामि॥ (सिर पर मुकुट पहनायें।)

पादुकार्पण–

जिन चरणों में आकर सुरेश उपासना करते हैं।
लक्ष्मी जनक ये सप्तसिन्धु नित अराधना करते हैं।
उसी कात्यायनी माँ देवी को पादुका समर्पित करता हूं।
प्रभव हुए चराचर जिससे मैं नमन समर्पित करता हूं।।

ॐ भूर्भुव स्वः भगवत्यै कात्यायन्यै नमः। चरणयोः पादुके समर्पयामि॥ (भगवती को पादुका अर्पण करें।)

पुष्पमाला–

नाना वर्णों और रूप-रंगों के
ये फूल तुम्हें समर्पित करते हैं।
ये मन की बगिया महके हर दिन
बस यही अरज हम करते हैं।

ॐ भूर्भुवः स्वः कात्यायनीदेव्यै नमः। पुष्पमाला समर्पयामि॥ (भगवती कात्यायनी को लाल पुष्प अर्पित करें।)

दीप–

महातेज का साक्षी तेज यह
दीप समर्पित है दर तेरे।
अंतः-बाहर दीप जले
हो मन उज्ज्वल अंदर मेरे।।

(माँ भगवती कात्यायनी देवी की आरती के सामने पुष्प चढ़ायें।)

धूपबत्ती–

प्रकृति की उत्तम औषधि से
धूप बनी है गुणकारी।
धूम्र सुवासित ग्रहण करो
हे कात्यायनी तुम कल्याणकारी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कात्यायनीदेव्यै नमः। धूपम् आघ्रापयामि॥
(इस मंत्र को बोलते हुए एक बार मुंह की ओर, दो बार हृदय पर, चार बार मुखमण्डल पर, एक-एक बार दोनों भुजाओं पर तथा फिर समस्त अंगों पर धूपबत्ती से आरती उतारें।)

धूप–गौसा या गौगोवर के उपले को अग्नि से प्रज्जवलित करके लौंग का जोड़ा निम्न मंत्र से घी में भिगोकर अग्नि को समर्पित करें।

एतत् ते वदनं सौम्यं लोचनत्रयभूषितम्।
पातुः नः सर्वभीतिभ्यः कात्यायनि नमोऽस्तु ते॥

अथवा

नैवेद्य–

ॐ क्रौं क्रौं कात्यायन्यै क्रौं क्रौं फट्।
मधुर लवणादि सब स्वादों युत
भोजन की थाली लाकर लाया हूं।
कात्यायनी हे प्रकृति देवी!
ग्रहण करो यही कामना लाया हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कात्यायनीदेव्यै नमः। नैवेद्यं फलं च समर्पयामि॥ (इस मंत्र से नैवेद्य और फल निवेदन करें। तत्पश्चात् आचमन करायें।)

ताम्बूल–

भोजन सुपाचित होता जिससे
ताम्बूल का बीड़ा ग्रहण करो।
कर्म सुपाच्य बनें मेरे
बस यही है कामना शरण धरो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महादेव्यै कात्यायन्यै नमः। मुखबासार्थ एला-लवंगादिमिर्युतं ताम्बूलं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से भगवती कात्यायनी को पान का बीड़ा अर्पण करें।)

पूंगीफल–

पूंगीफल भक्षण करने को
मानव रह-रह कर यत्न करे।
ठीक उसी तरह अगुण मेरे
मेरा मन अहर्निश यत्न करे।

अवगुण हो दूर मन से मेरे
अब गुणों का मन में संचारण हो।
प्रदान पूंगीफल की यही कामना
ज्ञान ज्योति का मन में आवरण हो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै कात्यायन्यै नमः। पूंगीफलं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से देवी कात्यायनी के लिये पूंगीफल (सुपारी) चढ़ायें।)

कात्यायनी के रूप में षष्ठ कन्या का पूजन—कात्यायनी के रूप में षष्ठ नवरात्र को या नवरात्र की अन्तिम तिथि को छठी कन्या के रूप में 'सुभद्रा' का पूजन किया जाता है। 'सुभद्रा' के लिए दस की कन्या का पूजन व भोज्य पदार्थ निम्न मंत्र से अर्पित करें—

सुन्दरी स्वर्णवर्णाभां सुख-सौभाग्यदायिनीम्।
सुभद्रजननीं देवीं सुभद्रां पूजयाम्यहम्॥

ध्यान— अरुणकमल संस्था तद्रजः पुंजवर्णा,
करकमल धृतेष्ठा भीतियुग्माम्बुजाता।
मणिमुकुट विचित्राऽलंकृता कल्पजालै,
सकल भुवन माता संततः श्रीः श्रियै नः॥

स्तोत्र-1 :

ॐ क्षमस्व भगवत्यम्ब क्षमाशीले परात्परे।
शुद्ध सत्व स्वरूपे च कोपादि परिवर्जिते॥
उपमे सर्वसाध्वीनां देवीनां देवपूजिते।
त्वया बिना जगतसर्व मृत्युतुल्यं च निष्फलम्॥
सर्व संपत् स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी।
रासैश्वर्याधि देवि त्वं त्कत्कलाः सर्वयोषितः॥
कैलासे पार्वती त्वं च क्षीरोदे सिन्धु कन्यका।
स्वर्गे च त्वं महालक्ष्मीर्मर्त्यं लक्ष्मीश्च भूतले॥
बैंकुठे च महालक्ष्मी देवदेवी सरस्वती।
गंगा च तुलसी त्वं च सावित्री ब्रह्मलोकतः॥
कृष्णप्राणाधिदेवि त्वं गोलोके राधिका स्वयम्।
रासे रासेश्वरी त्वं च वृन्दावन वने वने॥
कृष्णप्रिया त्वं भाण्डीरे चन्द्रा चंदनकानने।
विरजा चंपक वने शैलश्रृंगे च सुंदरी॥
पद्मावती पद्मवने मालती मालती वने।
कृंदन्ती कुंदवने सुशीला केतकीवने॥
कदंबमाला त्वं देवो कदंब काननेऽपि च।
राजलक्ष्मी राजगेहे गृहलक्ष्मी गृहे गृहे॥
ॐ श्रीं श्रियै नमः॥

इस स्तोत्र को ग्यारह या इक्कीस बार पढ़कर निम्न मंत्र का एक माला ज करना चाहिए—

मंत्र— या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै-नमस्तस्यै-नमो नमः॥

तोत्र-2 :

महालक्ष्मी नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं सुरेश्वरी।
हरिप्रिये नमस्तुभ्यं नमस्तुभ्यं दयानिधे॥
अरुण कमल संस्था तद्रजः पुंजवर्णा।
करकमल धृतेष्टा भीतियुग्माम्बु जाता॥
मणिमुकुट विचित्रऽलंकृता कल्पजालैः।
सकल भुवन माता सन्ततः श्रीं श्रियै मः॥
क्षमस्यत्व भगवत्यम्ब क्षमाशीले परात्परे।
शुद्ध सत्यस्वरूपे च कोपादि परिवर्जिते॥
उपमे सर्व साध्वीनां देवीनां देवपूजिते।
त्वया बिना जगत् सर्वं मृततुल्य च निष्फलम्॥
सर्वसम्पत स्वरूपा त्वं सर्वेषां सर्वरूपिणी।
रासैश्वर्यऽधिदेवि त्वं त्वत्कला सर्वयोषितः॥
अक्षस्त्रक् परशुं गदेषु कुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां।
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनम्॥
शूलं पाशं सुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां।
सेवे सौरिभिमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम्॥
त्रैलोक्यपूजिते देवि कमले विष्णुवल्लभे।
यथा त्वं सुस्थिरा कृष्णे तथा भवमयि स्थिरा॥
ईश्वरी कमला लक्ष्मीश्चला भूतिर्हरिप्रिया।
पद्मा पद्मालया संपदुच्चै श्री पद्माधरिणी॥

कात्यायनीं अर्थात् लक्ष्मी चालीसा

॥ दोहा ॥

मातु लक्ष्मी करि कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करि, पुरवहु मेरी आस॥

॥ सोरठा ॥

यही मोर अरदास, हाथ जोड़ विनती करूं।
सब विधि करौ सुवास, जय जननि जगदंबिका॥

॥ चौपाइयां ॥

सिंधु सुता मैं सुमिरौं तोही। ज्ञान बुद्धि विद्या दो मोही॥
तुम समान नहिं कोई उपकारी। सब विधि पुरवहु आस हमारी॥

जय जय जगत जननि जगदंबा। सबकी तुम ही हो अवलंबा॥
तुम ही हो सब घट घट वासी। विनती यही हमारी खासी॥
जगजननी जय सिंधु कुमारी। दीनन की तुम हो हितकारी॥
विनवौं नित्य तुमहिं महरानी। कृपा करौ जग जननि भवानी॥
केहि विधि स्तुति करौं तिहारी। सुधि लीजै अपराध बिसारी॥
कृपा दृष्टि चितवो मम ओरी। जगजननी विनती सुन मोरी॥
ज्ञान बुद्धि जय सुख की दाता। संकट हरो हमारी माता॥
क्षीरसिंधु जब विष्णु मथायो। चौदह रत्न सिंधु में पायो॥
चौदह रत्न में तुम सुखरासी। सेवा कियो प्रभू बनि दासी॥
जब जब जन्म जहां प्रभु लीन्हा। रूप बदल तहं सेवा कीन्हा॥
स्वयं विष्णु जब नर तनु धारा। लीन्हेउ अवधपुरी अवतारा॥
तब तुम प्रगट जनकपुर माहीं। सेवा कियो हृदय पुलकाहीं॥
अपनायौं तोहि अंतर्यामी। विश्वविदित त्रिभुवन के स्वामी॥
तुम सम प्रबल शक्ति नहिं आनी। कहं लौ महिमा कहौं बखानी॥
मन क्रम वचन करै सेवकाई। मन इच्छित वांछित फल पाई॥
तजि छल कपट और चतुराई। पूजहिं विविध भांति मन लाई॥
और हाल मैं कहौं बुझाई। जो यह पाठ करै मन लाई॥
ताकौ कोई कष्ट न होई। मन इच्छित पावै फल सोई॥
त्राहि त्राहि जय दुःख निवारिणि। त्रिविध ताप भव बंधन हारिणि॥
जो चालीसा पढ़ै पढ़ावै। ध्यान लगाकर सुनै सुनावै॥
ताकौ कोई न रोग सतावै। पुत्र आदि धन संपत्ति पावै॥
पुत्रहीन अरु संपत्ति हीना। अंध बधिर कोढ़ी अति दीना॥
विप्र बोलाय कै पाठ करावै। शंका दिल में कभी न लावै॥
पाठ करावै दिन चालीसा। ता पर कृपा करैं गौरीसा॥
सुख संपत्ति बहुत-सी पावै। कमी नहीं काहू की आवै॥
बारह मास करै जो पूजा। तेहि सम धन्य और नहिं दूजा॥
प्रतिदिन पाठ करै मन माही। उन सम कोइ जग में कहुं नाहीं॥
बहुविधि क्या मैं करौं बड़ाई। लेय परीक्षा ध्यान लगाई।
करि विश्वास करै व्रत नेमा। होय सिद्ध उपजै उर प्रेमा॥
जय जय लक्ष्मी भवानी। सबमें व्यापित हो गुण खानी॥
तुम्हरो तेज प्रबल जग माहीं। तुम सम कोउ दयालु कहुं नाहीं॥
मोहि अनाथ की सुधि अब लीजै। संकट काटि भक्ति मोहि दीजै॥
भूल चूक करि क्षमा हमारी। दर्शन दीजै दशा निहारी॥
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी। तुमहि अछत दुख सहते भारी॥
नहिं मोहिं ज्ञान बुद्धि है तन में। सब जानत हो अपने मन में॥
रूप चतुर्भुज करके धारण कष्ट मोर अब करहु निवारण॥
केहि प्रकार मैं करौं बड़ाई। ज्ञान मोहि नहिं अधिकाई॥

॥ दोहे ॥

त्राहि त्राहि दुःखहारिणी, हरो वेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो शत्रु को नास॥
रामदास धरि ध्यान नित, विनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पर, करहु दया की कोर॥

कात्यायनी माँ की आरती

जगजननी जय! जय!! (मा! जगजननी जय! जय!!)
भयहारिणि, भवतारिणि भवभामिनि जय! जय !! जग०
तू ही सत-चित सुखमय शुद्ध ब्रह्मरूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा॥1॥जग०
आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्दराशी॥2॥जग०
अविकारी अघहारी, अवल, कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्त्ता हरि हर संहारकारी॥3॥जग०
तू विधिवधू, रमा तू, तू उमा, महामाया।
मूलप्रकृति विद्या तू, तू जननी, जाया॥4॥जग०
राम, कृष्ण तू, सीता, व्रजरानी राधा।
तू वांछा-कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा॥5॥जग०
दश विद्या, नवदुर्गा नाना शस्त्रकरा।
अष्टमातृका, योगिनि, नव-नव रूप धरा॥6॥जग०
तू परधाम-निवासिनि, महाविलासिनि तू।
तू ही श्मशान-विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू॥7॥जग०
सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभाऽऽधारा।
विवसन विकट-स्वरूपा, प्रलयमयी धारा॥8॥जग०
तू ही स्नेहसुधामयि, तू अति गरलमना।
रत्नविभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना॥9॥जग०
मूलाधार-निवासिनि, इह पर सिद्धिप्रदे।
कालातीता काली, कमला तू वरदे॥10॥जग०
शक्ति शक्तिधर तू ही, नित्य अभेदमयी।
भेदप्रदर्शिनि वाणी विमले! वेदत्रयी॥11॥जग०
हम अति दीनदुःखी माँ! विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे॥12॥जग०
निज स्वभाववश जननी! दयादृष्टि कीजै।

करुणा कर करुणामयि! चरण-शरण दीजै॥13॥जग०

मंत्र प्रकरण—नवरात्र की षष्ठी तिथि में विभिन्न प्रकार के मंत्र फलदायी होते हैं। षष्ठी माता कात्यायनी लक्ष्मी के कुछ अनुभूत मंत्र और स्तोत्र दिए जा रहे हैं। गुरुदीक्षा लेकर जपादि कर जीवन सुखमय बनायें।

सद्यः-लक्ष्मी-प्राप्ति हेतु धनदालक्ष्मी स्तोत्र पाठ—सद्यःलक्ष्मी-प्राप्ति के लिए यह स्तोत्र महत्वपूर्ण है। इस दिन (नवरात्र की षष्ठी से आरंभ कर प्रत्येक षष्ठी को 21, 31, 51 या 100 पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है।

धनदे धनदे देवि, दानशीले दयाकरे।
त्वं प्रसीद महेशानि यदर्थं प्रार्थयाम्यहम्॥
धरामरप्रिये पुण्ये, धन्ये धनद-पूजिते।
सुधनं धार्मिकं देहि, यजमानाय सत्वरम्॥
रम्यै रुद्रप्रिये पर्णे, रमारूपे रतिप्रिये।
शिखासख्यमनोमूर्ते! प्रसीद प्रणते मयि॥
आरक्त चरणाम्भोजे, सिद्धि-सर्वार्थदायिनी।
दिव्याम्बरधरे दिव्ये, दिव्यमाल्यानुशोभिते॥
समस्तगुणसंपन्ने, सर्वलक्षण-लक्षिते।
शरच्चन्द्रमुखे नीले, नीलनीरद लोचने॥
चंचरीक-चमू-चारु-श्रीहार-कुटिलालके।
दिव्यै दिव्यकरे श्रीदे, कलकण्ठरवामृते॥
हासावलोकनैर्दिव्यैर्भक्ता चिन्तापहारके।
रूप-लावण्य-तारुण्य-कारुण्यगुणभाजने॥
क्वणत्-कंकण-मंजीरे, रस-लीलाऽकराम्बुजे।
रुद्रव्यक्त-महत्तत्वे, धर्माधारे धरालये॥
प्रयच्छ यजमानाय, धनं धर्मेक साधनम्।
मातस्त्वंऽवा विलम्बेन, ददस्व जगदम्बिके॥
कृपाब्धे करुणागारे, प्रार्थये चाशु सिद्धये।
वसुधे वसुधारूपे, वसु-वासव-वन्दिते॥
प्रार्थिने च धनं देहि, वरदे वरदा भव।
ब्रह्मणा ब्राह्मणैः पूज्या, त्वया च शंकरो यथा॥
श्रीकरे शंकरे श्रीदे! प्रसीद मयि किंकरे।
स्तोत्रं दारिद्र्य-कष्टार्त-शमनं सुधन-प्रदम्॥
पार्वतीश-प्रसादेन-सुरेश किंकरे स्थितम्।
मह्यं प्रयच्छ मातस्त्वं त्वामहं शरणं गतः॥

विधान

पूर्व संकल्प के अनुसार निश्चित अवधि तक पाठ-साधना पूरी कर चुकने के बाद **'ॐ श्रियै नमः'** मंत्र के द्वारा 108 आहुतियां देकर हवन करना चाहिए। हवन

के बाद सामर्थ्यानुसार 1, 3, 5, या 7 ब्राह्मण-कन्याओं को श्रद्धापूर्वक भोजन कराकर दक्षिणा देनी चाहिए। इस प्रकार की गई लक्ष्मी-साधना के प्रभाव से साधक अर्थ-संकट से मुक्त होकर समृद्धि और ऐश्वर्य को प्राप्त करता है।

***आपत्ति उद्धारक मंत्र*—शरणागत-दीनार्त-परित्राण परायण!।**
सर्वस्यार्ति हरे देवि! नारायणि! नमोऽस्तुते॥

इस मंत्र को मात्र 21 बार बोल देने से छोटी-मोटी आपत्तियां नष्ट हो जाती हैं और मंगलमय सुख की प्राप्ति होती है। चैत्र शुक्ल पक्ष की षष्ठी से आरम्भ कर प्रत्येक षष्ठी को कम-से-कम 11 माला जप करने से पूरे वर्ष सुख तथा मंगलकारी शगुन होते रहते हैं।

कार्यबाधा निवारण मंत्र—किसी चौकी पर स्वच्छ वस्त्र बिछाकर गणेश यंत्र स्थापित कर पूजन करें। निम्न मंत्र का सवा लाख जप करें—

ॐ गं गणपतये नमः।

जप पूर्ण होने पर यंत्र को अपने पूजाघर या व्यापारिक प्रतिष्ठान में स्थापित करें।

नौकरी हेतु इन्टरव्यू में सफलता-प्राप्ति हेतु—स्फटिक की माला से प्रतिदिन 108 बार नीचे लिखे मंत्र का पाठ करें—

'ॐ ह्रीं वाग्वादिनी भगवती मम कार्यसिद्धि करि-करि स्वाहा।'

उपरोक्त मंत्र का पाठ नौ दिन तक करें।

सोभाग्यवर्धक मंत्र—नवरात्रि में षष्ठी तिथि को अथवा नवरात्र के किसी सोमवार के दिन एक डिब्बी में सिन्दूर भरकर रखें। उसके ऊपर सौभाग्य कवच रखकर धूप, दीप आदि से पूजन करें। यह क्रिया नवमी तक करें और निम्न मंत्र का पाठ करें—

ॐ ह्रीं महादेवताय महायक्षिण्यै मम अखण्ड सौभाग्यं देहि देहि नमः।

उपरोक्त मंत्र को एक माला प्रतिदिन कर नवमी को सिंदूर सहेजकर रखें। आप अखण्ड सौभाग्वती रहेंगी।

सौभाग्य वशीकरण मंत्र—सियारसिंगी को किसी पात्र में रखकर उसके पास सिन्दूर बिछायें फिर तेल का दीपक जलाकर मंत्र का 108 पाठ करें। जहां 'अमुकं' शब्द लिखा है वहां पति/प्रेमी का नाम उच्चारण करें। मंत्र सिद्ध होने के बाद बिछा हुआ सिंदूर पति के कपड़े में लगायें। आपका पति आपके वश में रहेगा। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ ह्रीं भोगप्रदा भैरवी मातंगी, अमुकं वशमानाय स्वाहा।

विवाह बाधा से मुक्ति—किसी कारणवश आपका विवाह नहीं हो रहा है, तो नीचे लिखे मंत्र को सिद्ध करें। शीघ्र ही आपकी मनचाही कन्या से आपका विवाह सम्पन्न होगा—

पत्नी मनोरंमा देहि मनोवृत्तानुसारिणीम्।
तारिणीं दुर्ग संसार सागरस्य कुलोद्भवाम्॥

कात्यायनी यंत्र स्थापित करके मंत्र सिद्ध करें।

व्यापारिक मंत्र—कमलगट्टे की माला से स्थापित कुबेर यंत्र के सम्मुख बैठकर मंत्र पाठ करें। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धन-धान्यादियते धन-धान्य समृद्धिं मे देहि प्रदाय स्वाहा।

कामशक्तिवर्धक मंत्र—षष्ठी के दिन एक थाली में अष्टगंध से अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र आदि लिखकर रक्तवर्ण पुष्प का आसन लगाकर पूर्णिमा तक प्रतिदिन 51 माला का जप करें। मंत्र इस प्रकार है—

ॐ श्रीं अनंगाय ह्रीं नमः॥

जप पूर्ण होने पर स्थापित काम यंत्र को जमीन में दबा दें।

धनवृद्धि प्रयोग—तीन मोती शंख, 4 गोमती चक्र, 3 हकीक पत्थर एवम् एक तांबे के सिक्के को विधिवत् पूजन करके स्थापित करके मंत्र पाठ करें—

नमो देवि भगवते त्रिलोचनं त्रिपुरं देवि।
अंजलीम् में कल्याणं कुरु-कुरु स्वाहा।

निरन्तर नवरात्र में नौ दिन तक पाठ करें, तत्पश्चात् दशमी के दिन समस्त वस्तुएं लाल रंग के वस्त्र में बांधकर संदूक में रख दें।

यौवन प्रदायक साधना—पूर्ण स्वस्थ एवम् सौन्दर्य-प्राप्ति के लिए काम यंत्र स्थापित करके 108 दिन तक जाप करें।

अशुद्धि होने पर 5 दिन तक यंत्र पूजा एवम् पाठ न करें—

ॐ श्री अनंगाय ह्रीं नमः॥

पाठ पूर्ण करके यंत्र को मिट्टी में दबा दें।

कात्यायनी के वाहन का रहस्य

नौ शक्तियों में नारसिंही या कात्यायनी षष्ठ शक्ति हैं। नृसिंह स्वरूप ज्ञान को कहते हैं क्योंकि आत्मस्वरूप विषयक ज्ञान के उदय होने से ही मनुष्य श्रेष्ठत्व लाभ करता है। 'नृ' शब्द का अर्थ है मनुष्य एवं 'सिंह' श्रेष्ठार्थवाचक है, इस कारण नृसिंह स्वरूप ज्ञान को कहा जाता है। यही हिरण्यकशिपु को मारता है। 'हिरण्य' का शब्दार्थ आत्मा है। जो हिरण्य यानी निर्विकल्प परमात्मा को काशित अर्थात् विषयाभिमान रूप से प्रकटित करे वही हिरण्यकशिपु है। इस असुर को एकमात्र आत्मस्वरूपविषयक यथार्थ ज्ञान ही विनष्ट कर सकता है। इसी नृसिंह की शक्ति को नारसिंही कहते हैं। ब्रह्मविद्या ही नारसिंही शक्ति है, इसी के प्रभाव से जीव नृसिंह अर्थात् स्वात्मविषयक यथार्थ ज्ञानवान् होता है। यह भी किसी आधर पर प्रकाशित नहीं होती, इस कारण वाहन-विहीन हैं अथवा केवल ज्ञान से मुक्ति लाभ नहीं होता, किन्तु ज्ञान एवं कर्म—इन दोनों ही से मोक्ष लाभ होता है।

□□□

सप्तमं कालरात्रि

प्रलयकाल में सम्पूर्ण संसार के जलमग्न होने पर भगवान विष्णु शेष शय्या पर योगनिद्रा में सो रहे थे। उस समय भगवान के कर्णकीट से उत्पन्न मधु और कैटभ नामक दो राक्षस ब्रह्मा को मारने के लिये तैयार हो गये। भगवान के नाभिकमल में स्थित प्रजापति ब्रह्मा ने असुरों को देखकर भगवान को जगाने के लिये एकाग्रहृदय से श्री हरि के कमल नयन स्थित योगनिद्रा की स्तुति की।

"हे देवि! तू ही इस जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करने वाली है, तू ही महाविद्या, महामाया, महामेधा, महास्मृति और महामोहस्वरूपा है, दारूणरात्रि कालरात्रि, महारात्रि और मोहरात्रि भी तू है। तूने जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और लय करने वाले साक्षात् विष्णु को भी योगनिद्रावश कर दिया है और विष्णु, शंकर एवं (मैं ब्रह्मा) शरीर ग्रहण करने को बाधित किये गये हैं। ऐसी महामाया शक्ति की स्तुति कौन कर सकता है? हे देवि! अपने प्रभाव से इन असुरों को मोहित कर मारने के लिए भगवान को जगा।"

इस प्रकार स्तुति करने पर वह महामाया भगवती भगवान के नेत्र, मुख, नासिका, बाहु तथा हृदय से बाहर निकलकर प्रत्यक्ष खड़ी हो गयीं। भगवान भी उठे और देखा कि दो भयंकर राक्षस ब्रह्मा जी को खाने के लिये उद्यत हो रहे हैं। ब्रह्मा की रक्षा के लिए स्वयं भगवान ने उनसे युद्ध किया। युद्ध करते-करते पांच हजार व्यातीत हो गए परन्तु वे राक्षस नहीं मरे। तब महामाया ने उन राक्षसों की बुद्धि कर दी, जिससे वे अभिमानपूर्वक विष्णु भगवान से कहने लगे कि "हम तुम्हारे युद्ध से अति प्रसन्न हुए हैं तुम इत्सित वर मांगो।" भगवान बोले—"यदि आप मुझे वर ही देना चाहते हैं तो यही वर दीजिए कि आप दोनों मेरे द्वारा मारे जायें।" मधु कैटभ ने 'तथास्तु' कहा और बोले कि जहां पृथ्वी जल से ढकी हुई हो वहां हमको नहीं मारना। अंत में भगवान ने अपनी जंघाओं पर रखकर चक्र से काट डाला। इस प्रकार देवकार्य सिद्ध करने के लिये उस सच्चिदानन्दस्वरूपिणी चितिशक्ति ने महाकाली का रूप धारण किया।

काली की मूर्ति शक्तितत्व की पूर्ण अभिव्यक्ति है। इसमें सृष्टि और संहार का कितना रहस्य छिपा हुआ है उसको पूर्ण व्यक्त नहीं किया जा सकता। काली ही विश्व की प्रसूति तथा जीव-जगत की भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनी है। मार्कण्डेय पुराण

में कहा है कि देवी नित्य अर्थात् उत्पत्ति विनाशरहित होने पर भी देवताओं की सिद्धि के लिए रूप विशेष धारण धराधाम में अवतीर्ण होती हैं—**देवानां कार्यसिद्ध्यर्थमाविर्भवति सा यदा। उत्पन्नेतितहा लोके सा नित्याभिधीयते** ***(सप्तशती 1/66)*** शुम्भ नामक दैत्य के वध के समय यही महाशक्ति के शरीर कोष से एक शिवा विर्निगत हुई थी एवं इसी कारण देवी कृष्णवर्ण होकर कालिका नाम को प्राप्त हुई थी—**तस्याविनिर्गतायां तु कृष्णाभूत् सापि पार्वती। कलिकेति समाख्याता हिमालय-कृतश्रया॥**

हम जानते हैं कि कालगर्भ के सारे भूतपदार्थों की उत्पत्ति होती है तथा कालगर्भ में ही सबका लय हो जाता है। इसी कारण कहा गया है—**कालःपचति भूतानि कालः संहरति प्रजाः।** विश्व-ब्रह्माण्ड काल के कवल में निपतित है। काल शक्ति अतिक्रम करने का सामर्थ्य जीव में नहीं है। अब यह प्रश्न है कि काली क्या है? काली किस तत्व का प्रतीक है। उत्तर है—जो काल के ऊपर प्रतिष्ठित है अर्थात् जो काल शक्ति के अनधीन और नित्यसिद्धा महाशक्ति, वही काली है जो काल जगत् का आधार है उसका आश्रय है काली।

काली की मूर्ति में जो संहार की कराल विभीषिका वर्तमान है उसे तो सभी स्वीकार करेंगे। श्मशान, शव, शिवा, जलती हुई चिता, नरमुण्ड, रुधिर आदि सारे भय पदार्थ कालिका के ध्यान में देखे जाते हैं। यह है प्रलय की भैरवी मूर्ति, ध्वंस भीषण चित्रा देवी की मूर्ति प्रलयकालीन मेघमाला के समान भयंकर कृष्णवर्णा **(महामेघप्रभा घोराम्)** है।

शिव पुराण के अनुसार आद्य देवी माँ दुर्गा का काली के रूप में अवतार, मधु और कैटभ दो असुरों का अंत करने के लिये हुआ था। कालिका पुराण में वर्णित एक कथा के अनुसार हिमालय पर अवस्थित मतंग मुनि के आश्रम में जाकर देवताओं ने महामाया की स्तुति की। स्तुति से प्रसन्न होकर मतंग-वनिता के रूप में भगवती ने देवताओं को दर्शन दिया और पूछा कि तुम लोग किसकी स्तुति कर रहे हो? उसी समय देवी के शरीर से काले पहाड़ के समान वर्ण वाली एक और दिव्या नारी का प्राकट्य हुआ। उस महातेजस्विनी ने स्वयं ही देवताओं की ओर से उत्तर दिया कि ये लोग मेरी स्तुति कर रहे हैं। वह दिव्या नारी काजल के समान कृष्णा थीं, इसलिये उनका नाम काली पड़ा। इनके बिना शिव भी संहार करने में असमर्थ हैं। काली का भी विनाश कर देने वाली होने के कारण 'कालविनाशिनी' कही गई हैं।

काली जी ओज, तेज, पराक्रम और विजय-वैभव की अधिष्ठात्री देवी हैं। ये रूपाकृति में महा भयानक हैं, किन्तु भक्तों का संकट दूर करने में सबसे आगे रहती हैं। संकटग्रस्त मनुष्य इनकी उपासना करके निर्भर और निरापद हो जाते हैं। यह योद्धाओं, वीर पुरुषों और संघर्षप्रिय जनों की उपास्य देवी हैं। युद्ध, आतंक, बीमारी,

दुर्घटना आपदा, शत्रुभय जैसे अवसरों पर इनकी आराधना करके विजय प्राप्त की जाती है।

आराधनोपचार विधि

(क) पञ्चोपचार विधि—1. गंध, 2. पुष्प, 3. धूप, 4. दीप, 5. नैवेद्य (इस उपचार विधि का प्रयोग विशेष परिस्थिति; जैसे—यात्रा समय, प्रवास, निर्धनता में सामान्य रूप से किया जाता है।)

(ख) दशोपचार विधि—1. पाद्य, 2. अर्घ्य, 3. आचमन, 4. स्नान, 5. वस्त्रनिवेदन, 6. गन्ध, 7. पुष्प, 8. धूप, 9. दीप, 10. नैवेद्य।

(ग) सोलहोपचार विधि—1. पाद्य, 2. अर्घ्य, 3. आचमन, 4. स्नान, 5. वस्त्र, 6. आभूषण, 7. गन्ध, 8. पुष्प, 9. धूप, 10. दीप, 11. नैवेद्य, 12. आचमन, 13. ताम्बूल, 14. स्तवपाठ, 15. तर्पण, 16. नमस्कार।

पूजा सामग्री रखने के स्थान

बायीं ओर—1. सुवासित (गुलाब या केवड़ा सुगंध से युक्त) जल से भरा पात्र, 2. घण्टा, 3. धूपबत्ती/अगरबत्ती, 4. तेल (तिल का) का दीपक बायीं ओर रखें।

दायीं ओर—घी का दीपक, 2. सुवासित जल से भरी नारियल की कटोरी या शंख या अन्य दूसरा पात्र।

सामने—1. कुमकुम (केशर), काली रोली और कपूर के साथ पिसा गाढ़ा चंदन, 2. पुष्प आदि अन्य सामान चावल के स्थान पर काले तिल भी प्रयोग कर सकते हैं।

कालरात्रि पूजा विधान

काली की उपासना प्रातःकाल 'श्री कृष्णा' या 'श्री काली' के रूप में, मध्याह्न में श्यामा काली के रूप में, शाम को सिद्धि काली के रूप में तथा रात्रि को 'कालरात्रि' के रूप में की जाती है। नीचे दिए गए प्रत्येक पूजन में—उपचार में **श्री काल्यै नमः** के स्थान पर निम्न प्रकार उच्चारण करना चाहिए—

प्रातःकाल में—श्री कृष्णायै नमः या श्रीकाल्यै नमः॥

मध्याह्न (दोपहर) में—ॐ श्यामाकाल्यै नमः॥

शाम के समय में—ॐ सिद्धिकाल्यै नमः॥

रात्रि काल में—ॐ कालरात्र्यै नमः॥

आचमन—

प्रातःकाल में—**ॐ गणेशाम्बिकायै नमः॥**
ॐ ह्रीं कृष्णायै नमः॥
ॐ क्रीं श्रीकाल्यै नमः॥

मध्याह्न में— **श्री गणेशाय नमः॥**
श्री श्यामाकाल्यै नमः॥
श्री महादेव्यै नमः॥

शाम को— **श्री गणेशाय नमः॥**
श्री सदाशिवाय नमः॥
श्री सिद्धिकाल्यै नमः॥

रात्रि में—**"ॐ कालरात्र्यै नमः॥"** का तीन बार उच्चारण करें।

उपरोक्त मंत्रों का समय के अनुसार उच्चारण कर आचमन करें। तदोपरान्त शिखा बंधन करें। आसन तथा भूमि पर जल गिराकर संकल्प करें।

आवाहन—माँ काली को निमंत्रित करना आवाहन है। हाथ में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें, फिर उस पुष्प को देवी काली के चरणों में अर्पित करें—

आइए माँ कालिके मन मंदिर में आइए।
काली कराल वदने भय पाप दूर भगाइए।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। कालीम् आवाह्यामि स्थापयामि॥ (पुष्प अर्पित करें।)

आसन—लाल या काले वस्त्र को चौकी पर बिछाकर चावल से अष्टदल आकृति बनाकर माता को आसन ग्रहण करने को आवाहित करें—

कृष्णचर्म का बना हुआ यह
मृग चर्म का है यह आसन।
कालिके माँ वरदायिनी
आओ विराजो मृगचर्मासन।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। आसनार्थे कृष्णवस्त्रं समर्पयामि।

कृष्ण वस्त्र पर जहां अष्टदल आकृति बनाई है उस पर माँ भगवती काली को स्थापित करें। निम्न मंत्रों से चार बार पाद्य, अर्घ्य, आचमन तथा स्नान हेतु जल अर्पित करें—

ॐ काल्यै नमः॥ पाद्यं समर्पयामि। (दोनों पैरों पर जल चढ़ायें।)

ॐ काल्यै नमः॥ अर्घ्य समर्पयामि। (दोनों हाथों को जल से धुलायें।)

ॐ काल्यै नमः॥ आचमनं समर्पयामि। (जल को अपनी अंजली में रखकर देवी के मुख से स्पर्श करें, पुनः हाथ धो लें।)

ॐ काल्यै नमः॥ स्नानं समर्पयामि। इस मंत्र से देवी को सुगंधित जल से स्नान करायें।

पञ्चामृत स्नान—दूध, दही, घी, बूरा और शहद का मिश्रित रूप पंचामृत होता है। देवी को निम्न मंत्र के द्वारा पंचामृत स्नान कराना चाहिए—

गोरस दधि गो नवनीत युत
मधु मिष्ठ समन्वित पंचामृत।
कृष्णवदने देवी चरण रखो
पंचामृत हो जाय चरणामृत।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान—पंचामृत स्नान के बाद जल से स्नान कराना शुद्धोदक स्नान है। शुद्धोदक जल में गुलाब की पंखुरी या गुलाबजल डाल लेना चाहिए।

शुद्धोदक विशेष प्रयोग—ऐसे व्यक्ति जिनके असमय बाल पक जाते हैं या सफेद हो जाते हैं उन्हें पंचामृत को इस प्रकार बनाकर स्नान कराना चाहिए—कुल दही का आधा दूध, दूध का आधा बूरा, बूरा का आधा भाग घी तथा घी के बराबर शहद को लेकर भगवती काली के सर्वांगों को स्नान करायें। मंत्र का उच्चारण करें, उसके उपरान्त जल में हिना के पुष्प डालकर शुद्धोदक स्नान करायें और पञ्चामृत तथा शुद्धोदक जल को निराहार पान करें तो बाल काले तथा मुलायत होते हैं।

वस्त्र—निम्न मंत्र से जल द्वारा अभिमंत्रित कर वस्त्रों को अपने दाहिने हाथ में रखकर निम्न मंत्र पढ़ें—

कञ्चुकी काली-काली तेरी सारी।
धारण करती काली मतवाली।।
लाया हूं यह झिलमिल सारी।
कर दो चिन्ता दूर हमारी।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। वस्त्रोपवस्त्रं कञ्चुकीयं च समर्पयामि। (वस्त्र या पांच कलावा सूत्र अर्पित करें, पुनः आचमन करायें।)

पादुकार्पण—निम्न मंत्र द्वारा भगवती को पादुका अर्पित करनी चाहिए। पादुका के स्थान पर कमल-पुष्प चढ़ाया जा सकता है—

जिन चरणों को धारण हृदय पर
शिव शंकर शम्भू ने ग्रहण किया।
उन चरणों को उत्तम पादुका
पहनाने को मैंने अरज किया।।

ॐ जगदम्बायै काल्यै नमः। चरणयोः पादुके समर्पयामि।

(माता भगवती काली के चरणों में पादुका अर्पित करें।)

पादुकार्पण विशेष—माँ काली के इस मंत्र द्वारा दो अत्यंत सिद्धिदायक प्रयोग हैं जो प्रसंगवश दिए जा रहे हैं—

स्थिर लक्ष्मी हेतु—इस मंत्र का उच्चारण करके एक कमल के ऊपर अपने द्वारा मास में कमाई गयी राशि का दसवां भाग रखकर पुनः एक दूसरा कमल उल्टा रखकर किसी लाल या काले वस्त्र से बांधकर काली के चरणों में रख देने से लक्ष्मी स्थिर हो जाती है। नवरात्र को बुधवार की सप्तमी इसके लिए विशेष फलदायी है।

क्रोध शान्ति के लिये—इस मंत्र का उच्चारण करके माँ भगवती काली के चरणों में एक विल्वपत्र रखकर और नेत्र बंद कर मात्र 2 या 5 बार निम्न मंत्र का उच्चारण करने पर क्रोध तत्काल समाप्त हो जायेगा। यह अनुभूत प्रयोग है। मंत्र है—**ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट्।**

सौभाग्यसूत्र—अपने हाथ में कलावा लेकर उसे हार का रूप दें। उस पर जल से अभिमंत्रण निम्न मंत्र से करें—

सुख-सौविध्य की बृद्धि करती
देवी काली जगदम्बा।
सौभाग्य सूत्र धारण कीजै
स्वर्णयुता माँ श्री अम्बा।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि॥ अभिमंत्रित किए गए कलावा सूत्र को माँ के गले में धारण करायें (पुरुष माँ के दाहिने हाथ में पहनायें।)

चन्दन—काली को लाल चंदन अतिप्रिय है अतः लाल चंदन का प्रयोग करना चाहिए अथवा कुमकुम में कपूर डालकर इस मंत्र को बोलें—

कस्तूरी मृग की नाभि से
गंध मिली ये कस्तूरी।
केशर चूर्ण समर्पित तुमको
माँ इच्छा करना मेरी पूरी।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। भाले चन्दनं समर्पयामि॥

(अपनी अनामिका अंगुली से काली के मस्तक पर तिलक करें।)

कुमकुम—हाथ में रोली लेकर निम्न मंत्र से पुनः मस्तक पर तिलक लगायें—

जाती कुसुमों-सा रंग है जिसका
कुमकुम बनाया है आला।
कालरात्रि माँ काली देवी
ले आया तेरा लाला।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। मस्तके कुंकुमं समर्पयामि॥

अक्षत—निम्न मंत्र से मस्तक पर अक्षत चावल लगायें—

क्षत न हो कभी ये गुण मेरे
ये वर दो देवी वरदानी।
अक्षत चाबल अर्पण करता
काली अम्बा जय कल्याणी।।

श्रीमहादेव्यै काल्यै नमः। मस्तके अक्षतान् समर्पयामि॥

मस्तक पर अनामिका मध्यमा तथा अंगूठे के द्वारा मस्तक पर चावल रखें। अथवा हथेली के मध्य चावल रखकर मस्तक पर हथेली से इस प्रकार लगायें कि अंगूठा मांग भरने के स्थान को स्पर्श करे।

सिन्दूर—सफेद तथा लाल गुलाल में हल्दी का चूर्ण मिश्रित करके सिंदूर तैयार करके निम्न मंत्र से अभिमंत्रित करें—

माँ काली तेरे मस्तक पर सिंदूर समर्पित हो मेरा।
सिंदूर रेख से जीवन में कल्याण रहे होता मेरा।।

ॐ जगदम्बायै काल्यै नमः। सौभाग्यपरिमल-द्रव्याणि समर्पयामि॥ (इसी मंत्र से रोली या बिंदी भी लगा सकते हैं।)

कज्जल (काजल)—

नेत्रज्योति की जो है वर्धक कृष्ण कालिमा लाया हूं।
काजल ग्रहण करते कालिके तुझसे लालिमा पाया हूं।।

ॐ भगवत्यै काल्यै नमः। अक्षिभ्यां कज्जलं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से माँ काली की आंखों में चांदी या सोने की सलाई से काजल लगायें। अथवा अपने दाहिने हाथ की मध्यमा अंगुली से दाहिनी आंख तथा अनामिका से बायीं आंख में काजल लगायें।)

सुवासित तेल (सैन्ट)—

नाना सुगंधित पुष्पों से
बना सुगंधित द्रव है ये।
सुवासित तैल समर्पित तुमको
जीवन सर्व समर्पित है ये।।

ॐ भागवत्यै काल्यै नमः। सर्वासु अंगेषु विलेपनार्थं अन्तरं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से माँ भगवती को क्रमशः कान, गला, बगल, नाभि, पैरों पर इत्र लगायें पुनः सर्वांग पर इत्र का समर्पण करें।)

पुष्पमाला—

जो राशि मुझको दी तुमने
उस राशिवत् पुष्प समर्पित तुमको है।
काली माँ तुम करालवदना
बस आसरा तुम्हारा मुझको है।।

ॐ जगदम्बायै काल्यै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि॥ (इस मंत्र से पुष्प और पुष्पमाला चढ़ायें।) यद्यपि भगवती को अनेक पुत्र चढ़ाए जाते हैं तथापि कुछ विशेष रंगों के पुष्प या पत्ते चढ़ाने से तात्कालिक ग्रहों से कष्ट का निवारण होता है। नीचे ग्रह और राशि के अनुसार तालिका दी गयी है—

मेष तथा वृश्चिक राशि वालों के लिए—

सूर्य—लाल या नारंगी पुष्प अथवा आक के पत्ते।

चन्द्र-शुक्र—सफेद पुष्प।

बुध-केतु—तुलसीदल या रुद्राक्ष।

गुरु—पीले तथा लाल पुष्प (फल में केला न चढ़ायें)।

शनि-राहु—नीले या बैंगनी पुष्प। छोंकरा फल, काले तिल चढ़ायें।

वृष तथा तुला राशि वालों के लिए—

सूर्य—लाल, नारंगी रंग के पुष्पों के साथ सफेद पुष्प भी चढ़ाएं।

चन्द्र—सफेद पुष्पों के साथ चावल भी चढ़ायें।

मंगल—लाल वस्त्र या लाल रंग की टोकरी में रखकर लाल पुष्पों के साथ सफेद पुष्प भी लें।

बुध-केतु—तुलसीदल, मंजरी, लाल पुष्प।

गुरु—लाल तथा पीले पुष्प अर्पित करें।

शनि-राहु—तुलसीदल, मंजरी, लाल पुष्प, विल्वपत्र।

मिथुन तथा कन्या राशि वालों के लिए—

सूर्य—लाल, नारंगी रंग के पुष्पों के साथ सफेद पुष्प भी चढ़ाएं।

चन्द्र—सफेद पुष्पों के साथ चावल भी चढ़ायें।

मंगल—लाल वस्त्र या लाल रंग की टोकरी में रखकर लाल पुष्पों के साथ सफेद पुष्प भी लें।

शुक्र-केतु—तुलसीदल, मंजरी, लाल पुष्प।

गुरु—लाल तथा पीले पुष्प अर्पित करें।

शनि-राहु—तुलसीदल, मंजरी, लाल पुष्प, विल्वपत्र।

कर्क राशि वालों के लिए—

सूर्य—लाल, गुलाबी या नारंगी के साथ सफेद पुष्प।

मंगल—लाल पुष्प के साथ सफेद पुष्प।

बुध-केतु—चित्र-विचित्र (रंग-बिरंगे ऐसे पुष्प जिनमें कम-से-कम दो रंग हों) के साथ सफेद पुष्प।

गुरु—पीले पुष्पों के साथ सफेद पुष्प पत्ते की थाली में रखकर।

शुक्र—सफेद पुष्प।

शनि-राहु—पत्ते के दोने में दूध से धुले रंग-बिरंगे पुष्प।

सिंह राशि वालों के लिए—

चंद्र-शुक्र—सफेद पुष्प के साथ नारंगी पुष्प आक के दोने में रखकर।

मंगल—लाल पुष्प के साथ नारंगी पुष्प।

बुध-केतु—नारंगी या लाल पुष्पों के साथ तुलसी मंजरी और दूब।

गुरु—पीले तथा लाल पुष्प।

शनि-राहु—नीले, बैंगनी पुष्पों को छोड़कर रंग-बिरंगे पुष्प।

धनु तथा मीन राशि वालों के लिए—

सूर्य—लाल, नारंगी तथा पीले पुष्प।

चन्द्र-शुक्र—सफेद पुष्पों के साथ पीले पुष्प।

मंगल—लाल, नारंगी गुलाबी पुष्प के साथ मटमैला पुष्प।

बुध-केतु—तुलसी मंजरी के साथ लाल या पीला पुष्प।

शनि-राहु—तुलसी मंजरी के साथ सफेद पुष्प या पीला पुष्प।

मकर तथा कुम्भ राशि वालों के लिए—

सूर्य—नीले, काले तथा चितकबरे पुष्प न चढ़ायें। सिंदूर लगा रुद्राक्ष चढ़ायें।

चन्द्र-शुक्र—सफेद पुष्प न चढ़ायें। शेष सुविधानुसार।

मंगल—लाल पुष्प के साथ मोगरा का सेंट चढ़ायें।

बुध-केतु राहु—केवड़े का सेन्ट या शंखपुष्पी का फूल चढ़ायें।

गुरु—पीले फूलों के साथ तुलसी मंजरी चढ़ायें।

आलोक—मेष तथा वृश्चिक राशि वाले 7, वृष तथा तुला राशि वाले 20, मिथुन तथा कन्या राशि वाले 17, कर्क राशि वाले 10, सिंह राशि वाले 5, धनु तथा मीन राशि वाले 16, कुम्भ तथा मकर राशि वाले 19 पुष्प ग्रह के अनुसार चढ़ायें, तो विशेष लाभ मिलता है। प्रत्येक पुष्प के साथ निम्न मंत्र का उच्चारण करें—

ह्रीं श्रीं क्रीं परमेश्वरि कालिके ह्रीं श्रीं क्रीं स्वाहा। पुष्पं समर्पयामि।

धूपबत्ती—माँ भगवती काली को अपने दाहिने हाथ को बायीं ओर ले जाकर पुनः ऊपर की ओर ले जाते हुए वृत्त क्रम में धूपबत्ती घुमाना चाहिए। घुमाते समय एक बार मुख पर, तीन बार मस्तक पर, तीन बार हृदय पर, चार बार चरणों में घुमाकर, पांच या सात बार सम्पूर्ण प्रतिमा के चारों ओर घुमाना चाहिए, उसके बाद माँ के बायीं ओर स्थापित करना चाहिए।

दीपक—जमीन या पटड़े पर स्वात्विक (卐) बनाकर उस पर कुछ चावल

रखकर पहले दीपक अन्यत्र जलायें फिर चावल के ऊपर रखें। फिर चावल, पुष्प तथा चंदन के साथ दीपक का पूजन करें। पुनः हाथ धो लें।

धूप—गाय के गोबर से बने उपले को जलाकर माँ भगवती का ध्यान करके घी में लौंग का जोड़ा भिगोकर अग्नि को समर्पित करें (गाय के गोबर में जो गोबर स्वतः ही सूखकर उपला बन जाता है उसका प्रयोग उत्तम होता है। इस प्रकार के उपले को गोसा या उपल खण्ड भी कहते हैं, क्योंकि इस प्रकार के उपले की भस्म से बच्चों को लगी नजर का असर समाप्त हो जाता है।) लौंग का जोड़ा नैष्टिक ब्रह्मचारी को पांच, ब्रह्मचारी को एक तथा गृहस्थी को दो-दो जोड़े चढ़ाना चाहिए। लौंग चढ़ाते समय **'ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट्'** का उच्चारण करना चाहिए। पुनः निम्न मंत्र से माँ भगवती काली को ऋतुफल या अनार अर्पण करना चाहिए। काली को अकेला फल या केवल एक-जैसे दो फल नहीं भेंट करने चाहिएं। यदि एक-जैसे दो फलों की व्यवस्था है तो एक सुपारी के साथ भेंट करें—

ऋतुफल समर्पित हो देवी
नाना फल प्राप्त करो अम्बे।
जीवन स्वच्छ करो मेरा
हे कालरात्रि काली अम्बे।।

श्रीजगदम्बायै काल्यै नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि॥ (यहां ध्यान दें यदि व्रत नहीं रखा है तब पहले भोजन की थाली में मोहनी भोग लगायें, तब फल अर्पित करना चाहिए।)

ताम्बूल—

लौंग, इलायची का सुंदर बीड़ा
रक्त जिह्वा करता जो काली।।
दर तेरे लेकर आया हूं
पान करो मां मतवाली।।

श्री जगदम्बायै काल्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि। (इस मंत्र से इलायची, लौंग, सुपारी तथा जायफल के साथ पान निवेदन करें।)

ध्यान—**एकवेणी जपाकर्णपुरा नाना खरास्थिता।**
लम्बोडी कर्णिकाकर्णी तैलाभ्यक्तशरीरणि॥
वामपदोल्लसल्लोहलताकण्टक भूषणा।
वर्धनमूर्धध्वजा कृष्णा कालरात्रिर्भवगरी॥

हाथ में राशि के अनुसार पुष्प लेकर (देखें शैलपुत्री पूजन में) अथवा लाल पुष्प लेकर माँ भगवती काली का उपरोक्त मंत्र से ध्यान करें।



कवच (केवल स्त्रियों के लिए)—पीली सरसों लेकर अपने चारों ओर डालते हुए इस मंत्र का उच्चारण करें—

ॐ क्लीं में हृदयं पातु पादौ श्रींकालरात्रि।
ललाटे सततं पातु तुष्टग्रह निवारिणी॥
रसनां पातु कौमारी, भैरवी चक्षुषेर्भम।
कटौ पुष्ठे महेशानी, कर्णो शंकरभामिनी॥
वर्जितानी तु स्थानाभि यानि च कवचेन हि।
तानि सर्वाणि मे देवी सततंपातु स्तम्भिनी॥

भगवती कालरात्रि के इस कवच को करने से अग्निभय, आकाशभय तथा भूत-प्रेत-पिशाच स्मरण मात्र से भाग जाते हैं तथा साधना में सफलता मिलती है।

बड़ा श्रीकाली कवच—मंत्र साधना में इस कवच का प्रयोग करना चाहिए। नित्य साधना में केवल उपरोक्त कवच का पुरुष पाठ कर सकते हैं।

(***विशेष***—काली यंत्र के साथ नीचे दिये गये कवच को रखने से या लिखित रूप में धारण करने से स्व-रक्षा तथा शत्रुनाश की सिद्धि प्राप्त होती है।)

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

कैलाशशिखरासीनं शंकर वरदं शिवम्।
देवी पप्रच्छ सर्वज्ञं देवदेवं महेश्वरम्॥

॥ देव्युवाच ॥

भगवान् देवदेवेश देवानां मोक्षद प्रभो।
प्रब्रूहि मे महाभाग गोप्यं यद्यपि च प्रभो॥
शत्रूनां येन नाशः स्यादात्मनो रक्षणं भवेत्।
परमैश्वर्य्यमतुलं लभेद् येन हि तं वद॥

॥ *भैरव उवाच* ॥

वक्ष्यामि ते महादेवि सर्वधर्म्महिताय च।
अद्भुतं कवचं देव्यास्सर्वरक्षाकरं नृणाम्॥
सर्वोऽरिष्टप्रशमनं सर्वोपद्रवनाशनम्।
सुखदं भोगदं चैव वश्याकर्षणमद्भुतम्॥
शत्रूणां संक्षयकरं सर्वव्याधिनिवारणम्।
दुःखिनो ज्वरिणश्चैव स्वमीष्टप्रहतास्तथा॥
भोगमोक्षप्रदं चैव कालिकाकवचं पठेत्।

विनियोग—

अस्य श्रीकालीकवचस्य श्रीभैरवऋषिर्गायत्रीछंदः, श्रीमालिका देवता ममाभीष्टसिद्धये पाठे विनियोगः।

करान्यास—

ॐ क्रां अंगुष्ठाभ्यां नमः। (अंगूठे आपस में मिलाएं।)
ॐ क्रीं तर्जनीभ्यां नमः। (तर्जनी अंगुलियां आपस में मिलाएं।)
ॐ क्रूं मध्यमाभ्यां नमः। (मध्यमा अंगुलियां मिलाएं।)
ॐ क्रैं अनामिकाभ्यां नमः। (अनामिका अंगुलियां मिलाएं।)
ॐ क्रौं कनिष्ठाभ्यां नमः। (कनिष्ठा अंगुलियां मिलाएं।)
ॐ कः करतल पृष्ठाभ्यां नमः। (दोनों हाथों के करतल तथा पृष्ठतल स्पर्श करें।)

हृदयादिन्यास—

ॐ क्रां हृदयाय नमः। (हृदय का स्पर्श करें।)
ॐ क्रीं शिरसे स्वाहा। (मस्तक का स्पर्श करें।)
ॐ क्रूं शिखाय वषट्। (शिखा का स्पर्श करें।)
ॐ क्रै कवचाय हुम्। (स्कंधों का स्पर्श करें।)
ॐ क्रौ नेत्राभ्यां वषट्। (अनामिका तथा तर्जनी से नेत्रों का स्पर्श करें।)
ॐ क्रः अस्त्राय फट्। (हाथ सिर से घुमाकर चुटकी या ताली बजायें।)

ध्यान—

ध्यायेत् कालीं महामायां त्रिनेत्रां बहुरूपिणीम्।
चतुर्भुजां ललज्जिह्वां पूर्णचंद्र निभाननाम्॥
नीलोत्पलदलप्रख्यां शत्रुसंघविदारिणीम्॥
नरमुंड तथा खड्गं कमलं च वरं तथा।
विभ्राणां रक्तवसनां दंष्ट्रया घोररूपिणीम्॥
अटाट्टहास निरतां सर्वदा च दिगम्बराम्।
शवासनस्थितां देवीं मुंडमाला विभूषिताम्॥

मूल कवच-पाठ—

इति ध्यात्वामहादेवीं पुनस्तु कवचं पठेत्।
ॐ कालिका घोररूपाद्या सर्वकामप्रदा शुभा॥
सर्वदेव-स्तुतां देवी शत्रुनाशं करोतु मे।
ह्रीं ह्रीं स्वरूपिणीं चैव ह्रीं ह्रीं हूं रूपिणीं तथा॥
ह्रीं ह्रीं क्षें क्षें स्वरूपा-सा सदा शत्रून्विदारयेत्।
श्रीं ह्रीं ऐं रूपिणी देवी भवबंधविमोचिनी॥
हसकल ह्रीं ह्रीं रिपून् सा हरतु देवी सर्वदा।
यथा शुंभो हतो दैत्यों निशुंभश्च महासुरः॥
वैरिनाशाय वन्दे तां कालिकां शंकरप्रियाम्।
ब्राह्मी शैवी वैष्णवी च वाराही नारसिंहका॥
कौमार्यैन्द्री च चामुंडा खादयन्तु मम द्विषः॥
सुरेश्वरी घोररूपा चंड-मुंड विनाशिनी॥

कालरात्रि के जपनीय मंत्र

***पञ्चाक्षर कालीमंत्र—*ॐ ह्रीं त्रीं हुं फट्**

***भद्रकाली मंत्र—*ॐ ह्रौं कालि महाकाली किलि फट् स्वाहा।**

कालरात्रि के रूप में सप्तम कन्या का पूजन—कालरात्रि के रूप में सप्तम नवरात्र को या नवरात्र की अन्तिम तिथि को सप्तम कन्या के रूप में 'कालिका' पूजन किया जाता है। 'कालिका' के लिए 6 वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। निम्न मंत्र से 'कालिका' को भोज्य प्रदार्थ अर्पित करें—

कामाचारां शुभां कान्तां कालचक्रस्वरूपिणीम्।
कामदां करुणोदारां कालिकां पूजयाम्हम्॥

भगवती काली आद्या देवी हैं। इनका कुछ मत के अनुसार घर में वास नहीं किया जाता है। वैसे भी काली श्मशान विहारिणी हैं अतः दुर्गा की प्रतिमा में इनकी उपासना कर लेनी चाहिए।

श्री काली चालीसा

॥ दोहे ॥

जय जय सीता राम के, मध्य वासिनी अब।
देहु दरश जगदंब अब, करो न मातु विलंब॥
प्रातःकाल उठ जो पढ़े, दुपहरिया या शाम।
दुख दरिद्रता दूर हों, सिद्ध होंय सब काम॥
जय काली कंकाल मालिनी, जय मंगला महा कपालिनी।
रक्तबीज वध कारिणी माता, सदा भक्तन को सुखदाता।

शिरो मालिका भूषित अंगे, जय काली मधु मध्य मतंगे।
हर हृदयारविंद सुबिलासिनी, जय जगदंब सकल दुखनाशिनी।
ह्रीं काली श्री महाकाली, क्रीं कल्याणी दक्षिण काली।
जय कलावती जय विद्यावती, जय तारा सुंदरी जय महामती।
देहु सुबुद्धि हरहु सब संकट, होहु भक्त के आगे परगट।
जय ओंकारे जय हू कारे, महाशक्ति जय अपरंपारे।
कमला कलियुग दर्प विनाशिनी, सदा भक्तजन के भयनाशिनी।
अब जगदंब न देर लगावहु, दुख दरिद्रता मोर हटावहु।
जयति कराल काल की माता, कालानल समान द्युतिगाता।
जय शंकरी सुरेशि सनातनि, कोटि सिद्धि कविमातु पुरातन।
कर्पिदनी कलिकल्मष मोचन, जय विकसित नवनलिन विलोचनि।
आनंदा आनंद निधाना, देहे मातु मोहिं निर्मल ज्ञाना।
करुणामृत सागर कृपामयी, होहु दुष्टजन पर अब निर्दयी।
सकल जीव तोहिं समान प्यारा, सकल विश्व तोरे सहारा।
प्रलयकाल में नर्तनकारिणी, जगजननि सब जग की पालिनी।
महोदरी माहेश्वरी माया, हिमगिरि सुता विश्व की छाया।
जय स्वच्छंद मराद धुनिमाहीं, गर्जत तूहिं और कोउ नाहीं।
स्फुरति मणि गणकार प्रताने, तारागण तू व्योम विताने।
श्रीराधा संतन हितकारी, अग्निनसमान अतिदुष्ट विदारणि।
धूम्रविलोचन प्रण विमोचनि, शुंभनिशुंभ मद निबर लोचनि।
सहस्त्र भुजी सरोरुह मालिनी, चामुण्डे मरघट की वासिनी।
खप्पर मध्य सुशोणित साजी, मारेउ माँ महिषासुर पाजी।
अंब अंबिका चण्ड चंडिका, सब एके तुम आदिकालिका।
अजा एक रूपा बहु रूपा, अकथ चरित्र और शक्ति अनूपा।
कलकत्ते के दक्षिण द्वारे मूरति तौर महेश अगारे।
कादंबरी पानरत श्यामा, जय मातंगि काम के धामा।
कमलासनवासनि कमलायनि, जयश्याम जय-जय श्यामायनि।
रासरते नवरसे प्रकृतिहे, जयति भक्त उर कुमति सुमतिहे।
कोटि ब्रह्म-शिव-विष्णु कर्मदा, जयति अहिंसा धर्म जन्मदा।
जल-थल-नभमंडल में व्यापिनी, सौदामिनी मध्य अलापिनी।
झनना तच्छुमरनि रिननादिन, जय सरस्वती वीणावादनि।
ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै, कलित गले कोमल रुण्डायै।
जय ब्रह्माण्ड सिद्धकवि माता, कामाख्या औ काली माता।
हिंगलाज विंध्याचल वासिनी, अट्टहासिनि अघ नाशिनि।
कितनी स्तुति करो अखण्डे, तू ब्रह्माण्ड शक्ति जितखण्डे।

यह चालीसा जो जब गावे, मातु भक्त वांछित फल पावे।
केला और फल फूल चढ़ावे, मांस खून कछु नहीं छुवावे।
सबकी तुम समान महतारी, काहे कोई बकरा को मारी।

॥ दोहा ॥

सब जीवों के जीव में, व्यापक तू ही अंब।
कहत भक्त सब जगत में, तोरे सुत जगदंब॥

भगवती माँ काली की आरती

ओ अंबे, तू है जगदंबे काली, जय दुर्गे खप्पर वाली।
तेरे ही गुण गावें भारती, ओ मैया हम सब उतारें तेरी आरती॥
तेरे जगत के भक्त जनों पर पीर पड़ी है भारी,
दानव दल पर टूट पड़ो माँ करके सिंह सवारी,
सौ-सौ सिंहों-सी तू बलशाली, है अष्ट भुजाओं वाली,
दुष्टों को तू ही ललकारती, ओ मैया...।

माँ-बेटे का है इस जग में बड़ा ही निर्मल नाता,
पूत कपूत सुने हैं पर न माता सुनी कुमाता,
सब पर करुणा दर्शाने वाली, सबको हरशाने वाली,
नैया भंवर से उबारती, ओ मैया...।

नहीं मांगते धन और दौलत, न चांदी न सोना,
हम तो मांगें माँ तेरे मन में एक छोटा-सा कोना,
सब पर अमृत बरसाने वाली, विपदा मिटाने वाली,
सतियों के सत को संवारती, ओ मैया...।

आदि शक्ति भगवती भवानी, हो जग की हितकारी,
जिसने याद किया आई माँ, करके सिंह सवारी,
मैया करती कृपा किरपाली, रखती जन की रखवाली,
दुष्टों को पल में माता मारती, ओ मैया...।

भक्त तुम्हारे निशदिन मैया, तेरे ही गुण गावैं,
मनवांछित वर दे दे इनको, तुझसे ही ध्यान लगावैं,
मैया तू ही वर देने वाली, जाय न कोई खाली,
दर पै तुम्हारे माता मांगती, ओ मैया...।

चरण-शरण में खड़े तुम्हारी, ले पूजा की थाली,
वरद हस्त सर पर रख दो, माँ संकट हरने वाली,
मैया भर दो भक्ति रस प्याली, अष्ट भुजाओं वाली,
भक्तों के कारज तू ही सारती, ओ मैया...।

मंत्र-प्रकरण—माता काली समस्त प्रकार को रोगों, उपद्रवों तथा भूतादि द्वारा किए गए उपद्रवों को दूर करने में समर्थ हैं। वे समस्त विश्व का कल्याण करती हैं। नीचे सप्तमी तिथि को विशेष फलदायी मंत्रों को दिया जा रहा है—

सामूहिक कल्याण के लिए—जगज्जननी माँ काली समस्त चराचर प्राणियों का कल्याण करती हैं। इस मंत्र द्वारा चराचर जीवों के कल्याण की कामना करने से भगवती महाकाली उसका कल्याण करती हैं। नीचे दिए गए मंत्र का चैत्र अथवा आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी से आने वाले कृष्ण पक्ष की सप्तमी तक प्रतिदिन 21 माला का जप किया जाता है—

देव्या यया तदमिदं जगदात्मशक्त्या
निश्शेष देवगण शक्तिसमूह मूर्त्या।
तामम्बिकामाखिल-देव महर्षि पूज्यां
भक्त्या नताःस्म विदधातु शुभानि सा नः॥

रोगनाशक मंत्र—रोगी के रोग के प्रभाव के अनुसार इस मंत्र का संकल्प लेकर इस मंत्र का जप किया जाता है। इस मंत्र का कम से कम 11 माला प्रतिदिन जप करना चाहिए। संकल्पित संख्या का दशांश गिलोय या काली मिर्च सामग्री में डालकर हवन का दशांश तर्पण तथा मार्जन करना चाहिए।

रोगानशेषान पहंसि तुष्टा रुष्टा तु कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वामाश्रितानां न विपन्नराणां त्वामाश्रिता ह्याश्रयतां प्रयान्ति॥

(अथवा)

एक मोती, शंख एवं सात गोमती चक्र काले तिल की ढेरी पर रखकर साधक उत्तर दिशा की ओर मुख करके बैठ जाये। तत्पश्चात् स्फटिक अथवा रुद्राक्ष की माला से जप करे। आगामी पूर्णिमा तक 108 माला पूर्ण करने से असाध्य रोग दूर हो जाते हैं। माला जप उपरोक्त मंत्र से करें।

पितृदोष निवारण—घर की शांति नष्ट हो जाने पर निम्न मंत्र का पाठ करें—शांति पूर्ववत् स्थापित हो जायेगी—

"ॐ श्रीं सर्वपितृ निवारणाय क्लेशं दन दन सुख शांति देहि देहि फट् स्वाहा॥"

गृह कलह-मुक्ति प्रयोग–रुद्राक्ष की माला से सप्तम (सातवीं) नवरात्र में 108 बार मंत्र पाठ करें–

धां धीं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वागधीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देव शां शीं शूं में शुभं कुरु॥

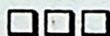
उक्त काली मंत्र का पाठ करने से गृह कलेश दूर होता है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं है।

सम्मोहन मंत्र–निम्न मंत्र का प्रयोग हकीक की माला से प्रतिदिन 21 माला जपकर सम्मोहन किया जा सकता है। सम्मोहन का प्रयोग तभी लाभदायक है, जबकि कल्याणकारी हो। अकार्य हेतु इसका प्रयोग नहीं करना चाहिए। मंत्र इस प्रकार है–

समोहिनी महाविद्ये जंभय स्तम्भय मोहय आकर्षणं पालय महा सम्मोहिनीं ठः।

कालरात्रि (काली) के वाहन का रहस्य

सप्तम शक्ति ऐन्द्री है। हस्तेन्द्रिय के अधिपति का इन्द्र है इस हेतु इन्द्रियाधिष्ठित चैतन्य वर्ग के अधिपति को इन्द्र कह सकते हैं। इनका नाम गजराज ऐरावत है। ईर् धातु का अर्थ गति या वेग है अतः 'रावान्' शब्द का अर्थ गति विशिष्ट होता है। रावान् सम्बंधी वस्तु को ऐरावत कहते हैं। यह ऐरावत ऐन्द्री का वाहन है। इन्द्र की शक्ति तडित् शक्ति है इसलिए तड़ित शक्ति ही ऐन्द्री है।



अष्टमं महागौरी

नारी शक्ति के रूप में पूजनीय महागौरी देवी की आठवीं मूर्ति के रूप में स्थापित है। भगवान शिव को पतिरूप में प्राप्त करने के लिए पर्णकुटी में रहकर कठिन तपस्या की और भगवान शिव को प्राप्त किया। महागौरी का स्वरूप गौरवर्ण है। नेत्रों से पुत्रों (सांसारिक प्राणियों) के लिए सदैव अमृतरूपी प्रेम बरसता है। जो प्राणी उस प्रेम को प्राप्त करने के लिए दरबार तक पहुंचता है और महागौरी के चरणों का ध्यान करता है उसे भौतिक सुखों की प्राप्ति तो होती ही है परलोक में भी वह उत्तम स्थान प्राप्त करता है।



एक समय मर्त्यलोक में मानवों द्वारा यज्ञ-यज्ञादि कर्मों के न होने से इन्द्रादि देव चिंतित हुए। ब्रह्मदेव के आदेशानुसार उन लोगों ने श्री महालक्ष्मी की आराधना की। श्री महालक्ष्मी ने अपने पुत्र कामदेव को देवकार्य में सहायता के लिए भेजा। कामदेव से और भूलोकाधिपति राजा वीरव्रत के सैनिकों से घोर युद्ध हुआ था।

कामदेव ने सबको भगाया। राजा वीरव्रत ने इस आपत्ति के शमनार्थ शंकर जी की आराधना की। शंकर जी से विजयश्री-प्राप्ति का वरदान पाकर राजा ने कामदेव से युद्ध करते हुए शंकर-प्रेषित त्रिशूलात्मक बाण कामदेव पर चलाकर उसको मार डाला। लक्ष्मी के दूतों ने कामदेव का निश्चिष्ट शरीर लक्ष्मी के पास पहुंचाया। लक्ष्मी ने श्री त्रिपुराम्वा प्रसाद से अमृत द्वारा उसको पुनरुज्जीवित किया। शंकर के प्रभाव से अपना पराजय तथा मृत्यु होने का वृत्तान्त सुनकर उसी क्षण कामदेव के मन में शंकर जी के प्रति द्वेषग्रन्थि पड़ गयी। त्रिपुराम्बा की आराधना से बल संचय कर शंकर ज़ी को हटाने की कामदेव ने मन में प्रतिज्ञा की। इतने ही में श्री महालक्ष्मी ने त्रिपुराम्बा की प्रार्थना की। तद्नुसार त्रिपुराम्वा द्वारा प्रेषित गौरी वहां पर प्रकट हुई। श्री महालक्ष्मी नें कामदेव की पराजय तथा प्रतिज्ञा आदि का वृत्तान्त गौरी को सुनाकर उपाय पूछा। गौरी ने लक्ष्मी तथा कामदेव को समझाया कि शंकर जी सर्वश्रेष्ठ हैं उनसे स्पर्धा करना योग्य नहीं है; उनकी हीं आराधना कर अपना अभीष्ट प्राप्त करना उचित है।

गौरी की उक्ति सुनकर कामदेव रुष्ट हो गया और शंकर जी को जीतने का अपना अभिप्राय उसने प्रकट किया। यह सुनकर गौरी ने क्रुद्ध होकर—"तुम शिवजी के द्वारा दग्ध होंगे।" ऐसा कामदेव को शाप दिया। अपने प्रिय पुत्र को गौरी ने शाप दिया, यंह सुनकर महालक्ष्मी ने गौरी को शाप दिया, "तुम भी पति-निन्दा सुनकर दग्ध होंगी।" यह सुनकर गौरी ने भी लक्ष्मी को शाप दिया—"तुम पति-विरह का दुःख तथा सपत्नियों से क्लेश प्राप्त करोगी।" अनन्तर लक्ष्मी और गौरी में युद्ध आरम्भ हुआ। परस्पर के प्रहार से दोनों मूर्च्छित होने लगीं। ब्रह्मा और सरस्वती की मध्यस्थता से किसी तरह यह युद्ध शान्त हुआ। शिवजी के जीतने की अभिलाषा से कामदेव ने अपनी माता लक्ष्मी से त्रिपुराम्बा के सौभाग्याष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र उपदेश प्राप्त किया। मन्दराचल की गुहा में बैठकर उसने आराधना आरम्भ की। भगवती ने प्रसन्न होकर प्रत्यक्ष दर्शन दिया। 'हे काम! आज से तुम अजेय हुए' ऐसा कहकर श्री माताजी ने अपने धनुःशरों से धनुःशर उत्पन्न किए और कामदेव को दिए।

दक्ष यज्ञ में पतिनिन्दा श्रवण कर भस्मीभूत गौर नमोरूप में स्थित रहीं। हिमाचल की आराधना से प्रसन्न होकर गौरी रूप में उसकी कन्या हुईं।

तारकासुर वध में शिवपुत्र को सेनापति समझकर इन्द्र ने शिवतपो भंग करने के लिए काम को आज्ञा दी। गौरी के समक्ष शिवजी ने अपने तृतीय नेत्र से काम का दाह किया था।

भगवती महागौरी वृषभ की पीठ पर विराजमान हैं। इनके मस्तक पर चन्द्र का मुकुट है। मणिकान्ति मणि के समान कान्ति वाली अपनी चार भुजाओं में शंख, चक्र-धनुष और बाण लिये हुए हैं, जिनके कानों में रत्नजटित कुण्डल झिलमिलाते हैं, ऐसी भगवती गौरी हैं।

गौरी पूजा विधान

पूर्व में दिये गये स्थान के आधार पर समस्त पूजा सामग्री यथास्थान रखें। आसन पर प्रांमुख होकर बैठें। जल से प्रोक्षण कर शिखा बांधें। तिलक लगाकर आचमन एवं प्राणायाम करें। संकल्प करें। हाथ से फूल लेकर अञ्जलि बांधकर श्री जगदम्बा गौरी की पूजा करें।

आवाहन–

संकर सुमन है तो सुमति समान संग,
सिव जो सुमन है सुगंध सुखदा सी तू।
कामतरु कंत है तो कामलतिका 'वशिष्ठ'
कामरिपु कंज है तो मधुपी पियासी तू।।
तरनी त्रिलोचन मरीचि-रुचिका सी चंड,
चंद्रचूड चंद्र है तो चारु चंद्रिका सी तू।
सुख के समंद-संभू सांति सरिता सी सुद्ध,
ज्ञान है गिरीश सक्ति! भक्ति-मुक्तिदा सी तू।।

ॐ भूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः, गौरीमावाहयामि, स्थापयामि पूजयामि च।

इस मंत्र से गौरी का आवाहन करें। यदि प्रतिष्ठित प्रतिमा हो तो **गौरीमावाहयामि स्थापयामि** के स्थान पर **गौरीं ध्यायामि अर्चयामि** बोलें।

प्रतिष्ठा–लाल वस्त्र को चौकी पर बिछाकर चंद्राकार आकृति चावल से बनाएं, उसके ऊपर विल्वपत्र रखकर निम्न मंत्र से भगवती महागौरी को आसन दें–

जय हो श्री आदिशक्ति ! गति है अपार तेरी,
तू ही मूल कारन महागौरी महारानी है।
तेरो ही बनाव ब्याप्त सकल चराचर में
आसन विराजो गौरी तू ही ऋत बानी है।।

प्रतिष्ठापूर्वकम् आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि महागौयै नमः।

निम्न मंत्रों से चार बार पाद्य, अर्घ्य, आचमन तथा स्नान हेतु जल अर्पित करें–

पाद्यं समर्पयामि। ॐ महागौर्यै नमः॥ (दोनों पैरों पर जल चढ़ायें।)

अर्घ्यं समर्पयामि। ॐ महागौर्यै नमः॥ (दोनों हाथों को जल से धुलायें।)

आचमनं समर्पयामि। ॐ महागौर्यै नमः॥ (जल को अपनी अञ्जलि में रखकर देवी के मुख से स्पर्श करें, पुनः हाथ धो लें।)

स्नानं समर्पयामि। ॐ महागौर्यै नमः॥ (इस मंत्र द्वारा देवी को सुगंधित ज़ल से स्नान करायें।)

पञ्चामृत स्नान—दूध, दही, घी, बूरा, शहद—इन पांचों अमृत का नाम पंचामृत है। भूलवश लोग इसे चरणामृत भी कहते हैं। वास्तव में जब यह देवता पर चढ़ने के बाद जो चरणों के स्पर्श होने पर प्राप्त होता है या स्नान कराने के बाद शेष रहता है, तब यही चरणामृत हो जाता है। पंचामृत दिव्य औषधि है। लोग पंचामृत से भगवती को दो रूपों में स्नान कराते हैं—प्रथम, समस्त अमृतरसों के मिश्रण से तथा द्वितीय प्रत्येक रस को अलग-अलग लेकर। यहां दो विधि दी जा रही हैं—

प्रथम विधि—दूध, दही, घी, बूरा और शहद एक पात्र में एकत्र करें और माँ भगवती गौरी को निम्न मंत्र से स्नान करायें। पंचामृत की मात्रा गणना पूर्व में बता दी गई है।

दूध दही घी मधुर मधु संकरा सो बना
ऐसे पंचामृत को जग में कोऊ नहीं सानी है।
इत प्रकटावनी औ पालन-प्रलयकारी तू ही,
भुक्ति-मुक्ति पराभक्तिहू की पटरानी हैं।
जगत की जननी महारानी गौरा, रानी तू ही
पंचामृत चरणामृत बने मेरा ऐसा मन ठानी है।
'वाशिष्ठ' की सर्वशक्ति अमृत-सी तेरी परमभक्ति
सकल चराचर में गौरी तू मेरी ही तो वाणी है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीमहागौर्यै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (भगवती महागौरी को पहले पञ्चामृत से स्नान करायें, उसके बाद जल से साफ कर स्वच्छ वस्त्र से पोंछ दें।)

गन्धोदक स्नान—निम्न मंत्र से गंगाजल में गंगारज या सफेद चंदन मिलाकर भगवती महागौरी को स्नान करायें।

द्रव-द्रव्य से समुत्पन्न यह
मृग कस्तूरी गंध भरा है।
दिव्य गंधोदक तुमको देकर
माँ तन-मन हरा-भरा है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्धोदक स्नान—

गङ्गा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती।
नर्मदा सिन्धुकावेरी स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि॥

आचमन—**शुद्धोदकस्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥**
(आचमन के लिए जल दें।)

वस्त्र—जल द्वारा अभिमंत्रित कर वस्त्रों को अपने दाहिने हाथ में रखकर निम्न मंत्र पढ़ें—

शीत उष्ण से सदा बचाये,
लोक-लाज की रक्षा।
है महागौरी यह दिव्यवस्त्र,
अर्पित करता, दो शुभ शिक्षा।।

श्री जगदम्बायै महागौर्यै नमः वस्त्रं च समर्पयामि। (वस्त्र या पांच कलावा सूत्र अर्पित करें, पुनः आचमन करायें।)

उपवस्त्र—जल द्वारा अभिमंत्रित कर ओढ़नी या चुनरी को अपने दाहिने हाथ में रखकर निम्न मंत्र पढ़ें—

धारण कीजै कञ्चुकी सारी।
अरज सुनो जगदम्ब हमारी।।
तुम्हें बिराजो जब कैलासा।
पीर हरो पीड़ा कर नासा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः, उपवस्त्रं (उपवस्त्राभावे रक्तसूत्रम् समर्पयामि)।

(उपवस्त्र समर्पित करें।)

सौभाग्यसूत्र—हाथ में कलावा लेकर उसको हार का रूप दें। पुनः उसे जल से अभिमंत्रित निम्न मंत्र से करें—

सौभाग्य सूत्र धारण कर गौरी।
करें स्तुति हम नित तोरी।।
दुर्भागी को सौभागी कर दो।।
सुख का सागर घर में भर दो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः जगदम्बायै महागौर्यै नमः। सौभाग्य सूत्रं समर्पयामि।
(अभिमंत्रित कलावा सूत्र को माँ के गले में धारण करायें। पुरुष दाहिने हाथ में पहनाये।)

चन्दन—महागौरी को हारश्रृंगार का लाल व सफेद चंदन अतिप्रिय है। हारश्रृंगार चंदन हारश्रृंगार नाम वृक्ष के पुष्प जिसकी पंखुरी सफेद तथा पुष्पदण्ड लाल होता है, को पुष्प दण्ड तथा पम्बुरी अलग-अलग कर पीसा जाता है। दोनों रंग के दलों को सुखाकर (छाया में) चूर्ण बना लिया जाता है तो बिना मौसम में इसका प्रयोग चंदन के रूप में कर सकते हैं। इस चंदन को निम्न मंत्र से भगवती महागौरी को अर्पण करें—

श्रीखण्ड चंदन-सा है तेरा रूप सलौना।
श्वेत चंदन को अर्पण करने आसा तेरा छौना।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवती महागौर्यै नमः। विलेपनार्थं चन्दनं समर्पयामि।
उपरोक्त चन्दन के अभाव में लाल या सफेद चन्दन लगायें।

हरिद्रा चूर्ण—हल्दी चूर्ण का प्रयोग सौभाग्यवती स्त्रियां ही करें। निम्न मंत्र से हरिद्रा को जल में डालकर गाढ़ा लेप तैयार करें—

हल्दी से सज्जित हो शैला सुख-सौभाग्य देती हो।
सुख-शान्ति का बहाकर सागर मन उज्ज्वल कर देती हो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः हरिद्रां समर्पयामि। (हल्दी का लेप कर हाथ जोड़ें।)

कुमकुम—हाथ में रोली लेकर निम्न मंत्र से मस्तक पर लगायें—

कुमकुम कामिनी के मस्तक पर जो कुमकुम सुशोभित होता है।
उस कुमकुम अर्पण करने को तेरा भक्त उपस्थित होता है।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवती महागौर्यै नमः। मस्तके कुंकुमं समर्पयामि॥
(इस मंत्र से रोली या बिंदी लगायें।)

सिन्दूर—

जपा प्रसून सम लड्डू कांति का,
सिंदूर तुम्हारे चरणों में।
सूर्य-रश्मि सम कांति ज्ञान की दो,
मैं आया तेरे चरणों में।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै महागौर्यै नमः। सौभाग्य सिंदूरं समर्पयामि॥
(जगज्जननी महागौरी की मांग में चांदी या सोने की सलाई से सिंदूर लगायें। इसके अभाव में विल्वपत्र की डण्डी से सिंदूर लगायें।)

नानापरिमलद्रव्य—लाल-हरा-आदिगुलाल के साथ अबीर आदि भगवती को चढ़ायें—

नानापरिमल द्रव्यों में
अबीर भरा गुलाल भरा।
भुड़भुड़ की दी चमकन इसमें
अर्पण करने को पात्र धरा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः, नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

काजल (कज्जल)—

काजल ग्रहण करो हे शैले जो है शान्ति का कारक।
कर्पूर ज्योति से उत्पन्न हुआ बना हमेशा ज्योतिवर्धक।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै महागौर्यै नमः। (माँ महागौरी की आंखों में चांदी या सोने की सलाई से काजल लगायें अथवा अपने दाहिने हाथ की मध्यमा से दाहिनी तथा अनामिका अंगुली से बायीं आंख में काजल लगायें।)

दूर्वांकुर–'गणेशं तुलसी पत्रैर्दुर्गा नैव तु दूर्वया' अर्थात् कार्तिक महात्म्य के अनुसार गणेश जी को तुलसी पत्र से और दुर्गा (महागौरी) की दूर्वा से पूजा न करें। ऐसा कहकर कुछ विद्वान दूर्वांकुर के लिए निषेध करते हैं तथापि दूर्वा को निम्न मंत्र से चरणों में अर्पित करना चाहिए–

दूर्वा के अंकुर संग्रहीत कर
मैं मंगल कामना करता हूं।
सिद्धिदा दूर्वा सिद्धि को
आज समर्पित करता हूं।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भगवत्यै महागौर्यै नमः, दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

पुष्पमाला– **श्री भूर्भुवः स्वः भगवत्यै महागौर्यै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि।** इस मंत्र से पुष्प और पुष्प माला चढ़ायें। यद्यपि भगवती महागौरी को अनेक पुष्प चढ़ाये जाते हैं तथापि कुछ पुष्प विशेष चढ़ाने से तात्कालिक कष्टों का निवारण होता है। पुष्प चढ़ाते समय सर्वप्रथम राशि के अनुसार दिए गए मंत्र से विषम संख्या (5, 7, 9, 11 आदि) में पुष्प अर्पित करें, उसके बाद शेष बचे तथा अन्य दूसरे पुष्पों को चढ़ाने से धन, मान, ऐश्वर्य तथा सौभाग्य मिलता है।

राशि	मंत्र	विहित श्रेष्ठ पुष्प, पत्र या छाल
मेष	ॐ चपलायै नमः	बेला, आक, मदार, दूर्वा।
वृष	ॐ चञ्चलायै नमः	पलाश, शंखपुष्पी, मालती, तुलसी।
मिथुन	ॐ कमलायै नमः	अशोक, भंगरैया, विल्वपत्र।
कर्क	ॐ कात्यायन्यै नमः	तगर, आक, शीशम, गुलाब।
सिंह	ॐ जगन्मात्रे नमः	मैलासिरी, तमाल, विल्वछाल, कदम्ब।
कन्या	ॐ कमलवासिन्यै नमः	केशर, अशोक अमलतास, गुलाब।
तुला	ॐ वृषभवहिन्यै नमः	चंपा, शमी, गुलाब, गूमा।
वृश्चिक	ॐ पद्माननायै नमः	लोध, कनेर, दोपहरिया, अगस्त्य।
धनु	ॐ विश्वल्लभाय नमः	श्वेत कमल, लाल कमल, बेला, दूर्वा।
मकर	ॐ दुंदुगायै नमः	चमेली, मांधवी, विल्वपत्र, गुलाब।
कुम्भ	ॐ उमादेव्यै नमः	मदार, गुलाब, कनेर, चमेली।
मीन	ॐ महागौर्यै नमः	कुंद, गुलाब, सफेद कमल, पीला गुलाब।

सुगंधित द्रव्य–निम्न मंत्र से सुगंधित द्रव्य भगवती को अर्पित करें–
ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः, सुगन्धिद्रव्यं समर्पयामि।

धूपबत्ती–

प्रकृति की उत्तम औषधि से
धूप बनी ये गुणकारी।
धूम्र सुवासित ग्रहण करो,
महागौरी देवी कल्याणी।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै नमः, धूपमाघ्रापयामि।

भगवती महागौरी को अपने दाहिने हाथ को बायीं ओर ले जाकर पुनः ऊपर की ओर ले जाते हुए वृत्तक्रम में उपरोक्त मंत्र बोलते हुए घुमायें। घुमाते समय एक बार मुख पर, तीन बार मस्तक पर, तीन बार हृदय पर, चार बार चरणों की ओर घुमाकर पुनः पांच, सात या ग्यारह बार सम्पूर्ण प्रतिमा के चारों ओर घुमायें, बाद में माँ गौरी के बायीं ओर स्थापित करना चाहिए।

दीपक–एक विल्वपत्र को नीचे की ओर पलटकर रखें। विल्वपत्र रखते समय माँ भगवती महागौरी, भवानी की आराधना करके विल्वपत्र के दण्ड को अपने अंगूठे तथा अनामिका अंगुली से पकड़कर रखें। पहले दीपक अन्यत्र जलायें तब पत्र के ऊपर दीपक रखकर चावल, पुष्प लेकर निम्न मंत्र बोलें–

हे ज्योति-पुंज दीपक तुम,
गौरी की पूजा के साक्षी हो।
पाप की पुंज राशि को,
दूर करने के साक्षी हो।।

ॐ भूर्भुवः स्वः महागौर्यै, दीपं दर्शयामि।

हाथ में लिये हुए चावल और पुष्प दीपक के पास अर्पित करें। **ॐ हृशीकेशाय नमः** कहकर हाथ धो लें।

धूप–गाय के गोबर से बने उपले को जलाकर माँ भगवती भवानी का ध्यान करके घी में लौंग का जोड़ा भिगोकर जलते उपले पर **ॐ महागौर्यै नमः स्वाहा** कहकर चढ़ायें। लौंग का जोड़ा शैलपुत्री के पूजन के अनुसार संख्या में चढ़ायें।

नैवेद्य–

अन्न करें अर्पित महागौरी
सब कर पाऊं अन्नप्रासन।
माता आस ही अन्न की देवी
ऐसा ही है जग का शासन।।

(इस मंत्र से तुलसीदल मंजरी सहित नैवेद्य अर्पण करें।)

ताम्बूल–

कोमल पात पान सुहावा।
लौंग, इलायची जातीफल पावा।।
ग्रहण करो गणमातृ भवानी।
हे गोरी देवी माँ कल्यानी।।

श्री जगदम्बायै महागौर्यै नमः ताम्बूलं समर्पयामि।

(इस मंत्र से इलायची, लौंग, सुपारी तथा जायफल के साथ पान निवेदन करें।)

ध्यान—भगवती महागौरी का ध्यान, स्तोत्र और कवच का पाठ करने से 'सोमचक्र' जाग्रत होता है। जिससे चले आ रहे संकट से मुक्ति होती है। पारिवारिक दायित्व की पूर्ति होती है व आर्थिक स्मृद्धि बढ़ती है।

वन्दे वांछित कामार्थे चन्द्रार्धकृत शेखराम।
सिंहारूढा चतुर्भुजा महागौरी यशरवनीम॥
पूर्णन्दु निभां गौरी सोमचक्रस्थितां अष्टम दुर्गा त्रिनेत्राम्।
वराभीतिकरां त्रिशूल डमरूधरां महागौरी भजेम्॥
पटाम्बर परिधानां मृदहास्या नानालंकार भूषिताम्।
मंजीर हार, केयूर किंकिणि रत्न कुण्डल मण्डिताम्॥
प्रफुल्ल वदनां पल्लवाधरां कांत कपोलां त्रैलोक्यमोहनम्।
कमनीयां लावण्यां मृणालं चंदन गन्ध लिप्तम्॥

कवच—पीली सरसों लेकर अपने चारों ओर डालते हुए इस मंत्र को बोलें—

ओकारः पातुशीर्षा माँ ह्रीं बीजं माँ हृदयो।
क्लीं बीजं यापातु नभो गृहो च पादयो॥
ललाटगण हूं बीजं पातु महागौरी माँ नेत्रं घ्राणों।
कपौल चिपुको फट् स्वाहा माँ सर्ववदनो॥

स्तोत्र—ध्यान और कवच के बाद निम्न स्तोत्र का पाठ करें—

सर्वसंकट हंत्री त्वंहि धन ऐश्वर्य प्रदायनीम।
ज्ञानदा चतुर्वेदमयी महागौरी प्रणमाम्यहम्॥
सुखं शांतिदात्री धन-धान्य प्रदीयनीम्।
डमरुवाद्य प्रिया अधां महागौरी प्रणमाम्यहम्॥
त्रैलोक्यमंगला त्वंहि तापत्रय हरिणीम्।
वरदा चेतन्यमयी महागौरी प्रणमाम्यहम्॥

महागौरी के जपनीय मंत्र—

ॐ नमो भगवती महागौरी वृषारूढे श्री ह्रीं क्लीं हुं स्वाहा।
ॐ नमो भगवते महागौर्यै वृषभवाहन्यै नमः।

महागौरी के रूप में अष्टम कन्या का पूजन—महागौरी के रूप में अष्टम नवरात्र को या नवरात्र की अंतिम तिथि को अष्टम कन्या के रूप में 'दुर्गा' का पूजन किया जाता है। दुर्गा के लिए 9 वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। निम्न मंत्र से भोज्य पदार्थ अर्पित करें—

दुर्गमे दुस्तरे कार्ये भव दुःखविनाशिनीम्।
पूजयामि सदा भक्त्या दुर्गा दुर्गार्तिनाशिनीम्॥

आरती गौरी (गौरा) माता की

ॐ जय गौरी माता जय गौरी माता।
ब्रह्म सनातन देवी शुभ-फल की दाता॥टेक॥
अरिकुल पद्म विनासिनी जय सेवक त्राता,
जग जीवन जगदम्बा हरिहर गुण गाता॥जय०॥

सिंह को वाहन साजे कुण्डल है साथा,
देव वधू सह गावत नृत्य करता था॥जय०॥
सतयुग रूप अतिसुन्दर नाम सती कहलाता,
हेमांचल घर जन्मी सखियन रंगराता॥जय०॥
शुम्भ निशुम्भ विदारे हेमांचल स्याता,
सहस्त्र भुज तनु धरि के चक्र लियो हाथा॥जय०॥
सृष्टि रूप तूही है जननी शिव संग रंगराता,
नन्दी भृंगी बीन लही सारा मदमाता॥जय०॥
देवन अरज करत हम चित को लाता,
गावत दे दे ताली मन में रंग राता॥जय०॥
श्री प्रताप आरती मैया की जो कोई गाता,
सदासुखी नित रहता सुख-सम्पत्ति पाता॥जय०॥

मंत्र प्रकरण—नवरात्रि माँ भगवती की भक्ति का समय होता है। इसमें अष्टमी और नवमी का लोग अधिक महत्व मानते हैं। नीचे अष्टमी तिथि को किए जाने तथा अत्यन्त प्रभावशाली होने वाले मंत्र दिये जा रहे हैं।

शुभ फल-प्राप्ति हेतु—नवरात्र की अष्टमी तिथि को बगुलामुखी का यंत्र लाल कपड़े पर लकड़ी के स्वच्छ फट्टे पर स्थापित कर यंत्र के दोनों ओर गेहूं की ढेरी लगाकर एक ओर (बायीं ओर) सरसों का दीपक तथा दूसरी ओर घी का दीपक जलाकर लाल मूंगे की माला से नीचे लिखे मंत्र का 10 माला प्रति रात्रि कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक जप करें—

करोतु सा नः शुभ्हेतुरीश्वरी।
शुभानि भद्राण्यभिहन्तु चापदः।

साधना पूर्ण होने पर रात्रि में यज्ञ को दक्षिण दिशा में किसी पवित्र स्थान पर मिट्टी के नीचे दबा दें और मणियों की माला को नदी में प्रवाहित कर दें। इस प्रयोग के करने से विपत्तियों का नाश होता है।

व्यापार वृद्धि हेतु प्रयोग—प्रातःकाल स्नान करके स्वच्छ वस्त्र धारण करें और पूरब दिशा की ओर मुख करके सामने रखे तख्त पर पीला वस्त्र बिछाकर थाली में केशर से **"ॐ यक्षाय नमः"** लिखें, तत्पश्चात् 'कुबेर यंत्र' स्थापित करके पूजन करें और पीले रंग के पुष्प अर्पित करके नीचे लिखे मंत्र का पाठ करें—

ॐ ह्रीं श्रीं क्रीं श्री क्रीं श्री कुबेराय अष्ट लक्ष्मी मम गृहेधन पूरय-पूरय नमः।

उपरोक्त मंत्र का जप स्फटिक की माला से करें। नवरात्रि की अष्टमी में कुबेर यंत्र को सिद्ध कर लें। इस यंत्र को विजयदशमी के दिन पीले वस्त्र में लपेटकर गल्ले में रखें। आपकी समस्त कामनाएँ पूर्ण होंगी और धन का आगमन होगा।



मुकदमा जीतने के लिए—लकड़ी के तख्त पर लाल वस्त्र बिछायें, तत्पश्चात् एक थाली में काजल से **'फट् स्वाहा'** लिखकर पुष्प आदि रखकर शत्रुनाशक यंत्र को काले धागे में पिरोकर पारद मोती एवम् कार्यसिद्धि माला रखकर धूप, दीप आदि से पूजन करें, फिर उस माला से प्रतिदिन 7 माला मंत्र का जाप करें। याद रखें, माला जपते समय आपका मुख पूर्व की ओर हो। निश्चित सफलता प्राप्त होगी।

शूलेन पाहि नो देवि पाहिखड्गेन चाम्बिके।
घण्टा स्वनेन नः पाहि चापज्यानिः स्वनेन च॥

बंधन-मुक्ति हेतु—माता बगुलामुखी के मंत्र का जप अष्टमी से आरम्भ करने से तथा प्रतिदिन 11 माला कम-से-कम करने से प्राणी बंधन-मुक्त हो जाता है। जपकार्य हरिद्रा की माला से करें।

ॐ ह्लीं बगलामुखी सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ॥

सम्मोहन प्रयोग—लकड़ी के तख्त पर वस्त्र बिछाकर एक कटोरी में सियारसिंगी रखें और उस पर केशर से तिलक करें, फिर धूप-दीप करके रुद्राक्ष की माला से मंत्र जाप करें।

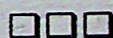
ॐ नमो आदेश गुरु को सिद्ध माता स्तम्भनि मोहिनी वशीकरणी अमुकं मोहिनी ममवश्य करि-करि इच्छित कार्यपूर्ति कुरु-कुरु स्वाहा।

विदेश जाने हेतु मंत्र—चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर श्री हनुमान यंत्र स्थापित करके सिन्दूर, सुपारी आदि चढ़ाकर पूजन करें। तत्पश्चात् श्री रामभक्त हनुमान के स्वरूप का ध्यान करते हुए 54 बार मंत्र पाठ प्रतिदिन करें।

क्षं फट्॥ दसवें दिन समस्त पूजन सामग्री मिट्टी के पात्र में रखकर उसका मुंह लाल वस्त्र से बांधकर रास्ते पर रख आयें।

महागौरी के वाहन का रहस्य

नौ शक्तियों में अष्टम शक्ति महागौरी अर्थात् चामुण्डा हैं। प्रकृति का नाम चण्ड और निवृत्ति का नाम मुण्ड है। ये परस्पर सोदर भाई हैं। इनका विनाश करने वाली प्रलयशक्ति को ही चामुण्डा कहते हैं। 'चण्डमुण्ड' शब्द के अनन्तर हननार्थ बोधक 'आ' धातु से चण्डमुण्ड शब्द बना है और वृषोदरादित्वात् चामुण्डा बन जाता है। चामुण्डा किसी अवलम्ब को लेकर प्रकाशित नहीं होती, बल्कि स्वयं प्रकाश है, इस कारण शास्त्रकारों ने इनका वाहन नहीं लिखा है।



नवमं सिद्धिदात्री

श्री सिद्धिदात्री नवदुर्गा के सम्बन्ध में यह बात प्रसिद्ध है कि वे हिमालय की पत्नी मेनका के गर्भ से प्रकट हुई हैं। वैदिक कोष निघण्टु के अनुसार, 'मेना', 'मेनका' शब्द का अर्थ 'वाणी' और 'गिरि', 'पर्वत' आदि शब्दों का अर्थ मेघ होता है।

वे जगन्माता हैं। माता का काम बच्चों को दूध पिलाना है। वे जगत को जलरूपी दूध पिलाती हैं, इस काम में मेघ पिता के समान उनका सहायक हुआ। अतएव उनका नाम पार्वती और गिरिजा संस्कृत साहित्य में प्रसिद्ध है। हिमालय का मानी भी मेघ है क्योंकि महर्षि यास्क ने निरुक्त के छठे अध्याय के अन्त में हिम का अर्थ जल किया है—**हिमेन उदकेन *(नि.अ.6)*** सिद्धिदात्री माता दुर्गा जगत के प्राणियों को दूध-जल पिलाती हैं, यह बात ऋग्वेद में दीख पड़ती है। **गौरीर्मिमाय सलिलानि तक्षती *(ऋ० 2/3/22)***।

माता से संतति का आविर्भाव होता है। मेनका—वेदवाणी ने उनका ज्ञान लोगों को कराया। वेद ने हमें सिखाया है परमात्मा अपने को स्त्री-पुरुष—दो रूपों में देखते हैं जिससे कि प्राणियों को ईश्वर के मातृत्व-पितृत्व दोनों का सुख प्राप्त हो। **(त्र्यम्बकं यजामहे०)** इसका अर्थ है हम दुर्गा सहित महादेव की पूजा करते हैं। सामवेद के षड्-विंश-ब्राह्मण ने 'त्रयम्बक' शब्द का उक्त अर्थ बताया है **'स्त्री अम्बा स्वसा यस्य स त्र्यम्बकः'**।

श्री दुर्गा दुर्गतिनाशिनी हैं। दुर्गति को विनिष्ट करने के लिए वीरता की आवश्यकता होती है। अतः एक अन्य कथा के अनुसार दुर्गा की उत्पत्ति विभिन्न देवों के तेज से हुई है। किसी समय दैत्यों के घोर अत्याचार से पीड़ित देवता त्राहि-त्राहि करते हुए सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माजी के पास पहुंचे और रक्षा हेतु प्रार्थना करने लगे। ब्रह्मा को जब यह ज्ञात हुआ कि दैत्यराज वर प्राप्त करके शक्तिशाली हो चुका है। उसकी मृत्यु किसी कुंआरी कन्या के हाथ से होनी है, तब समस्त देवताओं के सम्मिलित दिव्य तेज से देवी की उत्पत्ति हुई, जिसमें शिव के तेज से मुख, यमराज के तेज से केश, विष्णु के तेज से भुजायें, चक्र के तेज से स्तन, इन्द्र के तेज से कमर, वरुण से जंघाएं, पृथ्वी से नितम्ब, ब्रह्मा से पैर, सूर्य से अंगुलियां, अग्नि से दोनों नेत्र उत्पन्न हुए।

दिव्य तेज से युक्त देवी सिद्धिदात्री दुर्गा के अद्‌भुत स्वरूप के दर्शन मात्र से ही मनुष्यों के समस्त पाप धुल जाते हैं।

सिद्धिदात्री पूजनम्

आचमन–अपने हाथ धोकर निम्न मंत्र से माँ भवानी सिद्धिदात्री का ध्यान करते हुए तीन बार गंगाजल से आचमन करें–

॥ ॐ दुं दुर्गायै नमः ॥

॥ ॐ महाकाल्यै नमः ॥

॥ ॐ सिद्धिदात्र्यै नमः ॥

पुनः **ॐ ह्रीं हृषीकेशाय नमः** कहकर अपने दोनों हाथ धोएं। पुनः प्राणायाम और शिखाबंधन कर निम्न मंत्र से या निम्न स्तुति से माँ दुर्गा का ध्यान हाथ में लाल पुष्प लेकर करें–

ध्यान–(संस्कृत में)– **सिद्धगन्धर्व यक्षाद्यै रसुरैरमरैदपि।**
सेव्यमाना सदाभूयात् सिद्धिदा सिद्धिदायिनी॥

(अथवा)

छलक रहे हैं अपलक देखने को नेत्र,
ललक रहे ये मेरे सकल करण हैं।
आंसू हैं पदार्थ मन-मानिक की दक्षिणा है,
सतत प्रदक्षिणा में निरत चरण हैं।
वाहन को हंस, अवगाहन को मानस है,
आसन कमल-दल विमल वरण हैं।
पूजा का अखिल उपकरण सजा है अंब,
आ जा आज आये हम तेरी ही शरण हैं।

भगवती का ध्यान करते हुए **ॐ दुं दुर्गायै नमः** कहकर पुष्प चौकी पर अर्पण करें।

आवाहन–

दारे दुख-दारिद घनेरे सरनागत कें,
अंब अनुकंपा उर तेरे उपजत ही।
मंदिर में महिमा विराजा माँ सिद्धिदात्री जू की,
गाजै झनकार धुनि कंचन-रजत ही।।
आसन विराजौ मातु सिद्धिदाता अम्बारानी
मत गजराजन की घंटा बजत ही।
हारे हिय सारे हथियार डारि शत्रुअन के
हारे देत हिम्मत नगारे के बजत ही।।
श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दुर्गादेवीमावाहयामि।

(उपरोक्त मंत्र का उच्चारण करते हुए हाथ में चावल और लाल पुष्प लेकर भगवती सिद्धिदात्री दुर्गा को अर्पण करें।)

आसन–

नाना रत्नों मणियों से युत आसन तेरा सलौना है।
हेमसूत्र से गुंथा दिया दिव्यासन तेरा मोहना है।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि॥

(लाल कपड़े पर सर्वतोभद्र चक्र या अष्टदल बनाकर (चावल से) विभिन्न पुष्पों से सुसज्जित आसन प्रदान करें। (सर्वतोभद्र रंगयुक्त चावल या दाल द्वारा बनायें।)

पाद्य–

जिनकी भक्ति के लेश मात्र से
परमानंद संभव हो जाता है।
पाद्य अर्घ्य उस सिद्धिदात्री को
कर मन सुख पा जाता है।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पादयोः पाद्यं समर्पयामि॥ (जल चढ़ायें।)

अर्घ्य–

गंध सुवासित प्रसूनों का,
अर्घ्य समर्पित जल है ये।
अक्षत सम्पादित जल को लेकर,
दूर करो मल मन का ये।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि॥ (चन्दन, पुष्प, अक्षत से युक्त अर्घ्य दें।)

आचमन–

कर्पूर सुवासित शीतल जल,
जो स्वादु भरा आचमन हेतु।
माते सिद्धिदात्री अर्पण तुमको,
कर दो किरपा हे जननि सेतु।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। आचमनं समर्पयामि॥

(कर्पूर से सुवासित जल द्वारा आचमन करायें।)

गंगाजल स्नान–भगवती महामाया सिद्धिदात्री दुर्गा को गंगाजल से निम्न मंत्र द्वारा जलाभिषेक करायें–

स्नान–

मंदाकिनी का उत्तम जल,
सब पापहारी गंगाजल है।
हे सिद्धिदात्री सर्वसिद्धि देवी,
अर्पण तुमको उत्तम जल है।।

श्री सिद्धिदात्र्यै दुर्गादेव्यै नमः। स्नानार्थं जलं समर्पयामि॥

(गङ्गाजल चढ़ायें।)

स्नानाङ्ग-आचमन–स्नानान्ते पुनराचमनीयं जलं समर्पयामि।

(आचमन के लिए जल दें।)

दुग्ध स्नान–

गैया के स्तन से निकल-निकल,
बही दूध की अमृत धारा।
सिद्धिदात्री दुर्गा मैया
यह दूध समर्पित गौ का सारा।।
(गोदुग्ध से स्नान करायें।)

दधिस्नान–

धेनुदुग्ध दोहन करके,
स्वच्छ शुद्ध दधि बनाया है।
चंद्रप्रभा की किरणें इसमें,
सिद्धिदा चरण तुम्हारे आया है।।
(गोदधि से स्नान करायें।)

घृत स्नान–

सभी जनों के सुंतोष का कारक,
नवनीत बना नवनीत बना।
स्नानार्थ लाया नूतन घृत
परम पुनीत नवनीत घना।।

श्री जगदम्बायै सिद्धिदेव्य नमः। घृतस्नानं समर्पयामि। (गोघृत से स्नान करायें।)

मधु स्नान–

पुष्पों-पुष्पों से चुन-चुन कर,
मक्खी ने शहद बनाया है।
मधुर वरेण्य सुगम स्वादिष्ट,
स्नानार्थ तुम्हें यह आया है।।

श्री जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। मधुस्नानं समर्पयामि। (मधु से स्नान करायें।)

शर्करा स्नान–

जल मूल रसगर्भित इक्षु से,
मधुर शर्करा निर्माण किया,
मलापहारी दिव्य स्नान को,
कर अर्पित तव सम्मान किया।।

श्री जगदम्बिकायै दुर्गादेव्यै नमः। शर्करास्नानं समर्पयामि। (शक्कर से स्नान करायें।)

पंचामृत स्नान–

दूध, दही, घृत और मधु,
शर्करा मिलाकर लाया हूँ।
स्नान करो पंचामृत से,
भय दूर रहे हरषाया हूं।।

श्री जगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि। (अन्य पात्र में पृथक् निर्मित पञ्चामृत से स्नान करायें।)

गन्धोधक स्नान–

मलयाचल में ठंडे झोकों बिच,
चंदन का प्रादुर्भाव होता है।
उस चंदन को गंधोदक कर,
सिद्धि स्नान समर्पण होता है।।

श्री जगदम्बायै सिद्धयै नमः। गन्धोदकस्नानं समर्पयामि। (मलयचन्दन और अगरु से मिश्रित जल चढ़ायें।)

शुद्धोदक स्नान–

शुद्ध सलिल दिव्य गंगा सम,
समर्पित तुम्हें हे सिद्धिदात्री।
मन मेरा शुद्धि से भर दो,
कल्याणदायिनी जगतधात्री।।

ॐ नमो भगवती सिद्धिदात्रीदेव्यै नमः। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। (भगवती सिद्धिदात्री दुर्गा को शुद्ध सुवासित जल से स्नान करायें।)

*आचमन–*शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि॥ (उसके बाद इस मंत्र से आचमन के लिए जल दें।)

वस्त्र–

हे सिद्धिदायिनी हे सिद्धिदा
कृपा करो पट धारो।
यह कंचुक पट युग्म समर्पित
मुझे भव सागर से तारो।।

ॐ नमो भगवती सिद्धिदात्रीदेव्यै नमः वस्त्रोपवस्त्रं कञ्चुकीयं च समर्पयामि। (इस मंत्र से दो, पांच या अधिक वस्त्र भगवती को अर्पित करें।) 'वस्त्रान्ते आचमनीं समर्पयामि' से पुनः जल अर्पण करें।

सौभाग्य सूत्र–

सौभाग्य सूत्र धारण कर देवी।
करे स्तुति हम नित ही तेरी।
दुर्भागी को सौभागी करतीं।
हार स्वर्णमणि धारण करतीं।।

श्री जगदम्बिकायै नमः। सौभाग्यसूत्रं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से महिलाएं सौभाग्य सूत्र भगवती के गले में धारण करायें। पुरुष भगवती के दक्षिण हाथ पर धारण करायें।)

पादुकार्पण–

नवरत्न युत समर्पित हो
ये पादुकाएं जगदम्बे
तब चरणों की बस धूलि मिले
सिद्धिदात्री हे अम्बे।।

भगवती सिद्धिदात्र्यै नमः। चरणयोः पादुके समर्पयामि। (भगवती के चरणों से नूतन पादुकाएं स्पर्श करें तथा उन्हें अलग रखें।)

चन्दन–

कस्तूरी मृग की नाभि से
गंध मिली ये कस्तूरी।
केशरयुक्त समर्पित सिद्धे,
माँ इच्छा करना मेरी पूरी।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। चन्दनं समर्पयामि॥ (भगवती जगदम्बा दुर्गा को मलयचन्दन लगायें।)

केशपाशसंस्करणम्–(कंघी/कंघा)–

सूर्य कांति की किरणों सम,
तेरे सुंदर बालों में।
चंपक बोला कनकसूत्रमुत,
गूंथने तेरे बालों में।।
अगणित दांतों वाला माते,
तेरे दर पर कंघा लाया हूं।
इसके सम दुःख दूर करो,
यही अरज साथ में लाया हूं।।

ॐ नमो भगवती सिद्धिदात्री दुर्गादेव्यै नमः। केशपाशसंस्करणं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से भगवती के केशों में कंघा करें और कंघा को अर्पण करें।)

अद्‌भुत प्रयोग–इस उपरोक्त मंत्र से किसी एक कंघे से प्रतिदिन सोलह बार भगवती के केशों में कंघा करें और कंघे को गंगाजल से धोएं। यह क्रम 41 दिन तक करें। गंगाजल को पीतल के पात्र में रखें तथा अगले दिन अपने बालों में गंगाजल लगाते रहें। 42वें दिन गंगाजल लगाकर और उस कंघे के द्वारा पहले भगवती को कंघा करें पुनः ग्रहण करके प्रतिदिन अपने सिर में कंघा करें। ध्यान रहे कंघा लेते समय दूसरा भगवती को अर्पण करना न भूलें। कंघे में प्राप्त ऊर्जा से सिरदर्द दूर होता है। इस कंघे के दैनिक प्रयोग से बाल भगवती की तरह लम्बे और घने होते हैं। इस प्रयोग में श्रद्धा और विश्वास की परमावश्यकता है।

हरिद्रा चूर्ण–

सुख-सौभाग्य प्रदायक यह,
हल्दी तुम्हें समर्पित है।
सुख-शान्ति प्रदान करे सिद्धिदा,
यह मन मेरा अति हर्षित है।।

ॐ नमो भगवती सिद्धिदात्री दुर्गायै नमः। हरिद्रां समर्पयामि॥ (इस मंत्र द्वारा भगवती के मस्तक तथा दक्षिण अंगुष्ठ (दोनों) पर हल्दी लगायें।)

कुमकुम–

जाती के सुमनों–सा रक्त रंग
मुख–कांति को बढ़ाता है।
कुमकुम नाम दिया जिसने
यह भक्त उसे चढ़ाता है।

ॐ नमो भगवती दुर्गादेव्यै नमः। कुंकुमं समर्पयामि। (इस मंत्र द्वारा भगवती के मस्तक पर कुमकुम से तिलक लगायें।)

सिन्दूर–

भक्ति भाव से हे सिद्धिदात्री,
सिंदूर तुम्हें चढ़ाता हूं।
स्वीकार करो वर दो माते,
यह सुंदर गीत सुनाता हूं।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। सिन्दूरं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से भगवती की मांग में सिंदूर चांदी या सोने की सलाई से भरें।) (यह कार्य महिलायें ही करें।)

कज्जल (काजल)–

काजल ग्रहण करो सिद्धिदा,
जो है शांति का कारक।
उत्पन्न हुआ कर्पूर ज्योति से,
बना हमेशा ज्योतिवर्धक।।

(इस मंत्र से आंखों में काजल लगायें।)

दूर्वांकुर–कुछ विद्वान् जन भगवती दुर्गा को दूर्वा (कालि घास) चढ़ाना निषेध करते हैं। किन्तु ऐसा करना सम्यक् व सार्थक कारण नहीं मिलता। तथापि यह विषय विवाद का नहीं है अतः मंत्र द्वारा भाव लेकर मानसिक रूप में अर्पण करना या दूर्वा लेकर चरणों में चढ़ाना श्रेयष्कर है।

दूर्वांकुर–

हरितकांतमणि सम सुन्दर दूर्वा से,
पूजा करू मैं नित सिद्धिदात्री।
चरणों में तेरे अर्पित है।
बस तुम ही हो माँ पालनकर्त्री।।

विल्व–पत्र–

त्रिदल त्रिगुणाधार बने,
त्रिनेत्र बने त्रि–आयुध से।
तीनों जनमों का पाप हरें,
विल्वदल बने ये आयुध से।।

विल्व-पत्र के तीनों दलों पर क्रमशः ऐं, ह्रीं, क्लीं लिखकर स्वेच्छा से उपरोक्त मंत्र से विल्व-पत्र अर्पण करें।

अलंकारान् (कंकणम्)–

माणिक्य मुक्ता मणिखंड युत,
स्वर्णकार ने संस्कार कर बनाया है।
ये कंगन स्वर्णशिला से मंडित,
सिद्धिदात्री बेटा तेरा लाया है।।

ॐ नमो भगवती सिद्धिदात्रीदेव्यै नमः! हस्तयोः कंकणे समर्पयामि॥ (भगवती दुर्गा को चौदह चूड़ी दोनों हाथों में अर्पण करें।)

कर्णभूषणम्–

कर्णफूल भी स्वर्णमंडित यह,
सिद्धिदात्री तुम्हारे कर्णों में।
नमन मेरा स्वीकार सिद्धिदे,
आया भक्त तुम्हारे चरणों में।।

भगवती दुर्गादेव्यै नमः। कर्णयोः कुण्डले समर्पयामि॥ (कानों के लिए सुवर्ण कुण्डल अर्पण करें।)

हार–

गलकंठ का भूषण बनने को,
मणि मानिक इसमें पिरोये हैं।
धारण की माँ सिद्धि की दात्री,
सुवासित जल में धोये हैं।।

ॐ नमो भगवती सिद्धिदात्रीदेव्यै नमः। कण्ठे ग्रैवेयं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से भगवती दुर्गा को हार अर्पण करें।)

अंगद–

जानु तक की दीर्घ भुजा में,
स्वर्णांगुद समर्पित करता हूं।
मम भुजा में हो शक्ति की वर्षा,
सिद्धिदा नमन अर्पित करता हूं।।

ॐ नमो भगवती सिद्धिदात्री दुर्गादेव्यै नमः। वाह्वोः अंगदे समर्पयामि॥ (इस मंत्र से भगवती दुर्गा को बाजूबंद अर्पण करें।)

अंगुलीयकम्–

रवि-रश्मि की आभा जैसी
पद्मपंखुरी-सी अंगुली तेरी।
स्वर्णशिला से बनी अंगूठी
वरदहस्त की शोभा अंगुली तेरी।।

ॐ भगवती श्री दुर्गादेव्यै नमः। करयोरंगुर्लिमुद्रिकां समर्पयामि॥ (इस मंत्र से भगवती को अंगूठी अर्पण करें।)

कटिभूषणम् (कौंधनी)—

धरती माता ने कौंधनी से जैसे
रत्न चौदहों का निर्माण किया।
उसी तरह हे सिद्धिदा देवी ने
नव रस का निर्माण किया।।
ये नव रस हमारे जीवन में,
नवयुग निर्माण करें।
स्वर्णमेखला धारण करके
सिद्धि देवी कल्याण करें।।

ॐ भगवती दुर्गादेव्यै नमः। कटिप्रदेशे काञ्चीं समर्पयामि॥ (इस मंत्र से कटिभाग में कौंधनी पहनायें।)

नूपुर—

कमल-कांत की आभा सम
सिद्धिदा तव चरणों में।
नूपर रुनझुन-रुनझुन बोलें
अर्पित तेरे चरणों में।।

ॐ नमो भगवती दुर्गादेव्यै नमः। पादयोः नूपुरे समर्पयामि॥ (भगवती दुर्गा के दोनों पैरों में नूपुर पहनायें।)

राजोपचार—भगवती के राजसिंहासन हेतु राजोपचार के लिए छत्र, चंवर, दर्पण (शीशा) तालवृंत (पंखा) और नारियल अर्पण किया जाता है। छत्र, चंवर, दर्पण, तालवृंत और नारियल जब तक स्वयं या किसी अन्य प्रकार से खंडित नहीं होता तब तक यह प्रतिदिन अर्पण किया जा सकता है। अतः उन्हें राजोपचार की सामग्री कहा जाता है। निम्न मंत्रों के अनुसार प्रत्येक को माँ भगवती को उनके उपयोग के स्थान पर अर्पण करें।

छत्र—

कनक शिला का बना छत्र,
अब अर्पित तेरे मस्तक पर।।
चौदह रत्न जड़े हैं इसमें,
चौदह ही भुवनों के दस्तक पर।।

ॐ भगवती सिद्धिदात्र्यै नमः। छत्रं समर्पयामि॥ (छत्र धारण करायें।)

चामर—

चमरीमृग के बालों से निर्मित
अर्पण तुमको ये चामर।
सिद्धिदात्री जगत की अंबा
मैं बेटा तेरा अति पामर।।

ॐ भगवती सिद्धिदात्री देव्यै नमः। चामरं समर्पयामि॥ (चामर अर्पण करें।)

आदर्शम् (शीशा)—

दर्पण बना है इस जग में,
सदा बिम्ब निहारन को।
सिद्धिदात्री स्वीकार करो,
अब समझो मेरे कारण को।।

ॐ भगवती सिद्धिदात्रीदेव्यै नमः। आदर्शं समर्पयामि॥ (देवी को उनका शृंगार शीशे में दिखायें।)

तालवृतम् (पंखा)—

खजूर के सुंदर पत्रों से
सुंदर पंखा है तैयार किया।
सिद्धिदात्री को मिले सुखद वायु
कर ध्यान बयार किया।।

ॐ नमोः भगवती दुर्गादेव्यै नमः। तालवृतम् समर्पयामि॥ (देवी को ताड़ का पंखा अर्पण करें।)

मुकुट—

चौदह रत्नों से मंडित,
निर्माण किया गया सुंदर ताज।
जगतधात्री सिद्धि माता
स्वीकण्र करो आकर आज।।

ॐ भगवती सिद्धिदात्रीदेव्यै नमः। शिरसि मुकुटं समर्पयामि॥ (देवी के मस्तक पर मुकुट विराजमान करें।)

अन्य आभूषणम्—दूसरे (शेष) आभूषणों को निम्न मंत्र द्वारा धारण करायें—

हार कंगन मेखला केयूर कुंडल आदि हैं।
हीरों से जड़ा रत्न-भूषण लेकर हरती भव व्याधि हैं।।

पुष्पमाला—

अति सुगंधित मालती की,
माला गले में पहनाऊं।
अपने ही द्वारा लाए इन,
सुमनों की तुम्हें चढ़ाऊं।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। पुष्पमालां समर्पयामि॥ (पुष्प एवं पुष्पमाला चढ़ायें।)

नानापरिमल द्रव्य—

नानापरिमल द्रव्यों में
अबीर भरा गुलाल भरा।
भुड़भुड़ की दी चमकन इसमें
अर्पण करने को पात्र धरा।।

श्री सिद्धिदात्रीदेव्यै नमः। नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि॥ (गुलाल; लाल व हरा आदि, भुड़भुड़, चंदन चूर्ण अर्पण करें।)

सौभाग्यपेटिका–

सौभाग्यकामिनी को सजने को
सौभाग्य द्रव्य जो भी होते।
वे सभी समर्पित सिद्धिदात्री
बड़े-बड़े या हो छोटे।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। सौभाग्यपेटिकां समर्पयामि॥ (देवी को समस्त सुहाग की वस्तुओं की सौभाग्यपेटिका अर्पण करें।)

धूप–

दस अंगों से रंजित धूप बनी,
विघ्न-विनाशक यह धूप घनी।
सिद्धिया तव अर्पण करने को,
धूप बनी यह नव धूप बनी।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। धूपमाघ्रापयामि। (परमाराध्या देवी दुर्गा के समस्त अंगों को धूप दिखायें।)

दीप–

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया।
दीपं गृहाण देवेशि त्रैलोक्यतिमिरापहम्॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। दीपं दर्शयामि॥ (परमाराध्या देवी दुर्गा के समस्त अंगों को घी की बत्ती दिखायें, पुनः हाथ धो लें।)

नैवेद्य–

खोवा, पनीर अन्य सुस्वादु चीजों से,
नाना प्रकार का भोजन ये।
दधि-दूध, खीर, अरु, हलुआ,
ये सब समर्पित भोजन ये।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। नैवेद्यं निवेदयामि॥ (नैवेद्य निवेदित करें।)

***आचमनीय आदि*–नैवेद्यान्ते ध्यानमाचमनीयं जलमुत्तरापोऽशनं हस्तप्रक्षालनार्थं मुखप्रक्षालनार्थं च जलं समर्पयामि॥** (चार बार जल जमीन पर छोड़ें।)

ऋतुफल–

मौसम और ऋतुओं ने
जो फल जग को प्रदान किये।
लेकर उनकी तुच्छ भेंट
सिद्धिदा जु को दान किये।।

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। ऋतुफलानि समर्पयामि॥ (भगवती जगज्जनी दुर्गा को ऋतुफल अर्पण करें।)

ताम्बूल—

नागवल्ली के पावन पत्रों में,
लौंग, इलायची को लेकर।
पूंगीफल को लेकर देवी,
संतुष्ट होऊं तुझको देकर॥

श्रीजगदम्बायै दुर्गादेव्यै नमः। ताम्बूलं समर्पयामि॥ (भगवती जगज्ज दुर्गा को इलायची, लौंग, पूंगीफल के साथ पान निवेदित करें।)

धूप—पूर्व देवियों की तरह भगवती सिद्धिदात्री को निम्न मंत्र से लौंग जोड़ा अर्पण करें—

सर्वमंगल मांगल्ये शिवि सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बिके गौरिनारायणि नमोऽस्तुते॥

ध्यान—हाथ में लाल पुष्प या राशि के अनुसार एक या अधिक पुष्प ले माँ भगवती सिद्धिदात्री का निम्न मंत्र से ध्यान करें—

देव्या यय तदमिदं जगदात्मशक्त्या,
निः शेषदेवगणशक्ति समूहमूर्त्या।
तामम्बिका माखिलदेव महर्षि पूज्यां
भक्त्या नताः स्म विदधातु शुभानि सा नः॥

स्तोत्र—(श्री सप्तश्लोकी दुर्गा)

॥ शिव उवाच ॥

देवि त्वं भक्तसुलभे सर्वकार्यविधायिनी।
कलौ हि कार्यसिद्ध्यर्थमुपायं ब्रूहि यत्नतः॥

॥ देव्युवाच ॥

श्रृणु दे प्रवक्ष्यामि कलौ सर्वेष्टसाधनम्।
मया तदैव स्नेहेनाप्यम्बास्तुतिः प्रकाश्यते॥

विनियोग—अस्य श्री दुर्गा सप्तश्लोकी स्तोत्र मंत्रस्य नारायण ऋषि अनुष्टुप् छन्दः श्री महाकाली महालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवता श्री दुर्गाप्रीत्य सप्तश्लोकी दुर्गा पाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानिनामपि चेतांसि देवि भगवती हिसा।
बलादाकृष्य मोहाय महामाया प्रयच्छति॥1॥
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख-भयहारिणि का त्वदन्या,
सर्वोपकारकरणाय सहार्द्रचित्ता॥2॥
सर्वमंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यंम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥3॥
शरणागतदीनार्तपरित्राणपरायणे
सर्वस्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तुते॥4॥
सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नौ देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते॥5॥

रोगसशेषान पहंसि तुष्टा,
रुष्टा तु, कामान् सकलानभीष्टान्।
त्वाामाश्रितानां न विपन्नराणां,
त्वामाश्रिता ह्यश्रयतां प्रयान्ति॥6॥
सर्वाबाधा प्रशमनं त्रैलोक्याखिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्यमस्मद्वैरि विनाशनम्॥7॥

स्तोत्र (हिन्दी में)—

विश्व-वर वीणा की मनोज्ञ मूर्छना हो, ज्ञान—
दीप की शिखा हो, तुम-तोम-परिभूति हो।
दिव्य जन्म-कर्म का तुम्हारे कौन जाने मर्म,
कवि प्रतिभा की तुम पावन प्रसूति हो॥
परम प्रभूति हो, विभूति भव्य जीवन की,
विभव-विहीन की अमिट भवभूति हो।
चाहता न कौन है सहानुभूति तेरी देवि!
नर-नरलोक की अमर अनुभूति हो।
पाकर तुम्हारी करूणा की एक बूंद अम्ब!
ज्ञान का अपार पाराबार है छलकता।
वाणी में अगम निरागम निवास करें,
तत्व परमाणु में महान का झलकता॥
संतत अनंत रसमय उर-अन्तर से,
भव्य भावनाओं का प्रवाह है ढलकता।
आते दृष्टि में हैं दृश्य सृष्टि के रहस्यभरे,
कान्त-कल्पना की ओर हृदय ललकता॥

सिद्धिदात्री के जपनीय मंत्र—

1. ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।
2. ॐ सिद्धिदात्री देव्यै नमः।

सिद्धिदात्री के रूप में नवम कन्या का पूजन—सिद्धिदात्री के रूप में नवरात्र की अन्तिम तिथि को सिद्धिमाता की प्रतीका नवम कन्या के रूप में 'त्रिपुरा' का पूजन किया जाता है। त्रिपुरा के लिए तीन वर्ष की कन्या का पूजन करना चाहिए। निम्न मंत्र से सिद्धिदात्री को भोज्य पदार्थ अर्पित करें—

त्रिपुरां त्रिपुरा धारां त्रिवर्ग ज्ञानरूपिणीम्।
त्रैलोक्य वन्दितां देवी त्रिमूर्ति पूजयाम्हम्॥

आरती सिद्धिदात्री दुर्गा की

अम्बे जी की आरती, दुर्गे जी की आरती,
सारा संसार करेंगे कर जोड़ के ॥टेक॥
परा, ज्ञान, क्रिया अरु इच्छा।
कुण्डलिनी षडशक्ति मातृका॥

तुम ज्योति रूप आधार करेंगे कर जोड़ के।
रमा, गौरी, भारती ब्रह्माणी।
नवरूपों में विराजी कल्याणी॥
नवधाभक्ति संचार करेंगे कर जोड़ के।
हे जगजननी माँ ज़गदम्बा।
कष्ट हरो माँ मत करो विलम्बा॥
हम बालक नादान करेंगे कर जोड़ के॥
ब्रह्मा विष्णु अरु महादेवा।
देव दनुज नर करते सेवा॥
ऋषिगण करें गुणगान करेंगे कर जोड़ के।
पान सुपारी ध्वजा नारियल।
दर तेरे चढ़ते पल-पल प्रतिपल॥
भर देतीं सबका भण्डार करेंगे कर जोड़ के।
दुर्गति नाशिनी जय दुर्गा माँ।
पापविमोचिनी नव दुर्गा माँ!
मेरा करो उद्धार करेंगे कर जोड़ के।
सबका करो कल्याण करेंगे कर जोड़ के॥

मंत्र प्रकरण—प्रत्येक प्रकार के दैहिक, दैविक तथा भौतिक कार्यों की सृष्टिकर्त्ता भगवती सिद्धिदात्री हैं। उनके द्वारा साधक का मनोरथ उसी प्रकार पूर्ण होता है, जैसे बच्चे का माँ के द्वारा। नीचे भगवती के जन-कल्याण मंत्र दिए जा रहे हैं। साधक को इनका सावधानीपूर्वक उपयोग करना चाहिए।

लक्ष्मी-विनायक मंत्र—नवरात्र की नवमी तिथि अथवा दीपावली से आरम्भ कर चौबीस दिनों में पांच लाख की संख्या में जप करने के उपरान्त यह सिद्ध हो जाता है। इसके उपरान्त एक मिट्टी या तांबे के कलश में सप्त धान्य, घी, देवी का सिन्दूर तथा चांदी या सोने का सिक्का रखकर पात्र को विधिपूर्वक सकोरे से ढककर व गंगाजल द्वारा इसी मंत्र से अभिमंत्रित करके लाल कपड़े में नौ गांठों से पूर्णतः कलश बंद कर तिजोरी में रखने से लक्ष्मी वहां वास करती हैं। यह मंत्र इतना प्रभावशाली होता है कि इसके 108 मात्रा में जप करने से ही सामान्य धन की समस्या से छुटकारा मिल जाता है। इस मंत्र को विनियोग तथा ध्यान मंत्र के बाद जपना चाहिए—

विनियोग—

ॐ अस्य लक्ष्मी विनायक मंत्रस्य अंतर्यामी ऋषिः गायत्री छंदः, लक्ष्मी विनायको देवता श्रीं बीजं स्वाहा शक्तिः ममाभीष्ट सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

दन्तामये चक्रवरौ दधानं, करांग्रगं स्वर्णघटं त्रिनेत्रम्।
धृताब्जया लिंगितमब्धि पुत्रयाः लक्ष्मी गणेशं कनकाभमीडे॥

जप-मंत्र–

ॐ श्री गं सौम्याय गणपतये, वर वरद सर्वजयं मे वशमान्य स्वाहा।

***भय निवारक मंत्र*–**अकारण मिलने वाले भय से शीघ्र मुक्ति दिलाने में समर्थ यह भगवती दुर्गा का मंत्र अत्यन्त प्रभावशाली है। स्वप्न, भूत, प्रेत, पिशाच का भय दूर करने में समर्थ यह मंत्र सोने के समय भय से उठ जाने वाले कच्चे के लिए अत्यंत उपयोगी है। नजर दूर करने में सहायक है। इस मंत्र से 21 बार जल अभिमंत्रित कर रोगी को पिला देने से वह भयमुक्त हो जाता है। नजर लगे व्यक्ति के ऊपर आटे की लोई लेकर सात बार इस मंत्र द्वारा सिर से पैर की ओर फिराकर दक्षिण दिशा में फेंक देने से नजर लगने का प्रभाव जाता रहता है।

सर्वस्वरूपे सर्वेशे सर्वशक्तिसमन्विते।
भयेभ्यस्त्राहि नो देवि! दुर्गे देवि! नमोऽस्तुते॥

शक्ति-विनायक मंत्र

यह गणेश-मंत्र सभी प्रकार की भौतिक समृद्धि प्रदान करता है। धन-धान्य, भूमि-भवन, यश-मान, सेवक-सेविका और वाहन आदि सुख की कामना रखने वाले भक्तों के लिए नवमी तिथि से आरम्भ कर प्रतिदिन एक माला जप करते हैं। इसका जप बहुत कल्याणकारी होता है।

विनियोग–

ॐ अस्य शक्तिगणाधिप मंत्रस्य भार्गवऋषिः विराट् छंदः शक्तिगणाधिपोदेवता ह्रीं बीजं ह्रीं शक्तिः ममाभीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति–

विषाणांकुशाक्षसूत्रं च पाशं,
दानं करैर्मोदकं पुष्करेण।
स्वपत्न्या युतं हेमभूषामराढ्यं,
गणेशं समुद्यादिद्नेशाभमीडे॥

जप-मंत्र–

ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं।

***सर्वविघ्नहरण प्रयोग*–**समस्त पीड़ाओं से मुक्ति पाने हेतु दक्षिण दिशा की ओर मुख करके रात्रि में एक थाली काजल से '**क्लीं**' लिखें और उस पर पुष्प अर्पित करके कुमकुम, चावल आदि से पूजन करके मंत्र पाठ करें।

ॐ अदृश्य देवाय विघ्नविनाशाय फट् स्वाहा।

एक हजार जप प्रतिदिन पूर्णिमा तक करें। पूर्णिमा को तेल एवं गुड़ को डालकर हलवा बनायें। वह हलवा और जल का पात्र लेकर चौराहे पर जायें। हलवा चौराहे पर रखकर जल का घेरा बनायें और बिना पीछे देखे लौट आयें। मंत्र जाप मूंगे की माला से करें।

नौकरी के लिए चमत्कारी प्रयोग—आज के युग में नौकरी प्राप्त करना एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने के बराबर है; किन्तु यह भी सत्य है कि आशा ही जीवन है, आशा की ज्योति को अपने मन में सदैव जलाये रखिये। जो लोग नौकरी से निराश हो चुके हैं अर्थात् नौकरी पाने के लिए दर-दर भटक रहे हैं, भविष्य अन्धकारमय दिखायी दे रहा है—वे अवश्य ही इस सिद्ध साधना का प्रयोग करें। सफलता अवश्य मिलेगी।

नवरात्रि में यह प्रयोग पूर्णतया फलदायक होता है। प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त होकर कुशासन अथवा कम्बल का आसन लगायें। सामने बाजोट पर गायत्री यंत्र स्थापित करके सात गोमती चक्र हल्दी के रंग से स्थापित करें, फिर धूप, दीप आदि से पूजन कर नित्य प्रति 5 माला निम्नलिखित मंत्र का पाठ करें—

ॐ वरदाय सर्वकार्यसिद्धि करि-करि ॐ नमः।

विजयदशमी के दिन समस्त सामग्री लाल वस्त्र में लपेटकर नदी, कुएं अथवा तालाब में विसर्जित कर दें और पीछे देखें बिना घर लौट आयें।

भौतिक सुखदायक मंत्र—दुर्गा यंत्र स्थापित करके हकीक की माला से 21 माला जप कृष्णपक्ष की अष्टमी तक करें। हलुआ का भोग प्रतिदिन लगायें।

विदेहि देवि कल्याणं विदेहि परमा श्रियम्।
रूपं देहि जयं देहि यशो देहि द्विषो जहि॥

वास्तुदोष निवारण—नवरात्रि के दिन मिट्टी के घड़े पर स्वस्तिक बनाकर घर में ईशान कोण पर स्थापित करें, तत्पश्चात् घड़े में एक कौड़ी, इलायची डालें। ये वस्तुएं डालने से पूर्व घड़े को पानी से अवश्य भर लें, उसके बाद ग्यारह कौड़ियाँ, ग्यारह इलायची और ग्यारह गोमती चक्र घड़े में डालकर ढक्कन बन्द करके दक्षिणमुखी गणेश स्थापित करें। अगले दिन घड़े का पानी खाली कर गोमती चक्र धोकर रख लें और जल को किसी पौधे में डाल दें फिर वही पूर्व क्रिया दोहरायें। दक्षिणमुखी गणेश का अर्थ है, जिसकी सूंड दायीं ओर हो। विजयदमशी के दिन घड़े का जल भवन में छिड़कें।

महामारी-नाशक—विभिन्न महामारी-नाशक मंत्र का जप करने से पूर्व रुद्राक्ष की माला को प्रथम नवरात्र में नीम के तेल में पीतल या तांबे के बर्तन में स्थापित करें। नवमी को महामृत्युंजय यंत्र स्थापित करके एक मास तक उस माला से 21 माला जप करें और क्षेत्र के चौराहे पर अथवा ग्राम के देवता क्षेत्रपाल को माला अर्पण करें—

जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गाक्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तुते॥

निजी भवन हेतु—भोजपत्र पर अपनी इच्छा लिखकर मंत्र पाठ करें। लिखने के लिए केशर का उपयोग करें—

ॐ देपोत्थाय नमः॥

नौ दिन तक पूजा-पाठ करें, दशमी के दिन भोजपत्र एवम् समस्त पूजन सामग्री किसी वृक्ष की जड़ के निकट मिट्टी में दबा दें।

—समाप्त—

हमारे द्वारा प्रकाशित 'साहित्यिक सीरीज' की पुस्तकें

❑ मेरा संघर्ष (हिटलर की आत्मकथा)		100.00
❑ अडोल्फ हिटलर	–एडोल्फ हिटलर	60.00
❑ गीतांजलि	–रविन्द्रनाथ टैगोर	60.00
❑ बंकिमचन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
❑ गोर्की की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
❑ ओ० हेनरी की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ		60.00
❑ जयशंकर प्रसाद की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ		60.00
❑ शरलॉक होम्स के सर्वश्रेष्ठ जासूसी कारनामें		60.00
❑ लियो टालस्टाय की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
❑ शेक्सपीयर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
❑ मण्टो की अमर कहानियाँ		60.00
❑ रविन्द्रनाथ टैगोर की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
❑ शरत्चन्द्र की सर्वश्रेष्ठ कहानियां		60.00
❑ रोम की नगरवधू	(अलबटो मोराविया)	60.00
❑ नेपोलियन बोनापार्ट	(एमिल लुडविग)	60.00
❑ माँ	(मैक्सिम गोर्की)	80.00
❑ श्रीकांत (सम्पूर्ण उपन्यास)	(शरत्चन्द्र)	80.00
❑ देवदास	(शरत्चन्द्र)	80.00

नवदुर्गा पूजा

A H W MARUTI SERIES



मारुति प्रकाशन

अग्रवाल कॉलोनी, रामलीला ग्राउन्ड के सामने, दिल्ली रोड, मेरठ-2

फोन :- 3255234, 2518025

maruti_prakashan@yahoo.com



मूल्य-50/-